



I ISSN 2229-547X VI DEHA

विदेह १३९ म अंक ०१ अक्टूबर २०१३ (वर्ष ७ मास १० अंक १३९)




ई अंकमे अछि:-

बैङ्की रेली

(उपन्यास)

जगदीश प्रसाद मन्त्र

भाषापाक बचना-लेखन - [मानक मैथिली]

 विदेह मैथिली पोथी डाउनलोड साइट

 VIDEHA MAITHILI BOOKS FREE DOWNLOAD SITE

विदेह ई-पत्रिकाक सब्झा प्रबान अंक ( ब्रैल, तिरहुता आ देवनागरी मे ) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेल नीचाँक लिंकपब उपलब्ध अछि । All the old issues of Videha e journal ( in Braille, Tirhuta and Devanagari versions ) are available for pdf download at the following link.

विदेह ई-पत्रिकाक सब्झा प्रबान अंक ब्रैल, तिरहुता आ देवनागरी रूपमे Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

विदेह ई-पत्रिकाक पहिल ३० अंक

विदेह ई-पत्रिकाक ३०म सँ आगाँक अंक



रिदेह खा.ब.एस.ए.सी.बी.डी.एनीमेटेडके अपन सांठ/ रींगपब लगाडु ।



रींग "लेखाडु" पब "एड गाडजे" मे "बीड" सेलेक्ट कए "बीड यू.आर.एल." मे <http://www.videha.co.in/index.xml> ठांगप केनासँ सेहो रिदेह बीड प्राप्त कए सकैत छी । गुगल रीडरमे पढ़ाई लेन <http://reader.google.com> पब जा कऽ Add a Subscription रीटन किक कक आ खाली स्थानमे <http://www.videha.co.in/index.xml> पेस्ट कक आ Add रीटन दराड ।



[Join official Videha facebook group.](#)



[Join Videha google groups](#)



रिदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पौडकास्ट सांठ

<http://videha123radio.wordpress.com/>

मैथिली देरनागरी रा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि पारि बहर छी, (cannot see/write Maithili in Devanagari / Mithilaakshara follow links below or contact at [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com)) तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पब जाड । सगहि रिदेहक सुँभ मैथिली भाषापाक/ बचना लेखनक नर-प्रवान अंक पढ़ू ।

<http://devanaagarii.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रींगमे ऑनलाइन देरनागरी ठांगप कक, रींगसँ कॉपी कक आ रीडर डीक्यूमेंटमे पेस्ट कए रीडर फागलकेँ सेर कक । विशेष जानकारीक लेन [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब सम्पर्क



कक । )(Use Firefox 4.0 (from [WWW.MOZILLA.COM](http://WWW.MOZILLA.COM) )/ Opera/ Safari / Internet Explorer 8.0/ Flock 2.0/ Google Chrome for best view of 'Videha' Maithili e-journal at <http://www.videha.co.in/>.)

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Book/ paintings/ photo files. रिदेहक प्रवान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक हागत सभ (उच्चारण, रैड स्वर साव आ दूरस्थित मंत्र सहित) डाउनलोड करवाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाऊ ।

### VI DEHA ARCHI VE रिदेह आर्काइव



जातिबन्धिव पूर्ण महकुरि रिद्यापति । भावत आ नेपालक माष्टिमे पसवत मिथिलाक धवती प्राचीन कालसँ महान प्रकष ओ महिला लोकनिक कर्मभूमि बहन अछि । मिथिलाक महान प्रकष ओ महिला लोकनिक चित्र मिथिला बने मे देखू ।



गौरी-शैबक पातरणि कालक मूर्ति, एहिमे मिथिलासकबमे (१२०० वर्ष पूर्वक) अभिनेथ अंकित अछि । मिथिलाक भावत आ नेपालक माष्टिमे पसवत एहि तबक अन्तर्गत प्राचीन आ नर स्थापन, चित्र, अभिनेथ आ मूर्तिकलाक हेतु देखू मिथिलाक खोज

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, अन्वेषण संगति रिदेहक सर्च-अंजन आ न्यूज सर्बिस आ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित रेसर्सागट सभक समग्र संकलनक लेल देखू रिदेह सूचना सर्पक अन्वेषण



बिदेह जानबुतक डिस्कसन फोबमपब जाड ।

“मैथिन आब मिथिना” (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जानबुत) पब जाड ।

रँडकी रँहिन

(उपन्यास)

## जगदीश प्रसाद मन्डन

१

चाबि भाए-रँहिनक रीठ सुनोचना पतिन बहने रँडकी रँहिनक नाउसँ गाम भबिमे जानन जाग छथि । दु-अठ १७ रीघा जमीनरँना परिवार ।

हुियामी रँथक अरुमथामे जिनगीक ठनानक आथिबी सीठ मै पँचन सुनोचना भातीजक मंग रँनामपब-मध्य प्रदेस-सँ अपने गाड़ सँ गाम पँचनी । गाम पँचिने तेनतेन भ२ गेन, सुनोचना रँहिन एनी । उना पछिना पीठ कि अरुकरषा करैत अगिनो पीठ १ दीदीक जगह रँहिले कठे छन्हि । एकर-दुखै छैनक बियो-पुतो आ जनि-जातिउ पँचन नगनी । डेटा यापब गाड़ १ बोकि बघुनाथ -डोष्ट भागक जेठ रँथ- उतबि एका-एकी मभकेँ उतारन नगन । दु रँथक पोताकेँ सुनोचना कोवामे लेने गाड़ सँ उतबनी ।

बिष-प्रष शीब, चानीक रँनना दुनु हाथमे, महीन-सादा साड़ १ पहिबने । थून-थून देह । उतबिते चाकदिस आँख उठा तकनी तँ रूमि पड़न जे जेरौ कानसँ रिपवीत मभ किछु रूमि पड़ै । जिनगीक आशी तोड़ि घर-दुआब आ गामोकेँ गोड़ नागि कहने बहियनि जे अंतिम दर्शन केने जाग छी । कहाँ आशी छन जे गामक झूठ हब देखर । तेरीठ जेठ भोजागपब नजबि पड़न । नजबिसँ नजबि मिनिते दुनुकेँ रँघजब नागि गेन । झूठक रँन रँन बहननि तेरीठ सुनफूट छेहवा, रँगा हाथे रँममतिआ दीदी सेहो पँचनी । जहिना सुनोचना गामक रँथी तहिना रँममतिआ दीदी सेहो । एक उमेरि दुनु गोष्टे, झूदा सुनोचना रँहिन तीन मास जेठ छथि । रँममतिआ दीदीकेँ देखिते सुनोचना प्रह्वनथिन-

“साजे भबिमे एते नष्टकि गेलै ? ”



दुनुक जिनगी रूँचेसँ एकठाम रितले रँजेमे कोनो कमी बहरें ले करए । निधोक भऽ रँसमतिआ दीदी रँजनी-

“तू ले भाए-भातिजक कमेलता खा कऽ गेड । रँनि गेलै, तमबा के देत ? ”

निखाबले जकाँ सुनोचना रँजनी-

“किए, भगवान तोबा थोड रँपाठ छुन जे ले देनिताव छै ? ”

रँसमतिआ-

“हँ मे तँ अछि, ददा जएत कमएत तेहीमे ले देत । अछ्छा, कह जे दूँठनाला नग कज्जनी ले तँ बहलौ । नीक जकाँ लाड जूँठि गेलौ किले ? ”

“हँ । आरँ तँ रँनष्टीनो उठलै छी, पोतोकेँ कोबा-काँथमे नऽ कऽ खेनलै छि । अपले गाड १० छी, आरँ गामेमे बहरँ । ”

“एँ उमेवमे अमगरे बहि तेतो ? ”

“छोठ भाए- ददेलसरो बहत किले ? काहि हुनो उत । तारें कहुना अही दूँठनाला घबमे बहि पजेरौक घब रँनात । तम मभ केते जीरें कवरँ । ददा जारें आँथि तके छी, तारें तकक उबियान तँ करए पड़त किले ? ”

दौदह रँथक अरुमथामे सुनोचनाक रिखाह भेलनि । जहिना पितक माधवषा किमान परिवार तेतने परिवारमे रिखाहो भेलनि । समाजमे अथनि धवि धन ले हने-मुनक महत अधिक बहन ददा जेलो-देन तँ चलिने छन । नीक-मुनक कन्याक माँगो रँसमी । उना अपन-पितक हने-मुनसँ दरँ परिवारमे रिखाह भेलनि, ददा कोनो तिनके ठाँ ले, समाजमे केतेको गोष्टेकेँ भेल छुनि आ होगतो अछि । तँए कोनो प्रश्न ले उठन ।

मिथिनाचनक उग गाममे सुनोचनाक जनम भेल छेलनि जग गाम होगत एकठा धारो अछि आ पुरँसँ कोसीक पानि आ पछिमसँ कमनाक पानि सेहो रँवसातक मौसममे रँठा रँनि अरिते अछि । उना कोसी-कमनाक रँनह ले बहने अरिते-अरिते रँठा पतवा जागत ददा रँवखो-रँनीक तँ कोनो निश्चित ठेकान नहियेँ छै । जग मान रँवखा रँसमी भेल तग मान रँठा उ नमह-नमह अएन आ जग मान कम रँवखा भेल रँठा उ छोठ अरिते । खेती जेल रँवखा छोड़ि दोसब कोनो माधन ले छन । नकड़ १ क करँसँ किछु खेती होग छन ददा उ तँ पोथरिसँ होग छन जे रँशोथ-जेठमे अपले सुथि जागत । जे पोथरि गहीब बहत उग पोथरि पानि उगव अनेमे तीन-चाबि गाड़ करीब नगि जागत । गहूमक खेती नहियेँक रँवरँवि होग छन, कियो-कियो दु-चाबि कड़ा कऽ नग छन । सेहो रँन पठेनता ।

छह गोष्टेक परिवार चनरँमे सुनोचनाक पिता-हबिहकेँ कठिनाग तँ बहरें कबनि ददा गाममे मात्र हबिहरे एहेन ले रँहूतो एहेन छन जे हुनकोसँ भावी जिनगी जीरें छन । एक तँ महिना शिक्षाक चलनि ले दोसब, गाममे माधनोक अन्तर । उना रँतवसँ कम मम्पर्क बहने गाममे शिक्षाक ओते जकबतो नहियेँ छन । रँरहाविक ज्ञानक जकबति छन जे मभमे छेलै, अथलो छै । सकुनक दूँह सुनोचना ले देखनी ।

रिखाहक तीन मान पछाति सुनोचनाक दुवागमन भेल, मासुव गेली । रँवख-पाँचे-छुरेंक पछाति मासुवसँ सुनोचनाकेँ भगा देनकनि । भगरँक कावष बह जे मन्तान ले भेलनि । उना



ले कहियो डाकूँबी जाँट कवाँन गेननि आ ले मन्तान ले हेरौक दोष किनकामे छुनहि, मे  
हडि छान गेन ।

समाजमे एहेन धडल्लसँ होगत जे कोनो महिनाकेँ हकप कहि मासुबसँ ठौठिया कऽ  
भगाने जागत तँ कोनोकेँ मौतीन तब रमा भगाने जागत । गत्यादि-गत्यादि । ब्रैदिक  
पह्यति एक-पुरुष एक नाबीक मयूरनरकेँ पतिन श्रेणीक रिचाव समाज मानले अछि, तेठामँ बग-  
बगक रौपा रौपा नाबीकेँ अग्रवागसँ बोकन गेन । बग-बगक मग्न-अपमग्न कहि तँ उठबी-  
ठठबी रौपा दरौन गेन । एहेन स्थिति केँ जँ रोगक जडि रौपा तकले आ उगठामसँ  
ब्रैदिक रौठ रौनोले रौपा आग एकैसम शिताईदीमे पहुँचन छी । आ रिनहन मत् छै जे  
कियो शैव होग आकि मियाव मभकेँ अपन कानथण्डक जेथा-जेथा होग छै । तँ ए उ  
अगिला-पडिना दोखक भागी भेला, आ रूमर नमति भेल । हँ, जँ कियो अपना हाथे किछ  
केननि तेकब जरौरदेह तँ भेरेँ कएन ।

सुनोचनाक पिता हबिह समाजक ओह रैकती जे आँखि मोसलमे कियो गाछक आम  
तोड़ि जेत रा थेतक धान लोचि जेत तँ एतरेँ छेतारनी दैत रैजे छना जे जाग छि छुयो  
रौपकेँ कह जे आ छोड़ि धान लोचनक आकि आम तोड़नक । रूमियहनि जे जखनि तोबा  
कनेछी पड़तो । समाजमे सहयोगक रिचाव छन । अपन गार्जन अपन रैछाकेँ मिथरै छन ।  
ह्दा एकछी जरबदम ग्ण परिवारमे छेननि जे महिनाक चाबि-पाँट बरि, चाबि-पाँट मोमक  
मोमराबी मग केतेको पारनिक उपामसँ माओ छोष्टे कऽ लेले छना । सबसरतीक आगमन  
परिवारमे भऽ गेन छेननि । मिबिह अपन हबिहरेछी ले पड़ले । काबणो छन मगव  
परिवारमे एक समाग गिवहमतीउ करै छना । तँ ए शुकसेँ पठि ग दिम ले नगाने गेननि ।  
कान-हमे ओहन-ओहन भैयाबी पछुआएन । आ दीगव भेल । ओना किछ समाज एहना छन जे  
एहेन-एहेन अरमथा (सुनोचनाक मग जेहेन भेल तेहेन) केँ रौतूरनसँ बोकनक ह्दा समाजक  
कठिनियाँ तँ रैछाक मुम कष्टते छै । जाति-जातिकेँ रौष्टि मभ रोगसँ रोगएन छी । कियो  
कम कियो रैमी । ह्दा एहेन-एहेन अपवाद समाजक ह्दा ले रनि रनि, जातिय ह्दा रनि  
कमजोव पड़ित गेन । कान-हमे जातिउसँ परिवारमे पहुँच गेन । एक जातिकेँ नीट  
देखाएँ रा जातिकेँ भीतरा अग्रवागनक निछाँ मलोबजनक साधन रनि गेन अछि ।

सबसरतीक आगमनसँ हबिहक परिवारक रिचावमे किछ नरीनता तँ आरिँ गेन अछि ।  
मासुबसँ भगाने सुनोचनाकेँ परिवार सहर्ष अपना लेननि । अपनरैक कावण भेल जे परिवारक  
मभ अपन गन्ती मनि लेननि जे ओहन हन-मुनमे डेगे ले उठरैक छाही । ओहनसँ हनेँ  
नगाएँ नीक ले छेत । रौपक दूनकथा रैछी दोसब रिखाह कऽ लेननि । ह्दा सुनोचना  
अपनाकेँ रैबरय ले रूमननि । हाथक छुड़ि बखनि बहनी । मग आगु रैछन । नक्ष्मी जहिना  
दवरैज्जापव हँसी-खुशीसँ आरिँ जाग छुनि तखनि केतरो ताड़ि-दाकक खर्चा हवाले बँध  
तहिना ले सबसरतीउ बगड़ि-मगड़ि छुनि । सुनोचना जकाँ ले ले छुनि जे मने-मन  
मकनपक मग जौरैक रौष्टि पकड़ित, ओ तँ तेहेन बगड़ि छुनि जे एकछी मौतीनक कोन  
गप जे हजारे मौतीनकेँ मोठिया अपन हिस्सा नाग कऽ छोड़ित । पुरुषक कहले भऽ  
जेते जे जेठकीक जेठूआ जोषि कमा देते ।

सबसरतीक कप परिवारमे रैदनन । मस्रत पह्यतिक जगह नर-नर पह्यति शुक भेल ।  
मस्रतोक पह्यति बहरेँ कएन । ह्दा शिक्षाकेँ रूमियादी पह्यतिसँ उछानि देनक । सुनोचनाक  
पीठ पवहक जेठ भाय जुगैसब मैट्रिक पास तहबिया स्कूलसँ केननि । गवरी-रैकाबीसँ त्रमूत  
परिवार । लोकबीक तनाममे कनकछा गेला । दु मान बहना । भाषाक दुबी, शैव-गामक दुबी





तँ सपष्टे बहे । दु मान पछाति जुगमेव ठीचर्म छैनिग केननि । लोखव प्रागमवीक शिक्षक रैनना ।

जुगमेवमँ छेठे द्दमेव मेहो मैथिक पाम तद्दबिया म्कूनमँ केननि । मागम पठेत । जनता कौलेजमे मागमक पठ १७ ले होगत । गव नगरैत खगडा याक गव नगौननि । ओग ठामक ममूहत रिद्यानयमे रिद्यार्थीकेँ भोजन-डेवाक रैरमथा मेहो करैए । कोमी कौलेज मेहो दुगहे । मागमक रिद्यार्थी, नीक जकाँ रीएम-मी केननि तेरीच रिखाहो अहमबक परिवारमे भ२ गेननि । चाबि भाँगक भैयाबी हबिहबक छेननि, तगमे रँठरावा भ२ गेननि । दुनु पवानी हबिहरो मबि गेनथिन जगमँ दुनु भाँगक परिवार... ।

मान भबि पछाति द्दमेवक दुवागमन भेन । दुवागमन भेना पछाति माधना मासुव एनी । मासुवक बहन-महन, घब-दुखव देखि मनमे जरैवदम धक्का नगननि । जे मराभारिको छेले । केतए अहमबक परिवार आ केतए एकठा छेठे-छीन गामक किमान परिवार । द्ददा एहेन थानी माधनेकेँ भेननि मे ले, धनेरोकेँ भेनो छुनहि आ होगतो अछि । ओना माधनाक अपनो (लेहव) परिवार गामेक छेननि । द्ददा लोकबी भेने परिवारकेँ मगे बाँटीमे बथे छुना । बाँटीमे जमीन कनि मकानो रँना लेने छुथि । अहमब-एमडीओ बहने दोमो-मथि आ मरो-ममरन्की अगुआएन तँ छुनहिहँ । ओना परिवारमे तीन भाए-रहिनक रीच माधना मभमँ जेठ (पहिन मँतान) बहने दोमव-तेमव लेन अतिभारकेँ मदूने बथिन । द्ददा रैठी तँ रैठी होगत, रिखाह-दुवागमनमँ पहिले धबि माए-रापक घबकेँ अपन घब रूनेत । अपना गाममँ श्यामानन्द (माधनाक पिता) ममरन्ध तोडा ए जकाँ लेननि । कहले तँ घब-घवाड १ छुनहिहँ द्ददा बहेक घब ले । माधवण घब छेननि जे किछु दिन पछाति गिब पडननि, दोहवा क२ रँनरैक खगता नहिथेँ रूमननि ।

दुवागमनमँ पुर धबि द्दमेवक परिवारक भावक रीच ले पडन छुना, द्ददा पछाति पनी एने किछु जरैवदेही तँ भगए गेननि । अपना ओते खेत-पथाव ले जे गिबहमतीमँ जीरिरोपार्जन क२ मके छुना, तेमग मयाजमे पठन-लिखन मग ठमक जरैवदम मयमया तँ जनम नगए लेने छुन जे जँ पठन-लिखनकेँ लोकबी ले भेननि तँ मयाजमे पीहकावीक पात्र रँनिथेँ जाग छुथि । गाम-घबमे प्रचलित अछि 'पठए हलवमी रौछए तेन देखु भाग कवमक खेन' रिय खेतरँना जँ गिबहमत रँनि गिबहमती अपनाए लेत मेहो रात नहिथेँ छै । जीरिरोपार्जन लेन केहेन गिबहमती चाही ओ तँ मरैक लेन मँभर ले । खेतक खवीद-रिफी होग छै; मयपति छिँ । ओना जेठ भाय जुगमेव लोकबी करै छेनथिन । लोखव प्रागमवीक शिक्षक छुना, द्ददा अखुनका जकाँ ले सबकाबी छुन आ ले तेहेन लेतन । दुनु भाँग मिना परिवार नमहव छेननहिहँ । जहिना मभ पठन-लिखन लेरोजगावकेँ होग छै तहिना द्दमेवकेँ मेहो होग छेननि जे एतए लोकबीक आरेदन कक, ओतए लोकबीक गनठवभ्यु दिओकक मथिति तँ बहरेँ कवनि । ओना मयाजमे (ग्रामीण गनाका) गन-गुन पठन-लिखनक मथया द्ददा जेतरो छुन ओकरो लोकबीक अ शिा तँ नहिथेँ छेले । आ ले अखुनका जकाँ सबकाबी कार्यानिय छेले । ओना अखनो कम अछि । नमहव-नमहव पचायत छुन, चानीम-चानीम, पचाम-पचाम पचायतक रीच रँनौक थाना छेले । तेमग सबकाबी कामो-काज कम छुन जगमँ सबकाबी काजमे प्रवेश कवर कठिन तँ छेलेहे । रँनौकमे अहमबक नाउपव एकठा रीडीओ बहे छुना । काजो कम, अन्नक अन्नर बहने खेवातक रँठरावा आ कोठीक माधयममँ अमेबिकन गहूमक रिफी । चीनीक कोठी ले रँनन छुन । एक तँ चीनीक उपोदन नीक, दोमव खेनिहाव कम । तहिना म्कूनो-कौलेजक मथया मएह, 'गनन हठिया नापन मोव' मदूने छुन । जे शिक्षक काज करै छुना ओ मेरो-



निवृत्त हेता तेकब पछाति नर चेहवाक प्रवेशि हेतनि । लोक रैकक नाउँ ठाँ सुने छन जे  
उगमे कपेखाक जेन-देन होग छै ।

दुवागमनक किछुए-दिन पछाति माधना जेहब गेली । अथनि धरि पिता-श्यामानन्द रैठी-  
जमाएक घब-दुआर ले देखले । रीम-सी नडका, शिबीरमँ म्रमथ सुनि रैठीक रिखात केननि ।  
तग समए रैठीओ (माधना) मैथ्रीक पास केनहि बहनि । रिखातो समेसँ भेन छेननि । जेहब  
आपमीक पछाति माधना जखनि मासुबक मभ तान माए-पिताकेँ कहनि तखनि पिताक मनमे  
जमाएक लोकबीक प्रश्न उठनि । म्नेमबकेँ बाँटी रँजा केननि । जमाएक लोकबीक चर्च  
मँगो-माथी आ मरो-मयूरनीक रीच गप-मपक क्रममे कबए नगना । बाँटी रिश्चिदानयक  
केमेमृष्टीक हेडक सोमहा मेहो चर्च केननि । दुनुक रीच घनिष्ठ दोमती । डेरो अगले-  
रँगनमे बहनि । तुनकब (हेडक) मसुब हाग म्कून पनामुमे रँजोले छथि । उना जँगन-माडक  
पनाका पनामु, म्दा डोठ-मोठ कमराँ जकाँ तँ डेलैहे । तुनका रँसन छेननि जे म्कूनमे जे  
मागम-ठीचब छना, ओ डोडि क२ दोमब लोकबी कबए चनि गेना जगमँ मागमँ ठीचबक अतार  
छै । ओ फोन क२ मसुबकेँ पछुनथिन । रिश्चानयमे शिक्षकक अतार बहरै करि, म्नेमबकेँ  
लोकबी भ२ गेननि । दिनक १-१०-११७१ अ । केँ निश्चि भेननि । रिश्चानयो सबकाबी  
नहियेँ भेन छन, म्दा कोठाबी कमिशनक मँजुबी तँ भ२ गेन डेलै । एक मए पाँच कपेखा  
महिनाक लोकबी म्नेमबकेँ भ२ गेननि । लोकबीक समए पनी कौलेजमे पठत बहथिन, उँए  
पिते एँठाम बहिति छेनथिन । अपने अमगरे पनामुमे बँठ छना आ छुट्टीमे बाँटी अरै-जाग  
छना । उना मागमँ शिक्षककेँ सभठाम ठुंशिन चनिते अछि जे मोक्या म्नेमबकेँ भेठेननि । एक  
तँ ग्रामीण जिनगीक जीवन म्त्व, तगपब अरिक्मिमत पनाकाक लोकबी, रँचत नीक होग  
छेननि । किछुए दिन पछाति बाँटीमे जमाँन कनि अपन घब मेहो रँना केननि । मकानमँ किछु  
किवायो आरए नगननि । अपन पेतक गाम म्नेमब डोडि ए जकाँ देननि । कहियो कान  
रँहिन-सुनोचनाकेँ कपड । आ कपेओ पठा दग छेनथिन म्दा आरौ-जारी नहियेँ जकाँ  
छेननि ।

हाग म्कूनक शिक्षक जेन ट्रेनिंग कवरै जकबी छन । ट्रेड-आ-अनट्रेड शिक्षकक रीच  
बेतलोक अंतब डेलै आ रँना ट्रेड शिक्षककेँ म्थायी हेरामे मेहो रँधा डेलै । म्नेमबक  
निश्चितीक दु मान पछाति मावराडि कौलेज दबठगाँमे ट्रेनिंगक पठ १ग शुक भेन । दमे  
मामक कोर्म । डोलेसनपब एडमिशन होगत । जे पठ १गक समए (मेशिन शुक भेना रँदो  
छह मास धरि एडमिशन होगते बहन । ) टाबि मास पछाति म्नेमबो एडमिशन केननि । छुरै  
माममे ट्रेड भ२ पुनः पनामु जरागन क२ केननि ।

उना उग समए मावखंड नगा रिहाब छन । बाज्योक म्थिति दु भागमे रिभाजित ।  
उतब-रिहाब आ दडिन रिहाबक म्पष्ट अंतब अछि । दडिन-रिहाब (मावखंड) मे खेती-  
पथाबी कम होग छै । खेती जोकब माँठिओ कम छै । कम क्सेत्र उपजाडु अछि । पहाडि-  
जँगनक पनाका । उना खनिज म्पदा प्रचुर मात्रामे अछि । कोयनामँ न२ क२ अरबख धरि  
थान अछि । जखनि कि उतब रिहाब रँगा-ब्रूखत्रक तनठ्ठी मैदान छी । पहाड-जँगन नहियेँ  
जकाँ छै । उना गाडि-रिबडि पर्याप्त अछि म्दा पहाडि नकडि नै ।

खनिज म्पदा बहने दडिन रिहाबमे देशी रिदेशी पूजीपति आ सबकाबीओ कारोराब  
पर्याप्त मात्रामे छै । रँग-रँगक खनिज-म्पदा, उँए रिम्रत कपमे कारोराब चले ।  
देशी-रिदेशी पूजीपति आ मारजनि (सबकाबी) कारोराब बहने रोजगारो रँतुतायत अछि ।  
म्दा जँगनी-पहाडि पनाका बहने म्थानीय मुनरामीक रीच शिक्षाक प्रचाब-प्रभाव कम भेन  
अछि । माधव-मँ-मशिन श्रिमिकक मृजन नहियेँ जकाँ अछि । माधव मजदूरक कपमे बहन





अष्टि । ह्मदा उतुव रिताव पठ-निथेमे अग्रथाएन । जगमँ ह्मनै त्रिमिकोक मंथा रैमी ।  
तँ उतुव-रितावक पठन-निथन लोक दछिन रिताव जा लोकबी कव नगना आ घरो-दुआव  
रैना रैमि गेन छथि । अगिलो पीठ १ जेन जीरिक्कोपार्जनक उपाए रैनिये गेन छन्हि ।

उतुव रितावक अर्थात् मिथिनाचनक अहो दुर्भाग्य बहन जे सुषि प्रधान केन्द्र होगतो  
पठाड़ १ नदी तेतेक अष्टि जे केन्द्रके नष्ट क२ देले अष्टि । उना तीन कपमे धाव प्रराहित  
होगए । किछ धाव एहेन अष्टि जे मात्र रैवमातक मौसममे प्रराहित होगए आ पछाति मुथि  
जागए । प्रराहित होगत किछ धाव एहेन अष्टि जे अमथिबमँ रैछि, काठ-छाँठ नहिये जकाँ  
करै । तजारो रैमँ एके स्थानपर रैछि । किछ धाव एहेनो अष्टि जे काठे-छाँठ रैमी करै  
आ उपजाड़ माँठके रौबमँ भवि नष्ट करै । जगमँ गाम-गामक थैतीउ नष्ट होग छै आ  
घरो-दुआव नष्ट होग छै । जीरन-यापनक मुन आरम्यकता उत्पादित पूजा नष्ट भेले  
पड़ गेल तँ नगले छन आ नगले बहत ।

उना मिथिनाचनक माँठ-पानि-तराके अक्कन बहने उरब शक्ति तँ छगहे । जगमँ  
केतरौ लोक गाममँ पड़ १ देशे-रिदेशिक कोण-कोणमे रैमना ह्मदा अथलो गाम-घबक आरादी  
मघन तँ अष्टि ।

गाममँ तीन कोम तँ जूगेमरो लोकबी करै छना आ डेवा रौहरे बथने छना । कावणो  
छन जे ले अथुनका जकाँ गाड़ १-मरावी छेलै आ ले रौनह-मड़कक दशा नीक बँह । शैव-  
रैजाव छोड़ा ले पीठ (पक्की मड़क) गाम दिस रैछन छन आ ले रिजनी । ह्मदा तेयो १९४१  
जमरीक अंग्रेज भगा अपन मरतत देशे रैनेरौक रिटाव तँ जन-जनक मनमे छेनन्हिहै ।  
गनामीक शोषणमँ देशेक स्थिति रिगड़ा गेन अष्टि, जगमँ देशेक रिकाम अरकछ भ२ गेन  
अष्टि । मरतत भेना पछाति रिकामक बामता देशे जकब पकड़नक । ह्मदा तेते अमथिबमँ  
जे आजादीक माँठ-पैमँठ रैवथ पछातिउ, जनकेक हवमँ थैतीउ होगए आ कबीले-तैमिमँ  
पछौनी । सुषि-प्रधान देशे (जग देशेमे अममी प्रतिशितमँ पुप आरादी सुषि आधरित अष्टि)  
बहिलो पाछु पड़ा गेन । किछ पूजापति मत्ता तथिया शैव-रैजावक रिकाम धरि देशेक  
अर्थ-रैरमथाके ममेष्टि जेनक । तैमग अहो ले नकाबन जा मके जे जे मिथिनाचनरामी  
आन-आन देशेक उन्नतिमे अपन शक्ति रौटि मेरा करै छथि उ मिथिनाचनमँ, अपन मातृभूमि  
आँथि मेरो मुनि जेननि । देशेक मत्ता किसानक ममम्यामँ तँ जाति-धर्मक एहेन रातरवण  
रैना देले अष्टि जे रामतरिक रिकामके अरकछ क२ देले अष्टि । मिथिनाचनक पानि-माँठ आ  
मौसममे एहेन अक्कनता अष्टि जे मधु बगक अन्न, हन, तवकाबीक मग मधु बगक टिड़,  
पशु जेन अक्कन अष्टि । ह्मदा मत्त किछ बहिलो कि अष्टि मे मरैक मोमहेमे अष्टि !

उना अठरौरे (शनि-बरि) जूगेमव गाम अरिते छना तैमग पारनिक छुट्टी आ अनदिलोक  
छुट्टीमे मेरो अरिते छना । स्थितिउ एहेन ले छेननि जे मागकिलो कानि सकितथि । उना  
परिवारो तेहेन नमहव नहिये छेननि । तद्धमे अपने अन्ते बँह छना । जैठाम डेवा बथने  
छना उग परिवारक रैछा मत्तके पठरै छना । रैदनामे भोजन आ बँहक रैरमथा छेननि ।  
ले रौगनी ठुमिन छेननि आ ले दवमहा छोड़ा दोमव आमदनी । शनिचवा प्रथा ममाप्त भ२  
गेन छन ।

जूगेमवक मासुव ह्मगेव जिना । गंगा दियावक गाम । तीन भाँगक तैयाबीमे मासुव  
जेठ बथनि । मयोग एहेन छेननि जे छोठ दनु भाँके रैठे छेननि, हिनका (जूगेमवक  
मासुवके) दुष्टा रैठैछै । रैत रैमी जमीनरैना परिवार तँ नहिये छेननि ह्मदा पछीम-तीम  
रौघा तँ छेनन्हिहै । तैयाबीक ममपतिक प्रम तैयाबीमे ठकवाएन । दनु छोठ भाँक कहर  
छेननि मत्त दिन अरैत-जागत बहती । ह्मदा मे जेठ भाय बमानन्दके मान्य ले बहनि ।



बमानन्दक रिचाव डेननि जे हम अपन हिस्सा रैथिअरें देरै। डेयाबीमे जमीन न२ क२ रिचाव ठाठ भेन। डोष्ट दुनु भाँग रिचाव केननि जे किछु होउ, जमीन तँ गामेमे बहत। ओ तँ समवि क२ नै जाएत। तखनि गामक लोक कनि जेत आ कपेया उठा क२ द२ ओखिन। गामे-गाम तँ तीनतमिओ चानिक लोक अपन चानि चलेरिते डै। ह्दा किछु होशियाबी भेन। दुनु भाँग माँमे गामक लोककेँ, थाम क२ तीन तमियारनाक रैमाव केननि। रैमावमे अपन प्रमत्तार देनथिन जे जखनि डेयाकेँ रैथि नै छनि तखनि रूँठ ाड़ पीक मेरो भेननि मे भातीजे मभ कवतनि, जगमँ ह्दो-खनदानक गज्जत रैचन बहत आ मेरो तेननि। किए अनेरे रूँठ ाड़ पीमे एँ गाम-मँ-ओ गाम रैथि। समाजोकेँ जैचन। ह्दा बमानन्द मेरो अपन मनक लोक। परिवारमँ समाज धरि किनको रौत सुनैले तेयारे नै। अकछि क२ समाजक मभ दुनु भाँगकेँ कहि देनकनि जे डेयाबीक समष्टि अछि समाज एँमे नै पड़त। मोका पारि दुनु भाँग पुष्टि देनथिन-

“जँ कियो चोबन्करौ जमीन निखा नथि, तखनि ? ”

जेते गोष्टे रैमन बरथि पच-पवमेधेवक कपमे बरथि, अन्नकून रिचाव देखि अन्नकूनतामे भँमि हरे-हरे एक शिरदमे रौजि उठना-

“जे समाजमँ रौतव छएत, ओ रैथिओद छएत। ”

रैजैकान तँ मभ रौजि गेना ह्दा पछाति अपनपव तामस उठए नगननि जे सम्त टीज हाथमँ निकनि गेन।

जहिना आगिक ताउपव लोहियाक जिलेरी-कचड़ १ पेनीमँ उठि डुपव अनगि जागत तहिना बमानन्दकेँ भेननि। गंगाकातक गाम जकाँ गामक लोक सोमहे-सोमही बमानन्दकेँ दूतकार नगननि। अखनि धरि समाजमे अहाँकेँ लोक कोन नजबि देखेत बहन आ अहाँ कि करैपव उताहन छी। ह्दा तेकव कोनो अमवि बमानन्दकेँ नै भेननि।

१९४० अ। क नगातिमे बमानन्द मैथिलिक पाम केने छना। जग समए हजारो रिद्यार्थी म्कून-कोलेज डोडि आजादीक आन्दोलनमे कुदि अपन सरमर तियाग केननि। ओही समेक उत्पादित मन्थ बमानन्द मेरो छथि, अंग्रेजी धुव-माव रैजै छना। रैन-ताव गत्यादि सबकाबी मेराक केतेको गोष्टे लोकबी डोडि अपन आहूत देननि। मध्यम किमान परिवारक बमानन्द। पितक देख-बेथमे परिवार चलेत, तँ घबक छुछा आदमी। एतए-ओतए घुमनाग आ गनछुडि। डोडनाग जिनगीक काज डेननि। ह्दा जहिना शिबीवमे रोगक आगममँ धीरे-धीरे शिबीवक शिजि ग्रमित ह्थ नगैत तहिना बमानन्दकेँ परिवारमँ समाज धरिमे ह्थ नगननि। जे भातीज रैडका रौरु कठे डेननि ओ ह्दपव गावि पछए नगननि। मन्थोक तँ अजीर मरभार होग डै। घनिष्ठ-मँ-घनिष्ठ मित्र जँ कोनो अना वृत्तिमे हँमि जागए तखनि जे म्थिति पैदा जेत एत बमानन्दकेँ भेननि। समाजक लोक नै कियो दवरज्जापव रैमए कहनि आ नै गप-मप करैले तेयाव। जहिना खूना जहन होगत तहिना बमानन्दकेँ भेननि।

डेयाबीमे रिचाव उठने ह्दकदमारीजी मेरो उठन। समागमँ पातव बहने बमानन्द कमजोव पछए नगना। सोमहेमे भाए मभ खेतक जजाति, गाछ-रौम उजाड़ए-काँए नगननि। दुनु भाँग अरिधावि केननि जे जेते ह्दकदमा कवता कवथु। थानो आमदनी रूमनक, तँ हिसार मिला क२ चलेत। दुनु रैथि-जमाएकेँ रैजा अपन मभ दुखा सुनरैत बमानन्द कहनथिन-



“जहिना, हम अपन मभ सम्पति अहाँ मभकेँ दिअ छै तहिना तँ अछि मभकेँ छाँडी जे ओकरा रीँटा क२ न२ जाग।”

दुनु रैठौ-जमाएक रैन जहिना बमानन्दकेँ भेटैतनि तहिना ओह दुनु भाँगेकेँ समाजक लोक मूकदमामे मग दिअ नगननि।

धीरे-धीरे बमानन्दक मन ठूँटैत नगननि। एक तँ माँठि रैथिक उमेव ठपि गेने तबपव कोठ-कचहरीक दौड़सँ न२ क२ रैठौ-जमाए ओगठामक दौड़-रैवता तेते रैठौ गेननि जे गामसँ रैमी अन्ते गजब नगननि। अमगरे पनी घबमे सकपज भेन बहथि आ अपन रौआगत-रौआगत हिविमान।

किछु दिन पछाति पनी अममक पड़नथिन। जे दियादराद आ जे गामक कियो एको रैव पुछाछा कब आरनि दुनु रैठौ-जमाए नगमे जे, मरुनी जिनक गाममे। जे उचित समेपव डाकूरी देख-भान होनथि आ जे दराग-दाक। किछु दिन पछाति मवि गेनथिन। पनीक मगना पछाति बमानन्दक जिनगी आरो जठिन भ२ गेननि। गाममे जथनि बहथि तथनि भानमो-भानक ओबिआन अपन कब पड़नि। आमदनी मेहो भाए मभ रोकि देनथिन। अन्ना-गाँठि देखि दुनु जमाए ओ तथ-मरुनी सकुत केननि। हठे-हनमे बमानन्द पड़ि गेला। जिनगीक कोनो मोमबान रौठ देखै जे कबथि।

जिनगीक अन्तिम पाँच रैवथ बमानन्दक एहेन रितननि जेकरा लोक नबकक राम कहै छै। तवि-थानि क२ किछु दिन पछाति अपनो (बमानन्द) मवि गेला। जमाए ओ मभ आराजाहीक मग केमो-मूकदमा देखै छोड़ि देनकनि। अंत-अंत एकतवहा केम भ२ गेन।

जुगेमवक गाममे दियादीक दोमव परिवारमे रेमात्रेय तैयारीक रीच रिराद उठन। एक माएकेँ एक रैठौ आ दोमवकेँ छाँडी। चाक तैयारी मनि पाँचम भाएकेँ (रेमात्रेय) उपद्र क२ गामसँ भगा देनकनि। किछु दिन तँ ओ (पाँचम भाए) मव-मरुनीसँ न२ क२ समाजक रीच चक्रव नगोननि, मूदा किछु तथ जे नगननि। अन्तमे थिमिया क२ पितक सम्पतिक (जमीनक) कागत-पतव कनकूँएसँ निकानि कहि देनथिन जे अपन हिम्मा घवाड़ १ तक रैठि जेरै। रीघाक नगभग हिम्मा पड़ैत बहनि। मूहतक मान थागरना मभ समाजमे बहिरे अछि। तीन-छाँडी परिवार खेत निखरैक रिचाव क२ जेननि। मूदा रिराद तँ रीचमे छेजेहे। जेरानक रीच प्रम उठैत जे जमीन-जयदादक रिराद छी, मवि ओ हेरै कबत आ थाना-होदारी मेहो हेरै कबत। जे मविक ठेकान अछि आ जे केते दिन ममठि बहत तेकव ठेकान। तँ दुनुकेँ नजबिमे बथि जेन-देन कवरै। तहिना जमीनरनाक (पाँचम भाए) रीच प्रम उठन जे जँ समतमे निथि देरै, तबसँ नाभ कि हत ? तथनि तँ नीक अछि जे अपन तैयारी मभ थानि। कम-सँ-कम एक परिवारक तँ छथि। मूदा जानि ओ देनिहारक तँ कमी नथियै अछि। उनठौ-मिथ मन्त्रक तेते डाकनि पड़न जे रैठौ कबकबेतक रीथ जकाँ निछाँ मूहेँ समवन।

अन्तमे मरुनी याएन जे अथिया दाममे खेत निखरैजे (खेत निखोनिहार) तैयार भेला। रैठिनहारकेँ (पाँचम भाएकेँ) तेते चाक भाँग गजन केने जे तामम कमरै जे करैत। होगत-होगत अथिया दाममे जमीनक जेन-देन भ२ गेन। ओही जेरानमे एकठा जुगेमरो। मूदा मयोग नीक बहननि जे जुगेमव अपन मूकनक लोकरी दुआरे रौहरे बहथि तही रीचमे गाममे दामेव जेरानक मग मवि भ२ गेन। जेरवदम मवि भेन। दुनु दिस कपाव मूठन, रौठि ठूँटन। मौमे गाम मना-मनी पमवि गेन। अनेको भागमे समाज



बिभाजित भऽ गेल । किछु गोष्ठे खुनि कऽ दुनु गोष्ठेक (दुनु पार्टीकेँ) केसमे गराही दगले तैयाव भऽ गेल । किछु गोष्ठे मारिओमे मंग देनकनि । किछु गोष्ठे रैकतिगत पूजा देखि अपनारकेँ दुनुमँ अनग बखनि । ह्मदा समाजके नती तँ एहेन सकलैबने अछि जे नहियो रिचाव भेले पबिसिथितरि मजरूबीमे 'हँ कछ पड़' छै । सेहो भेल । तेतरेँ ले नतीक मोव एहेन अछि जे गामेमे लोक मासुव-मासुक सेहो ठाढ़ कऽ नग ।

ओही संसर्गमे जुगेसब आठ कपड़ा जमीन कीलेक रिचाव केननि । ओना दुनु पबानीक रिचाव जे ह्मनेसबकेँ ए जमीनमे मंग ले कवर । ह्मदा पबिरावक तँ बिबिरत् रैठरावा भेल ले अछि तखनि जेठ भाय छिप, छोट भायक हिम्मा तँ भग जायत । तँ कति देर जकरा अछि । जँ अदहा खर्च देत तँ ठीके छै ले तँ अपन दोख तँ मेठा जेर । रिचावक पाछु पेठेमे बहनि जे ह्मनेसबक आमदनी तेतरेँ छै जे कतना कऽ पबिराव चले छै । तखनि कपैया केतए मँ आनत ? तेरीच मनमे गहो जे गप-चप दाय भेल अछि किने, रैठ । देरै । कतना (अधिया दाय भेले) चाबि कपड़ा तेहैमना (तीन हसिना) खेतक लेनु कम ले भेल ।

पोमर्स्ट कार्डक माध्यमसँ जुगेसब ह्मनेसबकेँ जनतरँ देनथिन । सकुनक दवमाता तँ जुगेसबकेँ रूमन, ह्मदा धुनिक आमदनी तँ ले रूमन । तेसंग पनीओ (ह्मनेसबक) रिचाव देनथिन जे लेहबमे देन रैबतन-रौमन जे अछि ओ अनेरे घबमे ठनमनागत बहै, ओकरा रौचि कऽ जमीन कीनि निख । अथनि धबि दुनु भाँग -जुगेसब-ह्मनेसबक- रौचि पबिबके समरंन जीरित छन । ह्मनेसब अदहा खर्च दगले तैयाव भऽ गेल ।

जमीनक बजिस्ट्री जुगेसब दुनु भाँगक नाँसँ कवा जेत । अपन कमजोब पाशा देखि जुगेसब दुनु पबानी रिचाव केननि जे नीक छत रैठ नाँसँ जमीन निखोन जाय । ह्मनेसबकेँ कोनो पता ले । तग मय बजिस्ट्रीओ आफिममे अखनका जकाँ ले छन जे निखोनिहारोकेँ उपस्थित बह पड़त । कियो केकवा नाँसँ जमीन निखा मकेय । तेसंग पान-मात रैबथ पछाति दमतारेज भेटै छै, तारेँ रातो पबनाय जागत । तद्धमे कागतक खोज जखनि छत तखनि ले जँ ले छत तँ के रूमन ? ले भिलोज भेल अछि आ ले खेती-पखारी रैठन अछि । तखनि तँ गामेमे बह छी जेना-तेना जनक हाथे खेती कऽ नग छी । रात खुजरेँ ले कवत, तँ ह्मदा-धुँडी आकि हनना-हमाद छत कि । जहिया भिन छरै तहिया रूमन जेतै । अन्कून रिचाव रूमि जुगेसब अपना रैठक नाँसँ आठो कपड़ा जमीन निखा केननि । जे पछाति दुनु भाँगक रौचि रिमफोठक भऽ गेल ।

किछु मान पछाति बजिस्ट्रीक भेद खुगन । भेद खुगिते दुनु पबिरावमे अलोन-रिमलोन गक भेल । दु तबक अलोन-रिमलोन उठन । एक तबक भेल जे ह्मनेसब दुनु रैकतीक रौचि आ दोसब तबक भेल जुगेसबक रौचि । जुगेसबक पनी पितक सम्पतिक खेन देखि चुकन छेनी जे अछेते हिमसे हिम्मा ले भेल । तँ पतिपब दरार रैलोल जे जे भेल माने रैठ नाये बजिस्ट्री नीक भेल । ह्मदा जुगेसबकेँ मद्यः भाँगक मंग रैगमानी आ समाजक रौचि दोखी हेरौक डब मनमे नछेत बहनि । ह्मदा रैठेँ जुआन भऽ गेल बहनि । अपन थाम हिम्मा रूमि छुहो मागक पीठपोछ रैनन । तहिना दोसब दिस ह्मनेसब अपन आमदनी देखि मरुव करेत । आमदनीओ नीक रैन गेल बहनि । सबकारीकवण भेले नीक दवमाता, तेसंग धुनिलो हसि रैठले अधिक आमदनी, बाँचीक मकान भाड़ । सेहो जोब दैत । ह्मदा माधनाक भुख (सम्पतिक भुख) आरो उग्र भऽ गेलनि । तद्धमे अपन रौप-मागक देन रैबतन-रौमन रिचाव बहनि । दुनु पबानीक रौचि खुनि कऽ मतभेद गक भऽ गेल । गप-सपक ह्म एना भेलनि । ह्मनेसब पनीकेँ रूमरैत कहनथिन-





“देखियौ, बाँटी मन शिखरमे अपन मकान भऽ गेल, गाममे बँहक कोनो प्रश्न नै अछि। तखनि तँ ओह (भैया) खेतीउ करै छथि, खेती कबत।”

झुलमबक रिचाबकेँ कष्टेसत माधना अपन अर्थशास्त्रीय तर्क देनथिन-

“जखनि गाममे नै बहरै तखनि गामक पूजारीकेँ याव पूजारी किछ रँगौले बहरै। ओकरा रँगै कऽ रँगैमे जमा कऽ जेरै तैयो मुदि उत। नै जँ घरे आबो रँग जेरै तैयो भाड़ १ एरै कबत।”

पाशा रँदनेत झुलमब तर्क देनथिन-

“रौप-पुवथाक जँ घबाड़ १ रँगै जेरै तखनि कोन झूठ नऽ कऽ जिनगी जीरै। कोनो कि पेठे जरे जे रँगैरै।”

होगत-हरागत अ भेन जे गामक खेत भवना नगा रँगैमे जमा कऽ जेरै। झुलम रिचाद तँ रँगैमे तैयारीक बहरै कबनि।

किछ दिन पछाति दुनु रँगैती (झुलमब-माधना) गाम आरि अपन डीह-डारबसँ नऽ कऽ रौप धरिक रँगैरौवा करैक रिचाव झुलमबक सोमतामे बखनि। रिचादी जमीन (जे बजिस्ट्री भेन बह) छोटि सभ किछ रँगैले तैयार भऽ गेल। नै मामासँ कनहा मामा नीक। रिचादी जमीन छोटि रँगै रँगै जेननि।

हरिबक तैयारीमे अठ १० कष्टा घबाड़ १। जे रँगैगत सरी छुठ धुपव आरि गेल।

जग सम्य सुलोचना मासुबसँ लेख आएन छेली ओ सम्य देशीक आन्दोलनक तुहानी दौड़ छन। सन् १९४२क दमनछे प्रारम्भ भऽ गेल छन। परापूर्वक (समावपुव जनाक) लोक अंग्रेजी हुम्मतक खिनाह मझपव उतवि गेल छन। गोवा-पनठनक अछा समावपुव रँगन छन। केतेको गाममे आगि नगाँन गेल। केतेको गोष्टे भूमिगत काज करै छन। केतेको गोष्टे मावि था-था जहनमे रँग छन। झुलम नाजिमी रँग अहो बहन जे एठामक केतेको परिवार गोवा सबकावक रँग देनक। बँह-थाक रँगैरथाक रँग-रँग सम्यतिक नुष्ट मेहो केनक।

ओना गाममे सुलोचना रँगिन मन केतेको गोष्टे छथि जे मासुबसँ भगाँन छथि। अपन माए-रौप, भाए-भाँजाक रँग मेहो बँह छथि आ अमगरो रँगै-रँगै कऽ जीरन-यापन मेहो करै छथि। किछ गोष्टेकेँ सन्तानो छन आ किछ गोष्टेकेँ नहियौ छन।

अदोसँ एक पुरुष एक नाबीक समरन्धक रिचावो आ रँगैरौवा तँ रँगन बहन झुलम परिवारकेँ आगु रँगैले किछ कमी तँ छेलै। ओ कमी अछि जे मनुखक शिबीक रँगैरँगै समान नै होए। रँगैरँगैमे सन्तानोपतिक शक्ति समान बँहत आएन अछि तँ तैरँग कमी-रँगै मेहो बहन अछि। केतो कोनो पुरुषमे शक्ति कमी तँ केतो कोनो महिनामे। तहिना केतो कोनो पुरुषमे रँगै बहन अछि तँ केतो कोनो महिनामे। शक्तिरँग पुरुष बहन केतेको सन्तानक चननि मेहो बहन अछि। झुलम शक्तिरँग नाबी भेने तँ परिवारकेँ आगु रँगैमे रौप उपस्थित भाए जाए। तैठाम दोसब नाबीक महो जकबी भऽ जाए छै। जँ मे नै छै तँ परिवारक अन्त छै। अन्ते नै छै रँगै १ आ रिचाबीक अरुथा मेहो कष्टकब छै। झुलम आरंभिक-आरंभिकता तखनि आबाम आ रिनाम दिस रँगै जखनि भोग-रिनामक मनोरंजित जेव मारे। जगक छनेत समाज-परिवारमे रिचतताक रूप पकड़ै। मे भेन। समाजक अग्रस्थान (थाम कऽ आर्थिक रूप) आ मध्य रँगै परिवारमे एक-सँ-अधिक रिचाव कवरै नीके जकाँ चननिमे छन। जगसँ एक पुरुष एक



नारीक प्रथापव जरबदम छोष्ट पड़न । ह्मदा केतरी जरबदम छोष्ट कि ए ले पड़न, तेयो मोनहनी नष्ट ले भेन । उना निम्न रक्तामे मेहो रिमावी पैमन ह्मदा दोसव रुपमे । उना बाजशाही रैरमथा मे डुपव-मै-निछाँ धरिक किछ पविराव जोड़ एन छन, तग पविरावक रीट भोगी-रिनामी मनोरुतिक पविषाय छन, जखेन कि गरीरमे पैठक दर्द कावण भेन । एहेन प्रकथोक मथ्या कम ले जे कामचोव, आनमी, नशाखोव गत्यादिक कावण पनीके ले बथि पड़े छन । ले बथेक माने ए जे पनीक भवण-पोषण ले क२ पड़े छन । ह्मदा मेहो मोनहनी ले भेन । एहेन रेतुतो महिना डेनी जे प्रकथे जकाँ श्रम करे डेनी । जिनका मनमे पतिक प्रति अमीय श्रिफा आ मजगुत मकनप डेनेनि । अपन जिनगीक मभ सुख पतिमे आरोपि लेने डेनी ।

एकमँ अधिक रिखात करैक रुप दिनारुदिन रँदतव होगत गेन । अनेको बगक हत्मित रोगक जनम होगत गेन । प्रकथोक रिचाव एते घिलौना रुप पकड़ा जेनक जे दर्जनक-दर्जन रिखात कवए नगना । तेमँग एहो भेन जे प्रकथक डमेरोक ठेकान ले बहन । जे डमेव रिखातक नहियौ छन तछ डमेवमे रिखात कवए नगना । जेम्स अपने किछुए दिन पछाति मवि जाग छना आ जूखानीमँ महिना रैबरय रुपमे रँदनि जाग डेनी । रिबरा जिनगीक रीट एहेन पविमथिति पैदा न२ नग छन जे समाजमे रोग रँनि गेन ।

उना नारीक प्रति प्रकथ मोनहो आना अन्याय केननि मेहो ले । नडका-नडकीक (प्रकथ-नारीक) रीट दुनु तवहेँ रोगक प्ररेशे भेन । केतो रँनक प्रयोग भेन तँ केतो प्रकथ-नारीक रीटक आंगिक समरन्ध मेहो भेन ।

प्रम उठैत जे अदौक पवम्पवा (रैदिक पवम्पवा) पव एते भारी छोष्ट पड़न आ मभ प्रकथ-महिना ह्मँ देखेत बहि गेना । एँठाय एहो रीत देखए पड़त जे ले मभ गामक एक बग चानि-ठानि, खान-पान, रीत-रिचाव अछि आ ले सामाजिक रिकामक प्रक्रिया एक बग अछि ।

एक बग ले होगक अनेको कावण अछि । एक तँ समाज छोष्ट-छोष्ट बाज्यमे रिभाजित छन । जेग तवहक बाज्य छन उग तवहक बजो छना । उना मिथिलाचन मेहो केतेको जमीन्दारीक मँग बाज्योमे रिभाजित छन । मभकेँ अपन-अपन शोमनक मँग सामाजिक रैरमथा मे मँचानित करैक अनग-अनग ठडँ छन । उना केवक हिमारीमँ मेहो अँतव डेनेहे । खान-पानक मँग उपावजन करैक सिम्टयोमे अँतव पहिलौ छन अखलो अछि । अखलो एहेन केव अछि जेठाय ले रीटा क कोलो प्रभार (धोवक काँठ-डौँठ) तेहेन पड़न जेम्स उगठायक थेत-पथाव आ रीम भूमि प्रभारित भेन । ह्मदा एहो केवक कमी ले जेठाय उपजाडु भूमि धारो रँनि गेन आ रीबुडमँ भवि गेन अछि । जे कहियो सुन्दर गाम (रीमक हिमारे) छन उ उजडाँ गेन । रिब अन्न-पानिमँ मन्थ जरी केना मकेए ? ए तँ प्रम तहियो छन आ अखलो अछि ।

एकठा आरो भेन । उ ए जे जेठाय प्रकथ-नारीक रीट पविराव ठाठ भेन उगठाय प्रकथ प्रधान रैरमथा बहने अनेको तवहक अरँनठ नगा नारीकेँ घबमँ भगाएँ । केकरो मन्तानोत्पत्ति शिष्टि ले बहने, तँ केकरो चविनहीन कति गत्यादि-गत्यादि, अरँनठ जोड़ा घबमँ अनग क२ देन जाग छन अखलो क२ देन जाग ।

गामक ममस्या (भागक रैरताव) दुनु पवानी ह्मनेमवक समरन्धमे थाधि रँनेत गेन । दुनु भाँगक भिलौजी सुलोचनकेँ मेहो रीष्टि देनकनि । एते दिन सुलोचना दुनु भाँगक रीट डेनी ह्मदा भीन भेने जुगेमवमँ ठष्ट ह्मनेमवक मँग भेनी । जुगेमव ह्मनेमवक थेती छोड़ा देनकनि । भागक थेती छोड़ने थेतीक ममस्या ह्मनेमवकेँ उठननि । कावणो म्पष्टे अछि । अपने दुनु पवानी रीतर बहियो छना आ गामक आराजाली मेहो नहियेँ जकाँ





डैननि । गाममे नै बहने माने-जान केना पोमि मके डुना, जगमै खेती कबितथि । उना रातरामे दुनु रैकती द्दनेमव एकठाम नहिये बैठे डुना । रात-रैछाक मग पने-साधना बाँटीमे बहियो डेनी आ हाग-मकुनमे लोकबीउ करै डेनी जखनि कि द्दनेमव पनायुमे बैठे डुना । एक तँ दुनुक दुबी अरिक् अरिक् दोसव जँ मकुनमे डुङ्गीउ हाग डेननि तेयो ठुंशिन बहिये जाग डेननि । तँ बाँटीउक आराजारी कमे-सम बैठे डेननि ।

जिनगीक दुबी रिछारोक दुबी रैलोजे बहननि । जेठाम साधनाके अपन पबिरावक टिन्ह-पठिन्हमे कमी डेननि तेठाम द्दनेमव भाएक आगु सम्पति-जमीनके गौण रूने डुना । म्पष्ट कपे दुनुक रीच मतभेद हागत गेननि । अपन तक-हिम्मापव साधना अरुनी तँ द्दनेमव आगु रैठमै लिचकिछाग डुना । हागत-हरागत भेन आ जे दुनु गोठे एक दिन निर्याने लेन तेयाव भेना । दुनुक रीच प्रम-उत्तव एना भेननि ।

साधना-

“जखनि खेत कालेमे अदहा खर्च भैयाके देनियनि तखनि उ किअ अपना रैठा नामे जमीन लिखा रैगमानी केननि ? ”

साधनाक मजगुत तर्कमै द्दनेमव महमि गेना । द्दना अपनाके उदाव रैनरैत उत्तव देनथिन-

“उ (भैया) जँ रैगमानी केननि तगमै हमव की रिगडन ? ”

॥॥॥



## २

जुगैमब-झुगैमबक रीच मरौमी जमीनक रैठरौवा भऽ गेलनि। झुदा तानमे कीननायक ले भेल। दुनु भाँगक रैठरौवा सुनोचना रैठिनकेँ मेहो रैठि देनकनि। सुनोचना रैठिन झुगैमबक मंग भेली। खेत रैठेनामँ खेतीक समस्या उठन। जुगैमब एकठा रैबद बथि भजैती हब रैना अपन खेती करैत, झुगैमबकेँ खेत तँ भेलनि झुदा खेतीक कोनो समझा ले। अपनो परिवार रौतरे बहैत।

खेतक रैठरौवा एकठा नम्रब समस्या ठाढ़ कऽ देनकनि। समस्या अ जे मध्यम परिवारमे खेतक रैठरौवा दु ठगमँ होग छै। पहिन जे खेत-खेत आर्छा ले दऽ खेत-खेत रैठि लेलौ। तब रैठेमे गोठे-आधे खेतमे आर्छा पड़ैत ले तँ खेत-खेत रैठि जागत। दोसब अ जे छोटे-खेत बहऽ आकि नम्रब खेत-खेत रैठेन। उना दुनु रैठरौवा रोगएले अछि। एक रोगएन अछि जमीनक उर्वरशक्ति आ जमीनक किमिमँ। एके गायक एक रौधमे नीच, मध्यम आ ऊँच खेत होग। नीचबस खेतमे पानि रैमने मने अधिक दिन तक पानि बहने एकेठा उपजा भेल। तेकरो कोनो निश्चित रिसराम ले। कि ए तँ जँ अगते नम्रब रैबथा भऽ गेल तँ खेत ले अरुद छैत, दोसब अरुद भेलो पछाति पानिक कोनो ठेकान ले होग छै जँ अगते डुम्या रैबथा भेल तँ रोगएलो डुमि गेल। जगमे नगतो डुमि गेल, उपजाक कोनो चबछे ले। झुदा मध्यम खेतमे उपजा (गिनती हिमरमँ) रैमी आ नीक फसिलो (जेना धानमे हनुक धान, मटरिया-तुनमीहुन) होगत। एहेन ठाम समस्या उठरै कबत। तैमंग ऊँच जमीनमे गाछीउ-कनम नगैत आ रैबमाती राढ़ी (रैबमाती तबकारी) मेहो होगत, जे मध्यम आ नीच खेत लेन मँझार ले। तहिना दोसब तबहक रैठरौवामे समस्या उठैत जे एक रौघा खेतक टुकड़। तीन पीढ़ी जागत-जागत रौघामँ कष्टमे उठरैत धुबमे पड़ै जाग। जेना पहिन पीढ़ी जँ चाबि भाँगक डेयारी बहन तँ रौघा पाँच कष्टमे रैठेन, दोसब पीढ़ी जँ चाबि डेयारीक बहन तँ एक-कष्ट पाँच धुबमे रैठेन आ तेसब जँ दुओ भाँगक डेयारी बहन तँ माछे-रौबह धुब भेल। खैब जे होड़, झुदा समाज दुनुक मंग न्याय केने अछि। दुनु प्रथाक गाय-गाममे चनणि अछि आ मन्त्र मानितो अछि।

जुगैमब झुगैमब मगछा कऽ रैठरौवा केननि खेत-खेत आर्छा देननि। खेतक नकशा तेहेन रैनि गेलनि जे हबक जोत कोदाबिपब चलि आएन। जँ एक दिस नम्रब-नम्रब ट्रेक्ठेब खेत जोतए आरि बहन अछि तँ दोसब दिस खेत खँतागत-खँतागत तेते छोटे भऽ गेल जे ट्रेक्ठेब अँठरै ले कबत तँ जोतत कथी। रैन पकने कोँआकेँ कोन नाभ। उना समाजमे दु बगक रैठेदारो अछि। एक ओ जे अपन हब-रैबद बथि अपन हबराति कऽ रैठाग खेत जोतेए, जेकरा थोड़-थाड़ अपनो बहन आ दोसरो भेल। कि ए तँ, आजुक ओह खेती रैनि बहन अछि जे एक-फसिलो ले रैह-फसिलो रैने खेतक जोतो रैठ छै। रैबहमसीआ खेती मेहो भऽ बहन अछि। रैबहमसीआ खेती ह्रषिक उन्नतिक छोटीक मीढ़ी भेल। रौबहो माम खेती भेल, पयारिबगरिद मन्त्रकेँ अनेरे आँकसीजनक माँस भैठैतनि। दोसब तबहक रैठेदार ओ भेल जे अपनो रौगन करैए आ किछ खेतीओ करैए। मोठी-मोठी ओ मन्त्र कोदाबिसँ खेती करैए।

दुनु भाँगक रीच रैठरौवा भेला पछाति झुगैमबक मनमे बहनि जे खेतक देखभाल रैठिन कबती आ डेये खेती कबता, उपजाक हिमसा रैठिनकेँ देखिन। मनमे बहनि जे रैठिन तँ



दुनु भाँगक छी जौँ ओछु नाथे अपन मरयोग रूमि मोनहो आना उपजा द२ देखिन तँ हुनको गुजबमे सुनिा हेतनि। ह्दा मगड़ ११ रीखा पहिने सुनोचना रैहिन रोपि जेननि। रोपि ३ जेननि जे खेत कीनना पछाति ह्नेमव दिसमँ रौगज गेली जे जखनि दुनु भाँग अदहा-अदहा थर्ट द२ खेत कीननक तखनि हिम्मा कि३ जे हेते। अपना ह्ने रेटावी एक भाँगमँ दूव आ दोमवमँ नग चलि एनी। जूगेमरोकेँ सबकारी मान्यता (सबकारी म्कून रैनने) भेटेले दवमहो रैठननि ज३मँ घवाड़ १ कीनि पजेरौक घरो नीक जकाँ रैना जेननि। सुनोचना रैहिन मरुव केनी जे जखनि सीता महारानी जारै जनकपुरमे बहनी तारै रैठै बहनी (रैठैक महत परिवारमे कम होगत) आ जखनि बाजगद्दी रैव एननि तखनि रौने गेली आ रौनोमे पति-दिश्वमँ रिछुछा नका गेली। तँ कि ओ बारणक बाजगद्दीमे बहनी? जे! पुरषपराष्टिकामे बहनी। तहिना हमहुँ बहरँ। खेत रैठैग करैमँ जूगेमव पाछु हँ गेली। तेहेन-तेहेन रैठैदाव भेलनि जे ममेपव खेत३ जे क२ पारै छन। ज३मँ उपजा रैठैकान भ२ गेल। ह्दा सुनोचना रैहिन अपन रौप-दादाक डीह धेने बहनी।

डिफिमिष्ट ग्राष्ट म्कूनकेँ भेटेले ह्नेमरोक दवमहामे रैठ ११वी भेलनि। तैमग नीक शिक्षक भेले (पठरैमे नीक) धुनिन मेहो रैमीखा गेलनि। ज३मँ आमदनीमे नीक रैठ ११वी भ२ गेलनि। बाँटीमे अपन घरो रैना जेने बहथि। गाममे भैयावीक रिवाद ठमकन बहन। ह्दा दुनु रैकतीक रीचक ह्नेमवक दूवी रैठ ११ गेलनि। मरभारमँ दुनु दू तवहक। एकक मरभार अपन कर्ममे एते रिष्टिमत भ२ गेल जे मनमे उठैत, कोन सम्पति अछि माम दिनक कमाग भेल रूमरँ जे माम दिन नहियेँ कमेलौ। त३मँ ३ तँ ह्द जे समाजोक्त नजरिमे जीरित बहरँ आ परिवारक रीच मनितो कमत। भैयावीक जे मरुव अछि ओ रैवकबारे बहत। घवाड़ १ छोड़ने की होग छै। हमहुँ तँ गामक के क२ जे आले बाजमे घर रैनोले छी। ह्दा भैयावीओ तँ भैयावी छी।

दू भाँगक रीच दू मा३-रौपक रैठै मेहो छथि। दुनु भाँग ए रौगमँ ग्रमित। कावणो भेल। कावण भेल जे जूगेमवकेँ मास्वक सम्पतिक जोड पनीक मातहत३मे आ ह्नेमव ए दुआरे जे एक माधवण किमान परिवारक रैठैक रिखाह प्रशामनिक अहमवक रैठैमँ भेल छेलनि। केतरी त३-तैरी कि३क जे ह्द ह्दा एकवा केना नकावि देरँ जे मिथिनाचनक अधिकशि परिवारमे महिनाक ह्दपुवथी ले अछि। ३ दीगव जे की अछि, केते अछि, केहेन अछि, ह्दा परिवारक जूगत महिना त३मे ले अछि मेहो तँ नहियेँ कहन जा मके३। ओना ह्नेमव चरित्रकेँ रैठ त३ तक म३मित बथना। रैठैकेँ नीक म्कूनमे पठेलनि। अपन कमागमँ एहेन मरुव भेल मन म३नि गेलनि जे जिनगी रैठ ११वी ले होग छै। ह्दा तैयो गामक सम्पति जेन दुनु रैकतीक रीच मतभेद भुमवक आगि जकाँ सुनगिते बहन। जे से, ह्दा सुनोचना रैहिनक देख-रेख तँ कवरै करैत बहना। जमीनो तँ जान छी। जूगेमवकेँ पहिन चावि कष्टा त३ नगले छुनि दोमव मास्वक ह्मननि। हेव तेमव दम कष्टाक जानमे पड़ना। जान ३ जे पाहीपष्टीरैना दू भाँगक घवाड़ १-राड़ १ मिना दम कष्टा एकठाम। दुनु भाँगमँ कालिक दाम जूगेमव केननि। दामो तँ भ२ गेल। एक भाँग कपेखा न२ बजिष्टी क२ देनकनि। दोमव भाँग पौठकी नगोनक। दोमव जेरौन पठ्छन। भैयावीक एके जमीनक दाम एक भाँगमँ डेटा या दोमव भाँगकेँ भेल। दोमव वामकिसुन अदहाकेँ के क२ जे मोनहो आना खेत दहनि जेनक। रैन प्रयोगमे जूगेमव कमजोव पड़ना। पाछु हँ कोष्ट पठ्छना। केमा-केमी गुरु भेल ह्दा जमीन बहन दहनिहारक त३मे।

किछु दिन पछाति जूगेमवक रैठै (जे मेष्ट्रिक पाम) एकठा पाम्स्टकार्डमे रिखनि-रिखनि क२ गावि निथि वामकिसुनकेँ पठा देनक। पाम्स्ट अहिममँ छिष्टी भेटैते वामकिसुन जोक



सभकेँ टिप्टी देखैए नगन। साँपन रात उँए, के निखनक ले निखनक मे प्रम उठन। जेकवा गाविक टिप्टी भैठन ओ शैका केनक जे दोमब किए निखत। केकरामँ सगड़ १ ले। तखनि तँ खेत नः कः सगड़ १ जूगेमबमँ अछि ओकरे रैठा निखनक। जूगेमबक रैठा बाधा मेहो गाममे। दुनु गोठेक घरो एकेठाम। उँए सदिनक एक-दोमबकेँ देखैए करैत। बाधाकेँ पकड़ा बायकिसुन खुरँ माबि माबनक।

गाममे जमीनदाबक जमीनपव अगिनगंगी केम भः गेन। अष्टागम गोठे केमक ह्ददानह भेना। ओही जमीनदाबक जमीनपव जूगेमबकेँ रिराद हँमननि। थानक नहकी गाममे बहरै करै। घैठना भैरौ कएन। जमीनदारो अपन राय सभावनक। जूगेमबकेँ अगुआ गौआँ सभकेँ मेहो हँमोनक। खुरँ नमहब ह्दकदमारौजी भेन। राग कोठँ तक रिराद पहुँचन। ह्ददा जमीनपव करँजा जूगेमबकेँ नहिँयेँ भेननि।

ह्दमेमब दुनु पवानीक रीच मतभेद कमननि ले रँठा ते गेननि। एक दिन पनी डपटैत ह्दमेमबकेँ कहनखिन-

“अहाँ रूते खेत करँजा कएन ले ह्दत तँ हम जा कः कवरँ।”

सधनाक उग्र कप देखि ह्दमेमब चुप बहना। रँजना किछु ले ह्ददा रिरादकेँ आगुमे मड़ १गत देखैए केननि। तकोनक गमकी तँ किछु दिन रिरादकेँ बोकनक ह्ददा ककि ले सकन।

हगुआक दिन। ह्दमेमब मेहो सभतुव पनी-रैठा सति एकठाम भेना। ओना रैठा आरामीय म्कून, पनी बाँटी राग म्कून, अपने ह्दमेमब पनामुमे बहत उँए टिप्टी-पतबीमँ भैठ-घाँट होगत। बाँटीक होनी, आदिरामी जनाका ठेन-ठानक गनगनी जनाकाकेँ गनगनरैए। मनपुआ खेनरा ह्दमेमब परिवार, रैमाबीक दिन बहरै करै, सधना-ह्दमेमबक रीच गप-सप उठन। दुनु रैठा नगमे। गप-सप उठन गामक चाबि कड़ा जमीनक हिम्मा। सधना रँजनी-

“जहिना ओ हमबा लेहबक समपतिक भोग ले ह्द देननि, तहिना हमहुँ ले भोग ह्द देरँनि।”

पनीक प्रहार सुनि ह्दमेमब तिनमिना गेना। सचह्द रेटाबीक लेहबक गहना आ रतनो-जात रौठा गेलै। ह्दमिठिब जकाँ ह्दमेमब पनीक प्रहारो सुनथि आ मने-मन रिचावरौ कवथि जे भैयाबीमे एहेन ले हेरौ चली। जेठ भाय पिते तुन्य ले पिहगुब तुन्य होग छथि। जँ सहोदर भायमे एहेन होग तँ बाम-नम्हणक समरँध केना रँनत? सद्यः बारण-बिभीषणक भेन। एक तँ हगुआक बमकी तेपव मनपुआक सहयोग बमैक कः सधना दोहवरैत रँजनी-

“जँ हमहुँ रापक रैठा ह्दरँ तँ सिखा देरँनि।”

दुनु रैठा चुपचाप। पितोक दुदुश्या आ माएक कप देखि अनेरे रौआगत। रँजना राँ (जूगेमब) हमरे सरँक गवदनि कँननि। राँ किछु किए ले रँजे छथि। ह्ददा ह्दमेमबक मन जेठ भायक किवदानीपव, पनी बगुआडी भेन छथि, हमबा बोकले ककती। परिवारक हिमामँ दुनुक (पनीओ आ भैयाओ) दूबी अरँम बहननि। थान-पान आचाव-रिचाव समाजक बीति-बिराज, ह्ददा हम तँ मे ले छी। पिता मन पड़ननि। एके राप-मागक रैठा दुनु भाँग छी। आग जँ ले पठन-निखन बहिति तँ रूमितौ जे अज्ञान-सज्जनक रीचक रात भेन, कोन कपे निवाकवण ह्द ओ सज्जनक काज भेन। ह्ददा जेठाम जहिना शिक्षक अपने छी तहिना



हुनो छुथि। वृत्तिए दुनु गोष्ठे एके छी तथनि एहेन रिचाव कि ए मनमे एननि। म्हादा जेठ भायके केना कहरीनि जे भैया अहाँ रेंगमानी करै छी। तुनका रेंगमान रैनले तँ अपने अनेरे रेंगमान कहरीए नगरै। ओ गाममे बह छुथि, समाजक रीच बहते छुथि, दबमान रैठने सुदिओ-सरांगक कारोबार करिते छुथि, म्हादा हम तँ मे ले छी। एहेन जगहपव की कएन जाय। कोठ-कचहरीक आँखि कहियो देखनो ले। तद्धमे छुठनगर ले छी। लोकबी करै छी, गनन छुष्टी अछि। पारनि-तिहावक छुष्टीमे कोठे-कचहरीमे छुष्टी बह छै। नगमे लोकबी करैत बहते तँ दुनु काज मेन-पाँच करि क२ समहावि जेतो मेहो ले अछि। दोरीस घँठाक दूबी अछि। एक दिनक काजमे तीन दिन नगत। तद्धमे मझ-समेन छी, केते समए नगत तेकब कोनो ठीक छै। रैरमथित जिनगी छुटि जायत। मात्र चाबि कष्टा ओहन खेत अछि जेकवा अपने हाथे ले कवरै। सम्पतिके प्रतिष्ठा रैनाएर नैनमति हएत। म्हादा गहो (पनी) थोड़ मेनती। तेरीच हेंब साधना छपकि गेनथिन-

“समए रैनाउ, दुनु गोष्ठे चनु। मवि जाएर मंगे, जीरैत बहरै मंगे।”

रैरम भ२ म्हादेसब गाम अरैक समए रैना जेननि। म्हुनमे छुष्टीक दबखाम द२ दुनु रैकती गाम चनना। सकरीमे म्हादेसब पनीके कहनथिन-

“हम म्भूरनी (रैनि एँठाम) होगत पवसु आएर अहाँ आगु चनु।”

सए भेन। साधना गाम एनी आ म्हादेसब म्भूरनी गेना।

गाम अरिते साधना चौहदी रैनहननि। तीन तमिया लोकक कमी ले। चठ १-७तबीक रिचाव द२ हनिडपव साधनाकेँ उतावि देनकनि। दोसब दिन भोरे, कबीर मात रैजे साधना जुगेसबक दवरैजजापव पँच गेनी। जुगेसबो दवरैजजेपव, पनी-बिया-पुता आँगनमे। साधनाकेँ देखि जुगेसबकेँ भेननि जे गाम एनी तँ भैठ-घाँठ कवए एनी। आँगन जा मभकेँ भैठ कवती। चौकीपव रैमन जुगेसब आँखि खमा जेननि। साधना दवरैजजाक आगुमे अडा क२ ठाठ होगत रैजनी-

“अहाँसँ काज अछि ?”

चौकित जुगेसब रैजना-

“की ?”

“हमव हिस्सा जे जमीन बखने छी, मे रौंछि दिख।”

सुनि जुगेसब रैजना-

“कोन जमीन ? जग जमीनमे हिस्सा छेनए मे तँ रौंछि देनो। तथनि ?”

“जे जमीन कनिने छी, मे।”

“ओ तँ बाधाक नाँउसँ छै, अहाँक हिस्सा केना हएत ?”

“कानेमे हमव कपेखा ले नगत अछि ?”

दुआव पवक हनना अँगनामे पँचन। अँगनासँ मभ दवरैजजापव पँचन। साधनाक प्रश्नक उत्तर सोमनी दिख नगनी-

“अहाँक कपेखा बहत तँ अहाँ नाँउसँ ले बहते।”





माधना-

“तम किआने गेलिअ जे एहेन गबदनि कठ भैया छुथि जे गबदनि काठि जेता।”

सोमनी-

“अछूँ घबरनामँ रैमी गबदनि कठ ?”

“की गबदनि कठने छुनहि।”

रातारातीमे गबमी आरि गेल। चाक गोठे जूगेमब माधनाकेँ माब-माब करैत चाक भागमँ घेबि जेनकनि। माधनाक मन मनि गेलनि जे माबि थेरै कबर। तगमँ नीक जे पाछु ठष्टि जाग। पाछु ठष्टेत रैजनी-

“अथनि तम जाग छी, राबह रैजे आरि क२ फुडि डेनहि जाएर।”

जहिना माधना रिदा भेली तहिना जूगेमबो मभतुव ठमकि गेल। घुबती रैबियाती जकाँ माधना रैजेत आ जूगेमबो मभ परिवार।

दियादी परिवारक जे पुरुष पात्र बहथि ओ तँ दूह दारि जेननि दूदा मूनीगण मभकेँ अगहन आरि गेलनि। गाम-गामक थिमसा पिहानी माधनाकेँ सुनरै नगनी आ सोमनीओकेँ।

मभ पवानी मिनि जूगेमब रिचाव केननि जे दवरैजजापब आरि माधना रैगज्जत केनक। दूदा मनमँ तवा गेल जे जग माधनाक जेहबक मभ किछु (गहना-रतन) तवा बहनिअ ओ केना सुपते मने मनि जाएत। अपनो दुनु पवानी जूगेमबकेँ मासुबक अन्नभर बहरै कबनि जे उचित मासुबक थिमसा चनि गेल। कोठ-कचहरीमे थचे भेल आ भेल किछु ले। तहिना हेते। रैठे बाधा रूफगब, पिता जूगेमबकेँ रिचाव देनक जे जानेमँ माबि देरैग। जिनगी भविक शिक्षक रैठेक रिचावमँ बाजी भ२ गेल।

राबह रैजे माधना उग्र रुपमे पठूनी। पहिलेमँ दुनु रापुतक रिचाव बहरै कबनि, अरिते माधनाकेँ पकड़ि जेननि। तह्याक नीक पबियाम केननि दूदा भेल ले।

तन्ना करैत माधना थाना जा जूगेमबकेँ एवेष्ट करौननि। दूदा रिवादक किछु ले भेल। दूगेमबकेँ मधुरैनीमे जानकाबी भेलनि जे गाममे जरैबदम घटना घटि गेल। एहेन पबिस्थितिमे सोमहे गाम जाएर नीक ले छत। दूदा नहियौ जाएर तँ नीक नहिये छत। अममनजममे दूगेमब पड़ि गेल। गाममे नर घटना भेल। ओना गामक लोक कोठ-कचहरी आ जहनक अन्नयुत जकाँ भ२ गेल छुथि तँ रैमी तन-चन नहिये जकाँ भेल। दूदा मूनीगणक मंग एहेन घटना भेल तँ आ चर्क रिषय रैनरै केले।

माधनाक अंगीत अंधवा रैलोकमे अहमब। दूगेमब मधुरैनीमँ गाम ले आरि अंधवा पठूनी। दुनु गोठे रिचाव केननि जे गाम जाएर (दूगेमबकेँ) ओते नीक ले छत जेते माधनाकेँ एते रैजरौ नी। आ एठाममँ सोमहे बाँटी चनि जाएर। मएह भेल। चाबि दिन दूगेमब दुनु पवानी बाँटी बराना भ२ जाग गेल।

दुनु भाँगक रीच (जूगेमब-दूगेमब) चारि कष्टा जमीनक संमष्टि रैठि क२ समष्टगब भ२ गेल। एक मंग दूगेमबक मन चाककातक ओसवीक रीच एते ओसवा गेलनि जे मनपब भाव पड़ि गेलनि। देहमे एकएकी रोग मरैतक आगमन तूख नगननि। रैनड-प्रेमब डायरीटीज एते जेब माबि देनकनि जे गलाजमे जाए पड़ननि। चाककातक भाव आ पड़ननि जे एक दिन जेठका रैठे-बघनाथकेँ रैकमे लोकबी आ म्कूनकेँ सबकाबी भेल जहिना थुशी भेलनि तहिना पनीओ आ भागोक मतभेद मनकेँ मरोड़ि देनकनि। थुनम-थुन पनीक रिवाधे





सोमसहामे आरै नगननि । चाबि गोष्टेक परिवार (झनेमब-साधना आ दुनु रैष्टा) मे दु पाठी (रिचावधारक पाठी) रैनि गेननि । बघुनाथ झनेमबक रैष्टे ले, पठ एन रिद्याथी । तेपब रैष्टेक लोकबी भेले मस्कारोमे रैदनाड चलि एले । मस्कारमे रैदनाड आ जे सामती मस्कार जमीन-जयदादके गज्जत-प्रतिष्ठा बुनि लोक जान गमरैले तेयाब भ२ जाग छै झदा पुजारीदानी मोच रैने जमीन-जयदादके पुजारी बुनन जाग छै । प्रतिष्ठा जिनगीक कर्तव्यम जूडन अछि जगमे माने जेकरा पुर्ति करैमे धनक सहयोग होग छै । तँ बघुनाथ चाबि कष्टाके चानीस हज्जबक पुजारी बुनेत, जे दुनु रीपुतक पनबहो दिनक कमाग ले भेल । तगले भारो भ२ माथ रैडकारारुके झूठपब गवियोनक, आ नीक ले केनक । अपनो रीप-दादके नजबिमे बथेक चाहे छेलै । से ले बखनक । एहेन पठन-लिखन परिवार तखनि एहेन काज नीक ले केनक । तेमग अपन पिताक परिवार (अपन खनदानक) सेहो जनेत । दुनु भाँग रारु शिक्षक छथि, तगम पतिने (पछिना पीठ १मे) सेहो दु भाँग शिक्षक छना । एक गोष्टे लेदक शिक्षक मस्कारत मगरिद्यानयमे दोमब मिडन म्कूनमे । खनदानी पठन-लिखन दुनु परिवार (लेहब-मासुब) तेरीच ओबत भ२ एहेन कदम ले उठैरक चली । मबदा-मबदी हम मभ बुनरै । ओना तँ मिथिनामे जेठ भायके जेठोम सम्पति देरौक चननिओ तँ अछि । चाबि कष्टा की भेल ? हुनके भातीज भ२ क२ जेते महीना कमाग छी तेतरौ हुनक कमाग ले छन । रैष्टे सहजे नेते रैनि कोष्ट-कचहरी ठहनि-ठहनि हुकिते छन, ओहो तँ उचित ले जे दुनु भाँगमे एक भाँग तानेरै रैनि जाय आ दोमब भाँग दबिद ! तखनि परिवारक गाड़ १ कोन झूठे चनत । दबिदा झूठे आकि तानेरैबी झूठे ? रौन मन बघुनाथक (ओहन मन जेहेन पोथबिक रा पहाड़ १ धाबक पानि मरछु होगत) रौन छानन पानि जकाँ बघुनाथक पिता दिस रैमी मुकि गेल । झनेमबके पाबिराबिक रौधिक मस्कार बहने चाबि कष्टा जमीन लेन तेयाबीक रीच मनितता आरै ले दगक रिचाव । जगक चलेत पनेम मतभेद चलिने बहनि । बघुनाथ झनेमबक पीठपोछु भेल । दोमबो रैष्टाके लोकबी रैष्टेमे भेल ।

तानु रीपुत एक रिचावक तँ मिनान रैमी । झदा बँक दुबिओ तँ किनकोम किनको कम ले । मए किनो मँठबपब दुनु रैष्टे आ पनेओ अपन-अपन डेबामे बँत । प्रशितेनी घवाड़ कि जे स्वर्ग होगत से दुनु भाँगमे केकरो ले । जेकरा दु-दुष्टा घवाड़ १पब घब बहते ओ भाड़ १क घबमे जिनगी रितेत ओकरा लेन घवाड़ १क कोन मोन । ओना झनेमबो लोकबीम पतिने धबि गामेक घब-घवाड़ १मे बहना तँ रैमी मुकाड़, बाँटीमे जे घरो रैनेरौ तँ मानमे बहरे केते दिन करै छी । तँ गामक मुकाड़ बाँटीम रैमी ।

जहिना नादिमे रौनहन गाथ दोमब गाथके खुनरैत-खुनरैत ठोकबरी नछै तहिना परिवारमे साधनाके भेल । कोनो परिवारक घटनाक रौत परिवारक गार्जन रौले-रैछा नग बाखत, एक तँ छन-प्रपट रिहिन रौध तेपब एके घटनाक दुनु (माता-पिताक) दु रिचाव । साधनाक मन मानि गेननि जे जहिना पति तहिना रैष्टे रिचावम रौहब अछि । ओना अधिक दिन (रैछेम) बाँटीमे बहने साधनाक आकर्षण बाँटीम रैमी । तछमे पतिक कमागक गार्जनी हाथमे, हाथमे आ जे अपने साधना नर म्कूनक लोकबी, जगमे दबमाला ले, अगिला आशामे लोकबी करैत । जेहने दबमाला तेहने ले काजो हत, तँ काजक कोनो भार ले । बाँटीमे जमीन कीलेक जखनि ममए आन तखनि झनेमबक खानी कपेखाक सहयोग, जमीनक दाम-दीगब, जगह पमिन गत्यादि मभ काज साधनाक हाथमे । जमीन भाँजपब एना पछाति नम्व प्रम उठन । नम्व आ जे एकरेब जे भ२ जाग छै से भ२ जाग छै । ले जँ आगु जमीन कीलो चाहै तँ एक तँ महगो हत, दोमब जमीनो हँठि क२ हत । तगम नीक जे घब किछु दिन पछातिओ रैनाथ पतिने जमीन नीक जकाँ न२ नी । नभगब रिचाव साधनाके मानेमे



देवी किछ नगतनि। दम कष्टा जमीन कीनि जेननि। कीनना पछाति दम कष्टामे घब रँनाएँ धिया-पुताक खेन ले। पनीक दरौरमे दूनेमब दिन-वाति मेहनति कबए नगना। उना दूनेमबक चरित्रक गुण बहननि जे उहन खगन ममेमे रौडि पबीक्षा काँपी जाँचक चार्जमे बहना। पागक मोठबीक लोभ देन जागन दूदा हन-खनदानक ठेक पकड़ा अपनारकेँ थीव बखना। दिन-वातिक मेहनति दूनेमबकेँ रोगक घब रँना देनकनि। उना माधना मेहो नीके स्थितिमे बहनी। दुनु रैठाक रैकक आमदनी तँ हाथ अरिते छुनि।

एक दिन एकएक दूनेमबकेँ पेठमे दर्द उठनि। डाक्टरब उगठाम पता चननि जे पैनफ्रियामक ऑपरेशन कबरए पड़त। तेमग महिनो रैड-रेड लिख पड़त। दूदा दबदो तेहेन जे ले करौने जीरे ले मके छी। खेब हदबारादमे ऑपरेशन भेननि। चर्च नीक भेने प्रगतिमे किछ रँना तँ पड़रे केननि। अपनो उमेब रैमी भऽ गेननि, बग-बगक रोग शरीर पकड़ा ए नेने छुनि।

दुनु भाँग-जुगेमब-दूनेमबक रिराद समाजक मंचपब मेहो आएन। जुगेमब जे रैठा मारिमे केम केननि उ घटना कर्तिक मंग समाजक लोककेँ भुमा देननि। केमकेँ उग गति रँद लेनि जे घटनाक पवात भले चाबि थाना गाममे आरि गेन। तवरिँडि गाममे भऽ गेन। दोड़-दोड़-थेता-थेताबी जमि कऽ भेन। दु गोठे जहलो गेन। नगले रँकी दूदानक जरी-हकी भऽ गेन। जेकब प्रतिधिया समाजमे जमि कऽ भेन। दूहपब जुगेमबकेँ गाबि पड़ए नगननि। दूह गोड़-गोड़ एते गोड़ गेननि जे मन मारि गेननि जे जहना लोक कहे छै अपना गामक गाछी डरौन, आन गामक पाथेबि डरौन तहिना तँ हमरोले गाम डरौन भऽ गेन। दिनक के कहए जे वातिउ-रिवाति निधोथ गाम अरै छेलो, दूदा मे आरि एत ? जेना-जेना मनमे डब मर्दि गत गेननि तेना-तेना परिवार प्रभारित होगत गेननि। तेमग अहो भेननि जे पहिले जे रिरादित जमीन चाबि गोठे मिलि कीनले बहनि उग जमीनकेँ दखन करैमे मारि हँसि गेन। रँकी गोठे मारिउ खेननि, मारौ केननि आ केमोमे हँसना। तगमे जुगेमब रँचि गेना। मकुलेक ममेमे मारि भेन। तगमे मेहो फुट-फुटोरैनि भऽ गेननि। उना जमीन करजा भागए गेननि। फुट-फुटोरैनिक काबि भेन जे जिनका मभपब केम भेन उ केमक हिम्मा मंगनकनि। जे ले देने फुटोरैनि भेन।

दूनेमबक ऑपरेशन तँ महन भेननि, दूदा छह मास आवाम करैले डाक्टरब मनाह देनकनि। जीरन-दूहक रीच पड़न दूनेमबक मन उँहोछित भऽ गेननि। एक दिस अपन अगिना जिनगी तबिखब रूमि पड़नि, अपन कमागक मंग दुनु रैठाक कमाग देखि तँ दोमब दिस अपन स्थिति देखि जे अपन मेरा केना एत। पनीउ पनीउ छुनि। अकाम उड़-टिड़ जकाँ। कमा कऽ हाथमे दियन, हँस प्रवरियन तँ रँदरँद यी ले तँ अपनारकेँ कपबजकआक पनी कहि डाकनि देती। एक मन्थ होगक नाते नाजिमी रिचाव भेन। अपन शक्तिकेँ क्षीण रँनाएँ भेन। मारिनी-मत्यरान सेमहेमे छुनि। अपन शेष लोकबी आ पैनशनक आशा पनीकेँ देखि, तँ रैठाकेँ कमापत रूमि मतोष होनि, दूदा रँदकी रँतनक की एत ? रोचाबीकेँ अँडेते भागए ले भाए बहननि, अँडेते पतिने ले पति बहननि, घबपब ओते सम्पति ले, तद्धमे जँ रैठेउक अधिकार बहिति तँ किछ रैमीउ दिनक आशा होगतनि, मेहो ले। मय रौदियाहे अछि। अपन उछागन धेने छी, पागक कोना आमदनी ले। रैठासँ मागि केना मके छी, ओकरो अ रीत (रँतनक चर्च) रूमन ले छै तेपब जँ मंगरै आ उ माएकेँ कहत तँ जेहो किछ दिन जीरेक आशा अछि मेहो चलि जाएत। आगने-अरगबानिसँ



लोक जहब-माहब थाग। अपन रिचावकेँ अपन मनमे दारि फ़लेमब रँहिनकेँ रिमरि देननि।

महिना-दु महिना तँ सुनोचना आशा धेने बहनी फ़दा पेठक आगि तँ ओहन आगि होग छै जेकवा मिमरैले लोक आचाव-रिचाव फ़न-खनदान मभ रिमरि जाग। सुनोचना ओहन परिवारमे जनम लेने छथि जग परिवारक ओबतकेँ भूमि छेदनसँ रँजित कएन गेन छन्हि, ओ अपन त्रैम रैटि केना सकै छथि। अपन ओहन राढ़ १-माढ़ १ खेत ले जे अपनो जेकब मागो उपजा सकै छी। रँधक खेत। रँधम सुनोचना गाममे छँैनी मरैआमे रँधि गारै नगली-

“हे भोनादानी कहिया हवरँ दुख मोव।”

टाक दिमक अपन रँध बमता देखि सुनोचना रँधिन टाककात तकनी तँ एकठाँ घर नगमे रँधि पड़ननि। ओ घर अपन दीदी-पीमाक। पीमाक दोहनत भँ गेन छैननि फ़दा दीदी ओछागन पकड़पव छैनथिन। गामसँ मँछे, कबीरँ कोम भविष्य दीदीक घर। रँधक पहबमे सुनोचना रँधिन दीदी एँठामक बमता पकड़ननि। सुनोचना रँधिनकेँ देखि दीदीक परिवारे ले, छैन-पड़ामक मनीगण मभ मेहो एनथिन। छुपचाप कान नग कनीए जेबसँ सुनोचना दीदीकेँ कहनथिन-

“दीदी, भुख नगन अछि।”

सुनोचना रँधिनक रँध सुनि दीदी रँधि गेनथिन जे बमतेक भुखन ले भुखने घरसँ आएन अछि। सुनोचनाक सुन्दर चेहरा छँैन फ़ुन जकाँ मनिन भेन देखि दीदी पुतोहुकेँ कहनथिन-

“कनियाँ, सुनोचना बमताक भुखन छैत, पहिले किछ पाणि पीरैले दियो।”

ओहना गाम-समाजक चननि अछि जे कियो दवरँज्जापव आएन अड्यागतकेँ पहिले पाणि आगु अरैत अछि। जहिना अपन तहिना मात्रिकक मंग मोमी आ दीदीक घर लोक रँधिते ले अछि अछिओ। जेठाम महिना बहने कियो चर्च ले करैत रँधत दिन भँ गेन। तद्धमे सुनोचना रँधिनकेँ रँध दीदी तथ नगननि, सुनोचनाकेँ किए दीदीकेँ तँ छैननीक जकबति भाग गेन छन्हि। तेमंग परिवारोक भाव कम भेने घरोक लोक खुशी छथि। सुभ्यम परिवार छुगहे खेरा-पीराक समस्ये ले। दम गोष्टेक खोवाकीसँ रँधि मुसे थाग।

सुनोचनाक पिसियोत भाए, तग मकुनमे शिक्षक छथि। प्रतिष्ठित शिक्षक। जिनगीमे देवापव कहियो कोनो रिद्यार्थीकेँ छुशिन फ़ीम ले ननि। नगमे सुनोचना रँधिनकेँ बहने नजबि पड़ननि। लेहब परिवारक मभ रँध सुनोचना फ़हेँ सुनननि। मासुबक रँध किछ रँधनो बहनि आ सुनोचना फ़हेँ सुनननि। मनमे छुग्नता भेननि जे अछेते पतिए रोचारी रँधरय जिनगी जीरँ बहनी अछि। प्रमक जड़ पकड़ काज रँध ननि। सुनोचनाक पति दोमब रिखाह कँ लेने बहथि जगमे चाबिँ मन्तानो भँ गेन बहनि। फ़दा मभ किछ होगतो समस्याक समाधान भँ सकै छै। मासुसँ (पिसियोत भाए) गामक दियाद-रादक भाँज मेहो नगोननि। भाँज नगरैक कावण बहनि जे जँ मासुबसँ समस्योता ले छैत तथनि तँ दोमब रिक्कनपक जकबति अछि। एँठाम (अपना एँठाम) छह मास रँधत दिन बहत मँह ले, जिनगी भवि तँ ले बखन जा सकै। रंग-रिबंगक गप, गप-मप फ़ममे छँैले कबत। दियादरादक भाँज पौननि जे मनीगण मभ तेनेन छथि जे सुनोचना रँधिनक गोड़ १ ले रँधमँ देती। अपन जे छन्हि तहीपव बति सकै छथि।



मासमैरक परिवारमै स्त्रोचना रहिन मासुव गेली। दोहवा कऽ माठि रँथक उमेवक पछाति जहिना जिनगी तावन-थाकन तहिना अपन जिनगी पाँच कोव अन्न आ पाँच ताथ रमूवपव अँठका जेननि। दु रँथ मासुवमे बहनी। जहिना उमेव रँठने रिचारोमे रँदनाउ अरै छै, से स्त्रोचलो रहिनकेँ एननि। ह्दा मासुवक जे सिनेह मूगिगकेँ अपन रान-रँछाक मग, अपन नगोन राड १-हुनराड १, घब-दुआव रँलौना पछाति होग छै, से जे भेठेननि। केतरो मतोत रँैठा-रँैठा किए जे बहनि ह्दा अपन जकाँ तँ नहियेँ माननि। तहमे चेष्टगव मभ भऽ गेल, जे मत्-भय रँुमेत। तहिना पतिउ मग बहनि, खेव जे बहनि, ह्दा दम रीयाक किमान परिवार भेठेने स्त्रोचना रहिन खुशी तँ भेरेँ केनी। परिवारोक मभ रँुमेत जे कियो आन थोड़ एनी।

स्त्रोचना रहिनक मन मनि गेलनि जे जिनगी अमानीमँ कष्टि मकेँ। मरैकान जे तिरौष्टे तहत तँ काष्टि जेरै। काष्टि कि जेरै जे उ तँ एहेन कष्टे होग छै जे लोक मवि जागए। ह्दा से अथनि रँत दुव अछि। अथनि तँ तेहेन थेहगवि छी जे पटीम-तीम रँथ जौरै कवरै। एक दिनक जिनगी तँ लोककेँ पगड़ होग छै।

मासुव एना पछाति स्त्रोचना रहिनकेँ मभमँ खुशी अ भेलनि जे अछेते पतिउ जे जिनगी रँनि गेल छन उगमे एकएक रँदनाउ एननि। उना रँधरयक सीमा जे अछि। ह्दा थोड़-दिन आकि रँैमी-दिन रौवहमँ दौदह आना महिनाकेँ एँ जिनगीमँ गजबए पड़ छन्हि। ह्दा मरैक जिनगी की एक समान थोड़ होग छन्हि। समजो तँ समजे छी, एक दिन रँधरयक ह्दह देखि केतो जाएरकेँ अथभ रँुमेत तँ केतो थभ रँुमेत। बिबरक जिनगीउ तँ तहिना होग छै।

पति रहिन पनेक (पुखय रँिग नावीक) दु कप समजक रीच अछि। एक पतिक मृत्यु भेना पछाति दोमव जौरितोमे डोड़ना पछाति। उना उमेरो आ रिासोक (परिवर्तलोक) हिमरैमँ रँधरय जौरन अनेको रंगक अछि, ह्दा से जे, मोठी-मोठी जिह अछि।

आजुक नजबि ए रीम रँथ रा उगमँ डुपवक हिमरैमे रिाह त्ख नगन अछि। उना अ रिषमता तँ अथलो अछि जे मभ परिवारक कन्यादानक एके उमे जे अछि। पठन-लिखन अथअएन परिवारमे जेठाम डाकूँव, गजौनियव रा अन्य प्रकारक डिग्री प्रापत केना पछाति रिाह होगए तँ ओते लोकबीकेँ आधाव रँना लोकबीक पछाति रिाह मेहो होगए। समायानुकुन मेहो अछि। रिाहक मान भविक एहेन प्रफिया रँनि गेल अछि जे रँैव-रँैव आराजाली आ रँैव-रँैव काज (रिाहक प्रफियाक काज) होगते बँैव। मधुश्रीरनी, कोजगवा गत्यादि नजबिपव अछि। अथयनक रीच रँैवधान उपस्थिति होगते अछि। जगमँ गनन हफ्टिया नापन मोड़ जकाँ कोर्मक (पठ १०क सिनेरैम) तेयाबीमे कमी अरिते अछि। तेतरेँ जे, अ ओहन मोड़ (जिनगीक मोड़) छी जेठाम आरि रँैचविक कप रँौहिक कपमे रँदनए नगैत। रंग-रंगक किम्मा-पिठानीक मग जिनगीक ओहन मनोहव कप दृष्टिगोचर होगते जगमँ किछ-जे-किछ धका नगिते छै। एक दिन जिनगीक ओहन मोड़पव जेठाम पहिन सीठ १क ठपान अछि, जे अगिना पिछुड १ह सीठ १मे ठाठ-ठाठ ठपि जागत आकि पिछुड १ - पिछुड १ खमत-पड़ १त ठपत आकि पिछुड १ कऽ तेना खमत जे उरिछि जे तेते।

दोमव तवहक परिवारमे (जगमे तावव एजुकेशन जे छै) रँैठा-रँैठाक रिाहकेँ पाविराविक मसकाव मनि निमाहरँ अनिरायक मग ममेपव आ ममेमँ पहिलो कवए चलि। कावणो छै जे अरैत पवमपवामे रिाह चाहे जग उमेवमे होग (रँैचामँ सियान धवि) ह्दा मन्तान ममेपव होगए। ममेपव आकि ममेमँ पहिले कवरँ सकावात्मक रिाव भेल। एहेन परिवार आकि एमँ पछुअएन परिवारमे रान-रिाहमँ नऽ कऽ पनवह-मोनह रँथ धविक रँैठाक





बिखाह अछि। रीछामे बिखाह नीक नहिथै अछि। म्हादा नीक किछ तै अछि ? अ रात मत् जे पानिमे कोनो चीजक (अन्न आकि तबकाबी) रीखा देरै पानिमे फेकरै भेल। म्हादा की पानिमे उपजेरैना (मथान, मिगताब) कै फेकरै कहलै ?

रैठा-रैठीक बिखाह माता-पिताक अनिरार्य काजक रूपमे समाजमे अखनो ठाठ अछि, जे उचितो अछि। गबरीक चलेत जग परिवारक जिनगीक कोनो भरोस तै छै। बाजबोग (भावी रिमावी) की गबरीक घबमे तै होग छै, जै हेते तै गलाज कवा पौत ? तेतलै किछ, किमान प्रधान गाममे की गामेक किमानक मठठा खेत गामक दुनहि आकि आनो गामक किमानक (अधिक खेतरेना किमान)। खेतीक उचित खर्च केनो पछाति उपजोनिताबक (गोखाँक) हिम्मा केते होग दुनहि ? जगमे चाहे मान-जान पेमसँ ह्वाँ आकि अन्नक खेती ह्वाँ, उपजाक अदहामँ रैमी नागत नगै छै तेठाम अदहा आकि अदहामँ कम उपजोनिताबकँ भेटैले कथा नाभ हेतनि ? एतेन जग समाजक स्थिति अछि तग समाजमे जिनगीक भरोस मात्र सीतावाम कवरै तै तै आरो की छत ? एतेन परिवर्तितमे जै माए-रौप अपन पान मानक रैठा-रैठीक भावकँ उतावि नग छुथि तै की अचना भेल ?

उना बिधरा बिधानकँ सामाजिक बिधान तै मानन जा सकै म्हादा समाजक रीच रैरताबमे तै अछि, एकरो नकाबन तै जा सकै। किछ खाम परिवारक रीचक ओतन ममस्या अछि जेकवा एकैमसी मदीमे अंगीकार कवरै नामर्दगीक अतिविकृत आरो किछ तै छी, खेब जे छी से छी म्हादा सामाजिक ममस्या तै छी। राबत-चौदह रथिक कन्या जै रैरथ होग छुथि तै हुनक जिनगी केहेन होग अ तै प्रश्न अछि। ओ उमेव ओतन उमेव होग छै जेकवा रैमन्ती हरामँ भेटै भेल तै बँटै छै। जे बिधरा भेना पछाति अरै छै। ओ ओतन उमेव होग छै, जेकवा दिशा देरै अमाध होग छै। एक दिस परिवार-समाजसँ निकालि देन जाग छै तै दोसर दिस जिनगीक रैमन्तक नहकी नहकै छै तेतना स्थितिमे की छत ? जग मगी-रहितपा मग अखनि धवि रैमी-टोन होग छन हुनो या तै बिधराक मोमतामे राजरै रैन क२ दैत अछि रा ओठामसँ ठेठा देन जाग छै। की पति तरेने (रैरातिक रैधनक पति) परिवारो हवा जाग, समाजक मग जिनगीओ हवा जाग। म्हादा हवाग छै। ओग दुधमूँत रीछाक कोन दोख भेल जेकवा लोक मूँतपव कहते जे हनलीक मूँत देखि जूँखा थेनए गेलौ, घर-घराड १ ठाँव गेलौ ! जधवि समाज मयावकुन सामाजिक रैधन रैना तै चनत, ताधवि समाजक कोनो अमृतिर तै बहते। गाछसँ पाकन कठहव खमि जहिना धवतीपव छिड़ा या जागत, अँठी उड़ा केतो, कोखा उड़ा केतो, कमबी केतो आ नेवहा केतो चलि जागत, तहिना समाजो क होग छै। जखनि एतेन स्थिति रैले छै तखने बग-रिबगक रयबिताब समाजमे पनपै छै।

समाज तै समाजे छी, एतना बिधरा तै छुथि जे मास-मासक पछाति पतिसँ रिछुड़ छुथि। दु-चावि मन्तान भेना पछाति। की ओ अपनारै आन परिवारक प्रकथसँ अपनारै कम माले छुथि, किछ मानती। अपन परिवारक खेती-राड मँ न२ क२ रान-रीछाकँ पठौनाग-निखोनाग मठ करै छुथि तखनि ओ प्रकथसँ कम केना भेली। जै प्रकथसँ कम तै भेली तै कियो मूँतपव कति दन्न जे हनलीक मूँत देखि यात्रा केनौ, यत्रे भंगठ गेल। जिनगी जिनगी भेलै छै।

तै कि मठ अघने तै नहिथै अछि, एतना बिधरा तै छुथि जे रैठाकँ मनोवकुन मेरा केननि। नाति-नातिन, पोता-पोतासँ घब-अंगना अराद दुनहि। जै कियो घबसँ रैतवधत आ दादीकँ गोड़ नागि अमिबराद तै जेत तै की माए-रौप हज्जति तै कवतनि। जे घबक गोसाँगकँ लोक पहिले गोड़ नागि निकलै।



जहिना भिन्न-भिन्न कपक रीट रिबरा जीरं बहनी अछि तहिना ओहना तँ छुथि जे पतिरै  
रौड़ गेल रा कोना तेहेन रोगसँ ग्रसित पतिक रीट सेहो छुथि। जिनकब पति रौड़ गेल  
छुनहि ओ रिबरा ताबि ले मानन जाग छुथि जाधरि निश्चित भाँज ले नागि जागत। जँ भाँज  
ले नगि सकत तँ राबत रबथ पछाति मृत्यु मानन जाएत। ह्मदा प्रश्न अछि प्रकथ रिहिन  
नारीकै जीरैक उपए। एक मनुष्य होएक नाते समाज कृपा कोन नजबि देखि बहना  
अछि। समाजो तँ समाजे छी, ह्मद केमरु छै आ नागि केमरु अछि से भाँजेपब ले  
चट्टै। ताड़-दक पीनिहार पीर क२ ममतीमे दोसबक माए-रिहिनकै गाबि-माबि ले,  
गज्जति-राँरक सेहो नुठै ह्मदा अपन माए-रिहिनक रीट आदर्श रनि परिवारमे बहै। एहेन  
जे सोचक कप रनि गेल अछि एकबा केना मेथौन जाएत, मुन रात भेल। ह्मदा एहेन  
ममस्याक सोब देखि, राँजरी रा मेथौनरि धिया-पुताक खेत कर्त छी। के रोगी, के भोगी के  
जोगी से टिनरु कर्तन अछि! कर्तने ले अछि जएत रोगी सएत जोगी रनि निश्चित रनि  
भवमि बहन अछि।

स्वलोचना रिहिन, अछि ते पति (प्रकथे) रिबरा ले बहिनो रिबरक जिनगी जीरं बहनी  
अछि। राबत-तेबत रर्थक अरमथामे रिखात भेलनि उन्नम-राम रर्थक अरमथामे मासुबसँ भगा  
देन गेली। ओना समाजमे रिक्कन बहिनो सरहक लेन ले अछि। समाजक रत्नशिक रीट  
रिक्कन खुजन अछि जे दोसब रिखात करै। ह्मदा स्वलोचना रिहिन ओन परिवारमे जनम  
लेन छुथि जग परिवारमे प्रकथ लेन तँ कोना राँर ले छै ह्मदा नारीक (महिना) लेन छै।  
मासुबसँ मन्तान ले हेरौक अरनठ जोड़ा भगा तँ देन छुनहि ह्मदा जराँर (रैरातक समरुन  
भंग करैक) तँ ले देन छुनहि। जराँरो तँ ओतए ले देन जा सकै जैठाम रिक्कन  
होग। जैठाम रिक्कन ले छै तैठाम जराँरो देना अमान नहियै अछि। नगभग राम-  
राँगम रर्थसँ माँठि-रामठि रबथ स्वलोचना रिहिन अछि ते मासुबे लेहबमे बहनी। ह्मदा लेहब-  
मासुबक रीट समरुनधोक तँ दोहरी कप अछि। जैठाम मासुबमे दिखब-भैजाग, मासु-मासुब  
रा आन-आन समरुनध अछि तैठाम लेहबमे भाए-रिहिनक, माए-राँपक समरुनध अछि। जगक  
चलेत स्वलोचना समाजक रिहिन रनन बहनी।

आले मिथिलागना जकाँ स्वलोचना रिहिनक अपन मन मालि गेल छेलनि जे हमबा मन्तान  
ले छएत। ओना मन्तान छएर ले छएर जानर थोड़ के कर्तन अछि जे स्वलोचना रिहिन ले  
रूमि पेली। तैमग आहो भेलनि जे जखनि मरामी (पति) दोसब रिखात क२ लेननि तँ  
मौतीन तबक रामसँ नीक लेहबक राम। समाजमे ओन दीक्षा रैठनिहारक कमी नहियै अछि  
जे अरिमराम जिनगीकै रिमराम रना माँठि रर्थक डमेबमे पाँचम रिखातक दीक्षा दैत दैछना  
पारि एक बंगीन दुनियाँ ठाठ क२ दैत अछि।

लेहबक राम तँ स्वलोचना रिहिन मनमे अरोपि लेनी ह्मदा जीरैक जोगाब ले क२  
पौली। श्रमक महाबसँ जँ जिनगी ठाठ कबितथि तँ दोसब जिनगी भैठि जैतनि से ले तकि  
पौली। ले तकेक काबण परिवारक रैरात बहनि। परिवारक एहेन रैरात जगमे घबक  
अतिविकृत उद्यम करैक अधिकार ले। ओ अधिकार मिथिल प्रकथकै छुनहि। ओना परिवारक  
दोथ मानन जा सकै। जे परिवार मज्जनी बहन ओग परिवारमे एहेन-एहेन ममस्या लेन  
कोना रिटाब ले भेल, ओकरा तँ दोथ कहने जाएत। अनेको मिथिलागना मिथिलाक धवतीपब  
जनम लेन छुथि जे अरिराहित रा पति रिहिन बहि शिखर छुरि रैसन छुथि।

देखिते-देखिते स्वलोचना रिहिन माँठि-पैमठि रबथ पाब क२ गेली। नमरु कद, गौब  
रुप, गोन ह्मद स्वलोचना रिहिनक। ह्मदा लेहबमे बहि परिवारक ले, समाजक रिहिन रनि  
गेली। केकरा रैठि-रैठिक रिखात होग, स्वलोचना रिहिन पाँच दिन पछि अदोबी थोँठरै





करै छथि, भोज-भातक तबकारी रँगरे (कठरे) करै छथि। रँव-रँवी छनरै करै छथि। गामक देर मथानमे द्वाङ्गक गीत, रिखारक गीत गत्यादि-गत्यादि गेरै करै छथि।

रिद्यानयमँ जूगेमब मेरा-निरुति भऽ गेला। उना सबकारी रिद्यानय भेले जूगेमबक अंतिम दम रँवथ नीक रँननि। सबकारी रेतनक मंग आरो-आरो सुरिषाक आशी तँ रँनरै केननि। उना मेरा-निरुतिमँ पतिने प्रवना घवाड़ १ (पिताक देन) छोड़ा दोसब ठाय घवाड़ १ कानि पजेरौक नीक घब रँना नेले छथि। पाँछठा मन्तान छन्हि, दु रँैठा तीन रँैठा। रिद्यानयमे नीक रेतन भेठने रँैठाँक रिखाह नीके घब केले छथि। द्वादा शिक्षाक जे दुर्गुण छै उगमँ परिवार प्रभावित भाषा गेन छन्हि। दुर्गुण आ छैक जे रँैछेमँ लोक जिनगीने ले, लोकबीने पठैए। जखने प्रागमयी शिक्षामँ आगु रिद्यार्थी रँैछैत अछि तखनेमँ उकरा मनमे नीक-लोकबी नाछै नगै छै। नीक मेहनति कबरँ नीक बिजनष्ट छैत। नीक बिजनष्ट छैत नीक लोकबी भेठैत। अतिभारकौक धावणा मएह रँनि गेन अछि। उरँव भूमि मिथिलाक अछि, जगमँ रौषिक रुपमे मेहो उरँव अछि। नीक शिक्षा नेन नीक जगत छाही मे तँ अछि ने। तखनि? तखनि यएह ले बाज्यमँ खान-बाज्य आ नगबमँ महानगर होगत खान-खान देशेक बसा धडू।

एहने परिवार जूगेमबक रँनि गेननि। हाग म्कून पाब केना पछाति दुनु रँैठा गाम छोड़ा पबदेशेक रँैठ पकड़ा केननि। पबदेशेक आरँ पतुनका रुप नहियँ बहन जे देहा-देही कियो लोकबी करै छना, आ परिवार गाममे बथै छना। जगमँ सामाजिक समरँन्धमे कोनो रँैरधान ले छन। द्वादा आजुक परिवेशमे घबमँ निकनिते, अपन पनी-रँैछा अगुआ छनि जाग छथि। भाड़ १-भुड़ १क घब (एक तँ उतुना कम कमनिहार नेन जहिना भोजनक समस्या छै तहिना बँैठक) एकठा कोठबीक जिनगी केहेन छैत? भानममँ नऽ कऽ सुतरँ धरि। दुनु रँैठाकेँ पबदेशे गेले, जूगेमबो आले-खान जकाँ रँैछ १७ १मे दुनु रँैकती गाम धेले छथि। जग अरमथामे दोसबक मेरक जकरबति होग छै, तगमे मेरा केनिहार ले। अनेको प्रश्न एक मंग ठाठ होग।

द्वाजेमब मेहो मेरा निरुति भऽ गेला। पनामूमँ बाँटी छन एना। द्वादा जहिना लोकबीक अदहा दबमहा गमोननि तहिना प्रुमिनक अगतन मेहो। उना प्रुमिनक अहार बाँटीओमे नहियँ, तछमे द्वाजेमब एक तँ माँगमक शिक्षक छथि दोसब पठरैमे गमानदारी ले रिषय रँुमरँैक अद्भुत गुण मेहो छन्हिहै। द्वादा मभ किछु बतितो शिबीर तेहेन रोगा गेननि जे जनथे-कनौ दराँग होग छन्हि। अपन कानन बाँटीक जमीन, तैपब अपन कमागक रँैलोन नीक घब छन्हिहै, तँ बँैठक सुरिषा छन्हिहै। द्वादा ममए जहिना नर-नर जिनगी ठाठ करैए तहिना आले-खान जकाँ द्वाजेमबो तँ छथि। मंतानक नाँपब मात्र दुठा रँैठा छन्हि। दुनु रँैठा नीक शिक्षा पारि, एकठा मध्य प्रदेश-रिनामप्रब आ दोसब हवियाणामे लोकबी करै छन्हि। लोकबी की करै छन्हि जे अपन-अपन पनीक आ धियो-पुता नऽ नऽ छन्हि। एँठाय प्रश्न उठैत जे जग परिवारक एक समाग हवियाणा समाजक रीच बति, उतुका रातारबामे पानन-पोसन जाएत, दोसब मध्य प्रदेशेक रातारबामे पानन-पोसन जाएत, तेमब बाँटी आ चारिम गाममे। तैठाय केना समारेशे छैत? तछमँ रिस्त तँ आ होगत जे एके परिवारक दु भैयाबीमे एकक कमाग रँैमी आ दोसबकेँ कम भेले परिवारक सुतरो (खान-पान, पठ १ग-लिखाग) मे दूरी रँैनिते अछि। तेतरँै किए? गँैबी रोगमँ ग्रसित एक भाँग खर्क (गनाजक खर्क) दुआरे मरि जाग छथि, जखनि कि दोसब भाँग रँैकमे कपेखा बथने बँै छथि। प्रश्न उठैत अछि, की यएह मिथिलाचनक भैयाबी आकि परिवार आकि समाजक धरोहर



छी जेकवा न२ न२ नाचरै ? मिथिलाचनकेँ डुपरे-सापड़ देखरै भेल । मिथिलाचनक योगदान दुनियाँक दर्शनमे ओ अछि जे श्रेष्ठ मनुखक संग नीक समाजक निर्माणक राँठ देखैले ।

दुनु रैठाँ तँ मनेमबक हठले-हठन छन्हि, जे पनीओ डेट सए किलोमिटर हठि लोकबी करै छथि । ओना मनेमबोकेँ कोनो तबक अन्तर नहिछै छन्हि, किएक तँ पेशीन भेटैते छन्हि, रैकक मुदि अरिते छन्हि, तैमग घरो-भाड़ १ अरिते छन्हि । म्हादा मभ किछु (पाग-कोड़ १) बहिलो रूमि पड़ छन्हि जे कियो ने अछि । रोगी लेन पबिआयिकाक की जकबत होग छै ओ आन रूमि केना सकै । जे अन्तर करै ओ जिनगीक टुकन रैरस अछि । जेकवा एकठाँ एव ले छै, पेटमे जखनि भुख-पियाम जेब मारे छै तखनि ओकरा छोड़ा दोमब रूमि के सकै । ओ ओहने भेल जे कियो केकरो एक म्हादी खुआ मेरो करैत आ कियो ओकरा जिनगी द२ एक म्हादीक जकबते ले बह दैत अछि ।

अमूमि रैबख पाव केना पछाति प्रवना घवाड़ १पव मात राख नमती घब रैना स्त्रोचना रैहिन बह छथि । धानक नावमँ छाड़न । रौमक कोरो-रौमँ ठाँठन, रौचना तीनु खुँ नकड़ कि आ कतका छुरो रौमक ठाँठ घब, जगमे कछु-खबरीक ठाँठक रौच तखताक केराड़ १ शीमोक चौकठ नगन, घबमे रैमि स्त्रोचना रैहिन तिया क२ तकेँ छथि तँ मभमँ नीक अपनाकेँ रूमि मने-मन गनगनाग छथि-

“माग थोँछि थेरै, मिथिलेमे बहरै ।”

तिया क२ अपन परिवार देखै छथि । पितक चाक डेयारीक भाँ अपन-अपन पक्षा मकान रैना अँगना फुँठा अपन-अपन अरै-जागक बमता रैना लेननि, म्हादा हम तँ ओह प्रवना बमता होगत अखनो जाग-अरै छी जे पितक देन चाक डेयारीक समिया बमता छैननि । ने तर्हि रैठरौवा भेल आ ने अखने कियो रैठननि । सरैक समिया बहिलो, (मभ भाँग रूमि छथि) मोनहरी सुख तँ हमरे होग । तेतरेँ कि, माने-मान घबक मवमति करै छी, प्रवनाकेँ नर करै छी । खुँ-खुँ मोम करै छी । नरका नावमँ छाड़ छी, ठाँठ-फड़कक प्रवना लेरो माड़ा नरका लेरो लेरै छी, घब-ओमबक म्हा-कान रैनरै छी । मीठ केँ सेवियरै छी । मभ दिन नरकेँ घबमे बह छी । नर घब खम प्रवान घब खमे मे हम कि रूमरै । मान भविक पछाति ने घब प्रवना छै, जखनि रैखामे छाड़-रैनन मड़ छै तखनि ने प्रवान होग । जहिना तीनु डेयारी अपन-अपन अँगनामे कन गरौले अछि तहिना ने मनेमब अपनो गरौले देले अछि । रौप-दादाक खुँनो गनाव छैननि, मभ कियो पानि पीनाग छोड़ा देननि तँ हमरी कि मड़न-पाकन पानि पीर । तँ कि हमबा कन जकाँ अनको छन्हि । देखै छी जे भवि ठेनु की-कहाँ कनपव नगौले बहै, केना ओहने कनक पानि पीरैमे पड़पन होग छै मे ले जागन । दतमनि कवि क२ कने नग फेक देलौ । रतन माँजि फेक देलौ, एकवा की कहै । अपटिष्ट ले कहै तँ की कहै । जँ कमे जगत अछि तँ ओहीमे खाधि खुनि देरै आ तगमे फेकर । जखनि रैमी भ२ जेते तखनि रौदमे सुखा आगि नगा जवा देरै । मे कवरै ने कवरै आ भवि ठेनु गनदगी नगौले बहर । मन घुमनि, तीनु भाँग पक्षा घब-अँगनाक तीनु दिस रैनौले अछि तगमँ की हमबा गवहेदा अछि, ने अँगनामे माने-माने ठाँठ नगरै पड़ै आ ने साँप-छुटनविक रैन-रैन रैनै । तीनु भाँगक घरेक देरान ने अँगनाक ठाँठ रैनन अछि । बातिओ-रिवाति तँ यह रूमि पड़ै जे चाक दिसमँ जेबक-जेब ओगवरीह रैमन अछि रौचमे चैनमँ भानमो करै छी, थेरौ करै छी आ सुतरौ करै छी । चाककात नही रौचमे भगरती जकाँ बह छी । बाति-रिवाति जे कोरो-चोव ओत तँ कोठारना एँठाम जात आकि थक घबमे ओत । जेना



कियो स्त्रोचना रैहिनके ठौठ पकड़ा आगु दूहे ठेनि देनकनि तहिना घुमकि पिताक भैयाबीस  
अपन चाक भाए-रैहिनपव एनी। अपन रात केकरो किए कहरे, जेकरा कहरे तेकरे केनहा  
छी। हम जमाहिब नान थोड़े छी जे मेननक रिचाव एकरेबमे बुझि जेरे। अपनाई घुमकि  
मन आगु रैठा मामिन भाएपव गेननि। कछ जे मात रैठा बामके एको ले कामके।  
जेकरा दु-दुष्टा धाकड़ा मन-मन प्रतोतु बहते मे अपनमे रतन माँजत, भानम कबत, केहेन  
हेते! आर कि जुगैमरोक ओ उमेव बहले जे मागकिनमे संभावप्रव हाँसमे ममान कानि क२  
जोत। जखनि लोकबी (जुगैमबक लोकबीक पहिलक सम्य) डेल्ले, तखनि परिवार चनिते डेल्ले,  
धियो-प्रतोके पठरे-निथेरे केनक, रैठीक रिखात अपनाई रीमेमे केनक, घरो तेहेन  
रौन्ति केनक जे तीम-चानीम रैवथ ताको पड़ते। तैपव पीनमीनो तेते भेटे डे जे  
केतेके दबमहो ले ओते डे। तखनि जे रौँनी नगन डे मे कोष रोकि देते। जग  
रैठाने राँप ओते कवि क२ बथि देले डे जे तेकरे रैठाके नचले तँ पैठे ले भवते आ  
जिनगी ले चनते। हमही की कवरे? ओकरोमे रैमी उमेव अछि। अपने दूगले जग  
दूअ। दुनियाँमे तँ सदतिकान केतो भुमकम होष डे, केतो माँठि-पानि होष डे, केतो  
मददमे जुआवि अरे डे, केतो ठनका खमि डे, केतो तरा-जहाज खमि डे, केतो रैनगाड़  
उनटे डे तँ केतो धावक नाहे उनटे जाग डे, केकरो रोकले रोकते। तखनि तँ भेन  
जे लोक अपन बछ्छा करैत देमरोक कव। भाएक जिनगीमे दुमन स्त्रोचनाके जेना भक्त  
खुगननि। अपना जुगैमबक चानि-पवकित नीक ले डे। जिनगी भवि बगवधम करैत बहि  
गेन। कछ जे अनकव सगड़। (दियादक जमीनक) किए मोन केनक जे हमरो आ  
दूनेमरोमे दूह हुन्ना हुनी डे। मासुबमे रैठा ले बहले जमीनक लोभ किए केनक। एतरो  
किए ले बुमनक जे मासुव उपरि जाएत। तछमे दूगेव-घाँठे नगक मासुव, माने-मान राँरा  
धाम लोक जागते अछि। एकोबती मनमे रिचाव बहले जे जँ कही गौआँ-घबखा हवागत-  
भोथियागत ओष गाम पहुँचत, बाति-रीच बहए चाहत तँ ओ गौआँ गावि पठा भगा देते  
आकि बहए देत। भाए छी, ओकव काज हुँठ डे, हमव काज हुँठ अछि, तैठाय कहरे ले  
कवरे आकि कएलो हएत। ले एको कोड़ ती हाथ नगले आ ले अपेछा बहले। हमही जेठ  
रैहिन छिँ, हमवा निए जेहने जुगैमव अछि तेहने ले दूनेमरो अछि। दूदा ओ कहियो  
बुमनक जे रैहिन केहेन गकमे जौरे। रँड नीनमा बहए जे समाज ले समाजमे ठेनि  
देनक दूदा भगरान थोड़े रैपाँठ भ२ गेना। भाषयक रैठीक कन्यादान ले क२ मके  
डेल्ले। दूनेमबक आशि अछि ओ तँ भगरान ओकरा रैठीए ले देनथिन, जेकरा देनथिन मे  
तेहेन अछि जे रैठा-रैठीक रिखात केनक आ एक कोव खागले ले देनक। कछ जे  
एहेन कि ओकरे रैठा डे जे बामकिस्वनके किए गावि निथि छिँ पठौनके। थेत-पथावक  
हक-हिम्माक रात डेल्ले तँ ओ समाजे आकि कोठे-कचहरीमे ले हड़ा छापत। तगले एते  
भावी ठगामा किए भेन। अनेरे समाजक लोकके किए जहलो कष्टोनके आ घबक टोकेठो-  
केरौड उखड़ौनके। दूदा हमही की कहरे, भगरान अपन मासुव हव केननि तँए ले, ले तँ  
हमवा कोन मतनरेँ ए गाम-समाजमे बहिए। अपन भवन-पुवन परिवार बहते, रौन-रँछा  
बहते, मनुखक रौनमे हवाएन बहते। दूदा नगले स्त्रोचना रैहिनक मन घुमननि। आँखवपव  
हिमारे जोड़ए नगली जे माएमे कम दिन जौने, आकि रैमी दिन। राँरु तँ कहरे कवथि जे  
नररे रैवथ ठपि गेल्ले दूदा माए तँ मे ले रौजन। ओ तँ एतरे कहनक जे रौदी मान  
दुवागमन भेन बहए। तग हिमारेमे तँ भविमक हुँहो नररेक धत-पत जौरे कएन। ओहू  
राँरु कहना पछाति दु-तीन रैवथ पाछु दूगना। तछ हिमारेमे नररे भाए जाए। दूदा  
अपन केते भेन, मे केना बुमरे। कोलो कि निथन-पठन छी जे हण्डनी देखरे। तछमे



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका 'विदेह' १३९ म अंक ०१ अक्टूबर २०१३ (वर्ष ६ मास ७० अंक १३९)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

घबक चूराँठमे सभठौ पछिना कागज-पतव मझि गेल। तथानि ? मन दौगरेँ नगली। मन पड़ननि जुगेसबक जनम। रिखाहँ तनि-चावि रँवथ पतुनका छी। फ़दा दुनु तँ अन्हते-गाहिम अछि। एकठाँ उप्र अछि, नख-दम रँवथ लोकबी छठेना भेल तेते, माँठि रँथमे लोकबी छुटे छै, तग हिमारेँ सतुबिक पत्-पत् भेल छै। ओकरा जन्मक समय देवरौ बही। तथानि तँ अस्मीँ डुपव भेल। अस्मी मनमे अरिते तँमी हूँननि। यएह छी जिनगी।

॥॥॥



## ३

मामिन भाए जूगैमवपव मँ मामिन भाए मूगैमवपव सुजोचना रँहिनक नजबि रँठननि। दुनु भाँगमे मूगैमव महेदव रँहिनो रँमेए आ जेतए तक रोजावार्के भ२ परै छै मदतिओ करैए। मूदा ओही रोजावार्के की दोख देखै। गाममे बँहत आ नग-पाममे लोकबी करैत तखनि ले मे तेते दुबमे अछि जे मदति की छत। तद्धमे तेहेन घबराती भगरान देनथिन जे मदतिन अपन पबिरावक पाछु तँरौत बँहए। एक तँ दुनु रँकतीक रौत, दोमव पढ़न-निखन पबिराव, केतो जे किछु रौजत आकि केकरो कहते सेहो केहेन छत। थैव जे होइ, एते तँ रँह रोजाव करैए जे एते दिन कहियो कान किछु पठा दग छैनए जगम दीके-कि-मीके कतुना क२ गजब करै छेलौ। मूदा आरँ तँ मे नहियेँ अछि। एकेरैव तेते कपेआ रँकमे जया क२ दग जे मान-मानमे कोनो दिकत नहियेँ बँहए।

छोष्ट रँहिन जे अछि तेकरा अपन तेहेन पबिराव छै जे लेहरो रिमवि गेल। जँ कहियो छैछे कब छै छी सेहो ले होए। केना क२ छोष्ट-रँहिनक मासुव जयएँ। लोक की कहत ? जेठ रँहिन माए दाखिन होए छै।

घब-आँगन रँहावि, चुन्ति-टिनमाव नीपि रँतन-रौमन माँजि, जावनि-काठी ओबिया सुजोचना रँहिन कनपव पानि आनए गेली। रौनछीन भवि उठा जखनि रिदा भेली आकि रौनछीन लेनहि चरुतवापव खसि पड़नी। गूषा बहननि जे गवदनिमँ डुपव चरुतवामँ रौतव बहननि, ले तँ तेहेन खमान खमनथि जे मवि जेतथि। ओना माथक भाग रँचननि मूदा डौँडमँ निछाँ थोआ भाग गेलनि। एक तँ मिमछीक चरुतवा तैपव भवन रौनछीन पानि। खमिमे एकलैव पितियोत भागक नाँउ न२ क२ जोवमँ रँजनी-

“मनोहव, ले मनोहव, कनपव खसि पड़लौ।”

अराज तीनु भैयाबीक आँगन तक पहुँचननि। मूदा एक अराज (पहिन अराज) सुनि जहिना कियो कान ठाढ़ क२ दोमव अराज अकानए नगैए तहिना सभ (भैयाबी पबिराव) दोमव अराजक आनी-रौठ देखए नगना। मूदा दोमव अराज दगमँ पहिले सुजोचना रँहिन अछेत भ२ गेली। डौँडक जोड़क हड्डी छुँष्टि गेलनि। तैपव भवन रौनछीनक छोष्ट सेहो नगन बहन। दोमव अराज ले उठले (सुजोचना रँहिन अराज) मनोहवकेँ शिका भेलनि जे दोहवा क२ अराज किए ले आएन। मे ले तँ केतो अनहुका रौत थोड़ छै। अँगनेमँ घबक पछिना थिड़की थोनि देखननि जे सुजोचना रँहिन कनपव चाकनान चीत खमन अछि। घबेमँ हनना करैत निकनना जे सुजोचना रँहिन कनपव खमन अछि। मनोहवक अराज सुनि तीनु भैयाबीक आँगनमँ धियो-प्रता आ मूनीगशो दौड़ क२ सुजोचना रँहिन नग पहुँचनी। मवदा-मवदी मनोहवछै। मूनीगशो तँ मूनीगशे छै। काजक भाँड़-भाँड़ तँ ले मूदा रिचावक तँ सद्ध छै। बंग-बंगक रिचाव छले नगन। रिचावक तीव तेते तेज जे मनोहवक अपन रँधि हवा गेलनि, रिचारे थकथका गेलनि। तँए ले क२ परथि जे रँहिन जीरित अछि आकि मूगन। देहो-ताथ ले एकोरैव सुगरुंगागन। जहिना रिना रँकक मागकिन रा गाड़ कि ठेकान ले बँह छै जे केमहव जयत तहिना मनोहव भ२ गेल। तद्धमे अपन पनी कहनकनि-

“नाकक माँस देखियो ?”





झुदा तेरीचमे पतियौत भागक पनी, भारो रौजि देनथिन-

“छातीपव तथ द२ क२ देखथुन ।”

दुनु गोष्ठेक दुनु रिचाव सुनि मनोहव अकरका गेना । झुदा भारो रिचावक आदव करैत मनोहव छातीपव तथ देनथिन तँ धक-धकी रूमि पड़ननि । झुदा तेरीच पनी गमहरैत रँजनी-

“कहलौ जे नाकक मोमा देखियो, तँ डाकूँव जकाँ छातीमे आना नगरै नगलौ ?”

पनीक रौतकेँ मनोहव ले ठेकानि सकना । किएक तँ कालि साँममे जथनि पनी आ भारोक रौच सगड़ । भेन बहनि तथनि गायपव ले बहथि, तँए ले रूमन बहनि । दुनु गोष्ठेमे सँ कियो कहलौ जे केने बहनि । ले कहक कारण बहे जे दुनु गोष्ठे अपने फड़ा डुरैक रिचावि नेने बहथि । छातीक धुकधुकी देखि मनोहव नाक नग तथ देनथिन तँ रूमि पड़ननि जे साँस ककि-ककि चले छनि झुदा अथनि उपाग कथी अछि ? मबदा-मबदीमे अमगरे छी, केना उठा क२ ओमारोपव न२ जाएँ ? गाछी - गड़ रौलि आ मवि-मरौरौलि करैकान ले भैसुव-भारोक समरन्ध ले बहै झुदा रैव-रैगवतामे तँ बहते अछि । अमगरे पनीएठा छथि जे मग भीड़ा काज कवती रौकी मभ भारोए छथि । देहमे केना भीड़ती । तद्धमे अममड़ जकाँ छथि । देहो-तथ नरे-तांगव हेतनि । जँ होशिगव बहतिथि तँ घुघुपव उठा नगर्तो । एक गोरे तँ दुनु डेने समहारेमे बहि जेती । अपने जँ धड़ पकड़ै तँ दुनु ठँगकेँ की छैत । तद्धमे जँ छँन हेतनि तँ आरो छँन क२ निछे खसि पड़ननि । डाकूँरो एठाम केना जाएँ । डाकूँव रँजरी जाएँ तेरीच की छैत, तेकव कोन ठेकान । जतिना रौन-रौध रँछाक रूधिक पौती रँन बहै ततिना मनोहवक रूधिक नीचना खपपीमे डुपवा नगि गेननि । कनपव पड़न सुनोचना रँतिन हक-हक करैत । मनोहवकेँ सुमति एननि । कनपव मभकेँ छोड़ा अपन कोठरी आरि मोरौगन निकानि चिन्हवरी डाकूँवकेँ फोन केनथिन । पछाति पतियौत भाएकेँ केनथिन । झुदा जतिना फोन केनथिन ततिना एक-दुग मभ पठुना । पठुते डाकूँव डाँड़ हुनर देखि रँजनी-

“डाँड़ भविसक छँन गेन छनि । चाहे डाँड़ जे छँन गेन छनि । हमव साधसँ रौहवक काज अछि । ओना तत्काल गनजेकुशिन द२ द२ छियनि झुदा तिनका नीक डाकूँव एठाम न२ जेयव ।”

तीनु-चाक भाँग आ डाकूँरो मिनि हाथे-पाथे उठा ओमारक रिछानपव सुनोचना रँतिनकेँ पाड़ा देनकनि । गनजेकुशिन पड़ना पछाति सुनोचना रँतिनकेँ हठवरँ शुक भेननि । झुदा रौनी ले हुँनि । हाथोक गशिवा ले देन होनि । नगने मनोहव जूगेसवकेँ मयाद पठौनथिन । आ मोटि जे किछ छियनि तँ महोदव रँतिन हुँके छियनि । हुँका पीठेपव ले हम मभ बहरी । ले किछ कवथिन तेकव पछातिओ ले दियाद-रौद आकि सब-समाज । समाज तँ मरजे मरुद छी, आग ले अदोसँ होगत आएन अछि जे कियो अमाध रोगक शिकाव तूअ आकि पढ़ए-लिखए छैत तूअ आकि रँष्टी-रँष्टीक रिआह कवए छैत तूअ तँ समाज टंदा (दान) द२ ओग काजक सम्पादन करैत आएन अछि । समदियाक मयाद सुनिते मोमनी मरामीकेँ सुमकारी देनथिन-

“अथनि किए जे रँतिन हेतनि ?”





पनीक रात सुनि जुगैसब हठै-हठमे पड़ा गेला। जिनगीक ठावन जुगैसब जे परिवाराबे मात्र दुःख पवानी बहि गेन छथि। म'गनिक रातकेँ बेकि नै सकना। समदियारकेँ कहनथिन-

“दुःखमे सुमिबन मभ करे। अथनि किए नै रहिन छत। रँजने तँ बरह जे चाबि कड़ा जमीन रँगमानी कइ लेनि। तैकानमे हनेमवा भाव बहे आ अथनि हम भइ गेनि।”

पतिक सह पारि सोमनी गोष्ठी चननी-

“जेतेन जे कबत से तेतेन पौत।”

दुनु पवानी जुगैसबक रात सुनि समदिया आरि मनोहरकेँ कहनथिन। मनोहर भावक रात सुनि मनोहर चोकि गेला। मनोहरसँ कनी तँ पितियोत भेन किने। एकब आगु नै मयाज भेन। उना पितियोत चाबि भाँष अथनो छीने। मेरे (जेते कएन छत) भवि नै कबरे। भगरान नै नै छी जे प्राण दइ देरे। हदा नीक छत जे हनेमबोकेँ कहि दि। जुगैसब भैया मगे नै खँ-पँ छुनि हदा सोनहो आना हनेमब तँ मेरा कबिते छुनि। होन नगा हनेमबकेँ मनोहर कहनथिन-

“हनेमब, रँडकी रहिन कनपव थमि पड़नी, छोष्ट रँहुत छुनि। अथनो अछेते छुनि, से जन्दी आउ ?”

समाचार सुनिते हनेमबक मनमे अनेको प्रश्न उठि कइ ठाठ भइ गेनि। हँ-हँ किछु उत्तर नै दइ सकना। अथनि हम हजारो किनो मँषव हँन छि, जकबति छै डाक्टर एँठाम नइ जागक, तथनि तँ मनोहरपव किए नै छोड़ि दि जे जारे पँचर तारे तक ओ समभावत। हदा राख-पव- राखो दइ रँमर नीक नहिये छत। समजमे केकरो जे कहरो कबरे से हने नै अछि। एतेठौ जिनगीमे समजक कोन उपकार केनि। नगने मनोहरकेँ होनपव कहनथिन।

“मनोहर, अरैक तैयारीमे जुष्ट गेलौ। जेते जन्दी भइ सकत पँच बहन छी। तथनि तँ गाड़-मराड़ कि वस्ता छी, तँ मपष्ट किछु नै कहन जा सकै। तैरीट खर्क दुखारे कोनो काज राधित नै होष।”

मनोहरपव भाव दगते हनेमबक नम्र सँ छुठननि। सँ छुठते मन भेननि जे एकरेव हब मनोहरकेँ कहि जे कनी रँडकी रहिनसँ गप कवा देह। हदा नगने भेननि जे काजक दोड़मे गपो-मप राधक होष छै। छुछे गपपो केने तँ कोनो नाभो नहिये अछि। छोष्टकी रहिनकेँ कहनथिन-

“रँडकी, रँडकी रहिन कनपव थमि पड़नथुन से जहिना हूँ तहिना जन्दी गाम पँच।”

हनेमबक रात सुनि करिता उत्तर देनी-

“भैया, हमवा छुष्टी कर् अछि जे जाएँ। कियो घबमे नै अछि। अमगरे छी। जखने घब छोड़ि जाएँ तखने घब रिवहा जात।”



झोठकी रँहिनक रात सुनि मनेमब सकदम भ२ गेना। हम ठैले छी, जेहो मभ नगमे  
अछि सेहो मभ ठैले बहन अछि। कछु जे अ की भेन। घब रिबहा जाएत। घबक  
टीजे-रौम ले लोक चोवा जेत मभ समाग कमाएते अछि फेब कीनि जेत। म्हादा सहोदब  
रँहिन...

मने-मन मनेमब गामक गब अँठैए नगना। बाँटी-जयनगब गाड़ १ कालि ले छी। आग  
पकड़ि ले छत। सोमहे रिदा भ२ जाएरँ सेहो ले छत। सोमहे तँ लोक ओगठाम ले  
चनि दण्ड जेठाम काजक आशा बँह छै। जेठाम काजक आशा ले बँह छै तेठाम तँ तैयार  
भ२ क२ जाए पड़ छै। रँमक जे कष्ट अछि हुनो गाड़ मँ पतिने ले पँछा मकेए,  
तखनि? पबमुका गाड़ १ निश्चित पकड़ि जेरँ। नीक छत जे दुनु रँकती जाग। मतिना  
रोगी मग मतिना नीक। रौचमे कालि रँकौ काज क२ जेरँ। ओना अरैले ले कहँ म्हादा  
दुनु भाँग (दुनु रँकौ) केँ जानकावी तँ दण्ड दण्डक अछि। अरैले तखनि कहँ ले नीक  
छत जखनि अमगब-दुमगब बँहत। परिवारक मग रिना बिजरेमिनक चनरँ तँ कठिन अछि।  
आहो तँ नीक नहिँ छत जे बसतेमे समानो (टीज-रौम) चोबि भ२ जाए आकि रँछे  
मभकेँ किछु भ२ जाए। नीक छत जे दुनु भाँगकेँ जनतँ द२ दिँ। मोरौगन उठा  
बघुनाथकेँ कहनथिन-

“रौआ, दीदी कनपब थमि पड़नथुन, से सुनेमे आएन अछि जे डाँड़ कज्जी भ२  
गेननि।”

दीदीक नाँ सुनि बघुनाथक मन टोकि गेन। रौजन-

“रँडका रँरुकेँ तारेँ ले कहि देनियनि जे आरि बहन छी। तेरीटक भाव अहाँक।  
आगु भ२ क२ अहाँ जाड, पाग-कोड़ कि टिन्ता ले कवरँ। अथनि आफिममे छी, रँमी  
रात ले छत, डेवापब गेना पछाति फोन कवरँ।”

बघुनाथक रिदाब सुनि मनेमब झोठका रँकौ बमकान्तकेँ मोरौगनपब कहनथिन-

“रौआ, रँडका दीदी कनपब थमि पड़नथुन। मनोहब अथने फोनपब कहनक तेन।”

रौन-रौध बमकान्त रौजन-

“आब, की मभ भेननि?”

मनेमब-

“एतरेँ जानकावी भेठेन अछि। आरो जानकावी होए तखनि फेब कहँह।”

“रँरु, केकरो कियो पवान ले द२ मकेँ छै, म्हादा पवान रँचरँक तँ पवियाम कण  
मकेँ छै। तगले आगु रँरु क२ जाड, पछाति जँ छत तँ हमहुँ आएरँ। ओना  
बघुनाथ-तेयामँ आफिमक पछाति गप कवरँ। गाम-घबमे गनाजक अस्त्रिबा छै तँ  
जकबतिकेँ देखेत कहँ। एठाम तँ गनाजक नीक रँरुमा छुएह।”

“अथनि जानकावी रँमह। जारँ अपना नजबि ले देखि जेरँ तारेँ किछु कहँ नीक  
नहिँ छत। सुनन रात गड़ि-म्हाड़ १ह होए छै, हल्लो रात भारी आ भारी  
रातकेँ हल्लक रँना लोक रँजेए।”



दुनु रैठक रात ढलेसबके रैन भवनकनि। मनमे मजगुती एननि। पबसुका गाड़ १ कोनो तानतिमे छोड़क ले अछि। बहनी पनी, कहर उचित अछि, कहरनि, ढदा नाकब-बुकब त कबरें कवती। थेब, नाकब-बुकब किछु कबथि, हमरो निर्णयक दोड़म चले पड़त। जै नाकब-बुकब कवती तै ढह होडा कहरनि, माए दाखिन रहिन छी, जै दुनियाँमे कियो माए-रौपक मेराके नीक बुनैत हेते तै हमर बुनै छि। पनीक मतनरै अ ले जे पथभ्रष्ट कबए। नीक हएत जे अथले हुनको (पनी) मै गप-सप कए नी। मोरौगन नगा ढलेसब माधनाके कहनथिन-

“पबसु गाम जाएरै जकबी अछि, तै मकुनमे छुट्टीक आरेदन द२ काहि बाँटी चलि आउ ? ”

पतिक रात सुनि माधना रैजनी-

“एहेन कोन तनतनरी भ२ गेल जे एकाएक जागक रिचाव क२ लेनि ? ”

सुजोचना रहिनक मभ समाचार सुना ढलेसब रैजना-

“ओ गठाम जा हम ले मेरा कबरें तै दुनियाँमे रोटावीके बहले के, जे कबते। सुनेमे आएन अछि जे भैयो दुनु पवानी खुशी मनरें छथि जे भले नीक भेल। तेठाम अपन दायित्व ले बुझि, से मन गराही ले दए। थेब जे होड, अथनि एतरे जे काहि चलि आउ। ”

पतिक रिचाव माधनाके दरौरमे बुनि पड़नि। ओ अपन दायित्वक रिचाव ले करैत रैजनी-

“अथनि मकुनमे छुट्टी ले देत। ”

ढलेसब-

“हमरो जिनगी मकुनेमे रीतन, किए ले छुट्टी देत, जै ले देत तै ओहिना चलि आउ। ”

माधना-

“ओहिना केना चलि आउ। ”

ढलेसब-

“बिजागन द२ क२। ढदा गाम चलेक अछि ? ”

जहिना दरौरमे माधना रैजे डेनी तहिना दरौरमे ढलेसब मेनो आरि गेल। दुनु दु दरौर, एकरे कर्तव्यक दरौर दोसबके मशुक दरौर। दुनु दु दिशामे रैहत जागत। भुवडि क२ माधना रैजनी-

“रहिन अहाँक छथि, अहाँ जा क२ देखियन। हम अथनि ले जाएरै ! ”

माधनाक उतव सुनि ढलेसब अमरसियाक अन्तारमे पड़ि गेल। दुनियाँक अन्तरेमे मभ किछु सरहक अन्तवा बहन छै, अन्तवा कि बहन छै जे मभ अपने अन्तवाग पाछु पड़न अछि। एकक पति आ दोसबाक भाए तै हमरी छी। अ रात म२ जे जे नगीछी रहिनक मग अपन अछि ओ पनीक ले छुनै। ढदा की हुनका (पनी) आन बुनन जाए... ?



जिनगीक मंगिनी। मंग मिन जिनगीक दुआकेँ ठेपेक ब्रती। ह्दा काहि एकव रिपवीतो तँ भ२ मकेँ छै। अनेरे मनकेँ रौअरै छी। कियो अपन मन, अपन भार, अपन रिचावक अन्नकुन अपन दुनियाँ गढैए आ ओगमे राँस करैए। जेते करैक शक्ति अछि, ओते करैक अधिकारी छी। पवसु निश्चित गाड़ १ पकड़रँ चाहे रीचमे जेते रिबन राँधा उपस्थित किए ले त्खए।

बाँटीसँ जयनगवक गाड़ १ खुजेक समए पौले छुह रँजे माँसमे छै। तीन रँजिते ह्नेमब रँव-रँव घड़ १ देखथि जे कही गाड़ १ ले छुटि जाए। पनबह मिनट म्ठेशेनक बसूत अछि। चाबि रँजिते भाड़ १-दाबकेँ कहि ह्नेमब रँगक मंग घबमे ताना नगा निकनि गेना। ओना अथनि पौले दु घंठा समए अछि ह्दा मनमे होन्हि जे हो-ले-हो जँ समैक हिमरसँ जखरँ आ रीचमे कोनो राँधा उपस्थित भ२ जाए आ गाड़ १ छुटि जाए तथनि तँ मभ रिचावन चोपठ भ२ जाएत। तथसँ नीक जे जथनि डेरपोव गाड़ १क प्रतिष्ठा क२ बहन छी तथनि किए ले म्ठेशेनपव जा क२ ठिकठे कंठा जेरँ आ प्लेष्ठफार्मेपव रँसमँ जे गाड़ १ पकड़क पूरा रिसराम रँनन बहत।

म्ठेशेन पठूच पुछु-ताछु आहिम दिम ह्नेमब रँदना। ओना एकेठा ट्रेन बाँटी-जयनगवक जे मप्राहमे तीन दिन चलेत तँ समए तँ अपनो रूमने ह्दा मनमे बंग-बंगक रिचाव उठने अपनोपव शिका होगत जे हो-ले-हो गाड़ १क समए-मावणीमे किछु हेब-रँदन रीचमे ले भ२ गेन होग। ओना दिन-वातिक हिमरसँ अप्पनि अकठुरबमे समैक रँदनारँ होग छै ह्दा से आरँ कोनो ठेकान अछि। कहियो समए रँदनि देन जाग छै। तेकव कावणो अछि जे जारँ दुवगामी ट्रेन कम छन तारँ दिन-वातिक सुरिवा रूमन जागत छन ह्दा आरँ तँ से नहियँ बहन। दिन-वाति दौड़-रँना ट्रेनक रीच केतेको जकूनि आ केतेको मावण म्ठेशेन पछा ते अछि, तेरीच समैक की सुरिवा हएत। पुछु-ताछुमे रूमने रीत दोहवा क२ रूमि ह्नेमब प्लेष्ठफार्मक सिमंठीक रँसकीपव रँसि गाय दिम नजबि देननि, ले अन्हावे आ ले गजोते रूमि पड़ननि। मन अन्हाव जकाँ मभ किछु देखथि। देखए नगना चाबि भए-रँहिनक रीच हमझँ छी आ स्रजोचनो रँहिन छथि ह्दा अथनि तकक जे जानकारी अछि तथमे की छी। चाबि छी आकि दु छी? आग जँ दुनु पवानी भैयो रँहिनकेँ रूमि आगु गनाज कवरँ रँदु गेन बहितिथि तँ जे पविस्थिति रँनि गेन अछि से थोड़े बहत। कोनो अस्पतान आकि डाकूबक देख-रेखमे बहितिथि, ह्दा से...

तत्थनात कियो (समागो) कजोँ हाथे अथनि धरिक प्रतिकाव केले बहितिथि तँ जेते चिन्ता अछि से थोड़े बहत। रिमावीक अंतिम सीमा जँ घेवा पाछु दिम समरैत बहत सेहो नहियँ भेन। रिन्न प्रतिकावक रोगेकेँ ले अरमबि भेठेन। जे रिसमँ रिसम रँनेत गेन हएत। ह्दा रिचाव तँ मात्र रिचाव छी। रिचाव केना काजक कप पकड़ि चनत, आ नान्हिंठा थोड़े अछि ह्दा, खेब जे होड, अपन नाप-जोख तँ अपने जिनगीक कसोठीपव ले हएत। भारजोक (भरजोक) आकि रिचावजोक कर्मपव ले निर्भव करै छै। जेठाय छी तेठायक कसोठी आ जेठाय ले छी तेठायक कसोठी एके थोड़े हएत।

प्लेष्ठफार्मक हजाराक भीड़मे ह्नेमब अपनारँ अमगरे देखथि, के केकवा देखत, मभकेँ अपने भरमागव पाव करैक छै। मभकेँ अपन-अपन राँठ छै, अपन-अपन घाँठ छै, अपन-अपन घँठ छै आ अपन-अपन घँठराबि छै। नाथोक भीड़मे प्रेम जहिना केतो दोसवठाय ले अँठि प्रेमीक छद्देमे मँठि जाग छै तहिना ह्नेमबक छद्द स्रजोचना रँहिनक छद्देमे मँठेन। एहलो तँ भ२ मकेँए जे पठूटेसँ पहिले मबि जाए। जँ मएह हएत तँ रोकिओ तँ कियो नहियँ मकेँए। जँ रोकनिहाव बहत तँ रोकनो जा मकेँ छन सेहो तँ



नहिरोँ अछि । तथानि यएत ते हएत जे जे समए आ श्रैम जिनगीमे नगरितोँ से दोसब दिस नागत ।

पन्नेठफार्मपव हन्ना भेन जे गाड़ १ ले जाएत । गंजन खाप भऽ गेलै । हन्ना होगत जेहपठैव यात्री एक दोसबसँ पुछु-ताछु कए नगन । पुछु-ताछु कोँ नष्टक आगु पुछिनिहावक भीड़ नगि गेल । मरैतक एके प्रश्न जे की भेन किए ते गाड़ १ उँत । रिबु रूमन जरार देनिहाव रिगछा-रिगछा एतरे जरार करैत जे कोनो जानकारी ले अछि । ह्दा यात्रीउँ तँ यात्रीए छी, मभरैँ अपन-अपन काज छै । केकरो कम जकरी तँ केकरो रैमी । जेकरा कम जकरी काज छै उँ तँ धीरे-धीरे अस्थिब भेन ह्दा जेकरा कोठ-कचहरी आकि डाकठ-अस्पतानक काज छै, उँ केना अस्थिब हएत । समेपव कचहरी ले पछु हाजिरी ले देले राबैत हएत तहिना अस्पतालोक । समेपव जँ मबीज आ मबीजार्के दरौग ले भेटैते तँ मवत । ह्दा पनवहे मिनठक पछाति हन्नाक कप रँदनन । पन्नेठफार्मक कप-रंग रँदनि रँदवंग ह्थ नगन । केतो चर्च होगत जे गाड़ १ ले चनले भारी लोकमान भेन, तँ केतो चर्च होगत जे तीन दिन काज पछुआ गेल । ह्दा गाड़ १ चलेक समाचार सेहो एके-दुगए पमरैत-पमरैत मोँमे पन्नेठफार्म पछु गेल ।

पनवह मिनठक पछाति छैन म्ठेशेनमे नगि जाएत । यात्री मभ अपन-अपन छुठन काज पुवरेमे नगि गेल । कियो पानिक रौतन किनए नगन तँ कियो रँठखर्चा । तेरीच ह्दामव रैव-रैव घड़ १ देखथि जे केते समए रँचन अछि । आरँ केमहरो उठि कऽ ले जाएरँ । बिजर्शेन ठँकठ बँहत तँ जगतक रिमरामो बँहत सेहो ले अछि । जेनवन रौगीमे अगुआ कऽ ले चठरँ तँ बेड़ामे पछा जाएरँ । जूखान-जहान तँ बेड़ १-बेड़ १ रँवदामो कऽ मकेँ ह्दा सेहो ले हएत । उना खनामी-हली मभ पहिलेसँ माने पाछुएसँ मीठ अजरौवने बँहए आ पाग नऽ नऽ एकमठ्ठा मीठा सेहो रँछैए । अंतमे रूमन जेते । समए तँ समए छी, अथना काज तेहेन सिवचट भऽ जागए जे रैरम कऽ दग छै ।

गाड़ १ अरैक मात्र दम मिनठ समए शेष बहन । रैव-रैव ह्दामव ह्द १ उठा-उठा पाछु दिस तकथि जे गाड़ १ अरैए आकि ले । तेरीच जेरीमे मोरौगनिक घंठी रौजन । जेरीसँ मोरौगन निकानि ह्दामव नम्रव देखननि तँ पनीक नम्रव बहन । नम्रव देखि ले बिभिन्न कवथि आ ले बिजेकूँ । मोरौगनिक घंठी ठँठन करैत ह्दा ह्दामवक मन पनीक मिहारलोकन करैत । एहेन पनीकेँ की रूमन जाए ? ह्दा गाड़ १ अरैक समए अछि, अथनि की कहन जाए । किछु ले । ह्दा तरे-तरे मन तड़ा यागत-तड़ा यागत तुकछि गेलनि । तुकछिते मुरीच दारिँ संमष्टि कात केननि । ह्दा नगले दोसब घंठी रौजि उठन । नम्रव देखि जहिना बेती चट्टा ते याव पनिया जागत तहिना ह्दामवक मन अनायामे पनिया गेलनि । मन चकननि, बघुनाथक नम्रव छी । बिभिन्न कविते बघुनाथ कहनकनि-

“रौरू, गाड़ १ पकछा बहन छी की ले ? ”

रैठोक प्रश्न सुनि ह्दामव पमीज गेल । रिचावए नगना जे एकवा की रूमन जाए ! की रैठोक आदेशे दऽ बहन अछि आकि काजपव सिवचट अछि । ह्दा समेक कमी रिचावकेँ बोकि देनकनि । उठव दैत रँजना-

“रँछा, म्ठेशेनपव गाड़ १ पकछा आएन छी । गाड़ १ अरैएपव अछि । ”

बघुनाथ-





“रौरू, अथनि रैमी रात करैक समए अहाँकेँ ले अछि। म्हादा हम डेरपब छी। पोतो अछि आ प्रतोतु नगेमे अछि।”

पोता-प्रतोतु सुनि म्हादेसबक मन मेमिया उठननि-

“अहो तँ बघुनाथ राजि मकेँ छन जे दुनु रैठेँ आ पनीउ नगेमे छथि। से किए ले राजि राजन जे पोतो आ प्रतोतु अछि। अपन बहिनो अपन किए ले कहनक।”

पतानक पाणि जकाँ जेतने सुनब तेतने शीतन मनमे म्हादेसब कहनथिन-

“रौआ, रैमी गप करैक समए ले अछि। म्हादा धियानमे बथिहः।”

बघुनाथ-

“धियानमे बथरँ आकि धियानमे छथि। अहाँ रून्दीमँ जाड। रौआरो, जमीडीह, रौनी, दबडंगा पहुँच जकर जानकारी देरँ। काज करैएरँना ले हम-अहाँ भेलिँ, तगमे जानि कः कनीउ तिरौठ ले हो। अनजानमे भेलो मकेँ छै, तँ तेकब चिन्ता ले कबरँ। बथि दियो मोराँगन।”

बथि दियो सुनि म्हादेसबक मनमे म्हादक रौआ जकाँ हिनकोब यावनकनि। रँजना-

“रौआ, अथनि पाँच मिनट गाड़ गे देवी अछि तारै एकठा गप आरो कः लेरँ।”

एकठा गप सुनि बघुनाथक मनमे उठन, बुधाएनकेँ जहिना आ थार ले बँह छै जे केते थाएरँ, पियामनकेँ पानिक अँदाज ले बँह छै तहिना भः बहन छनति। जकरबति छनति मँगिक। म्हादा हम तँ रैठेँ भेलियनि, पाछु बहि मँग दः मकेँ छियनि, रँवारँबीमे केना देरँनि। से दगरानी तँ माग छथि, से की केनथिन। म्हादा प्रुछरौ केना कबरँनि जे मागउ मँग छथि आकि ले। राजन-

“रौरू, गाय पहुँचि, से जथनि पहुँची बाति होग आकि दिन, सुजोचना दीदीक मभ किछु रूमि जानकारी देरँ। हमहुँ एँठाम डाकूबक सम्पर्कमे बहरँ। जेना जे जकरबति हेतनि से तहिना हेते। जँ गाममे अँठारैनि ले तूअ तँ तूका नागए कः एँठाम चलि आएरँ। जेते कान अँफिमक काज बहत तेतरेँ कान ले, तेरीच प्रतोतु नगेमे बहतनि, रौकी समेक काज तँ अपनो कः मकेँ छी किले ? अथनि निचेन से गाड़ गे जाड।”

बघुनाथक रात सुनि म्हादेसब रँजना-

“रौआ, अथनि तीन मिनट समए रौकी अछि, अथनिमँ की कबरँ। कियो दोसबागतो बँह तँ गपो कबितो, सेहो ले...।”

म्हादेसबक भवभवागत अराजमे चनकि कः थापड़ा क तीसी जकाँ एकठा रात कुदि निछाँ खसन। उ अछि दोसबागत। जथनि कोनो प्रेमपब बघुनाथ दुनु रैकती माएउ आ पितोमँ गप करैत तँ मपष्ट आभास भः जाग जे दुनु रिचाबक दुबी अछि। म्हादा दुबिउ तँ दुबी छी आगुक दुबी आकि पाछुक दुबी। एक बासुक दुबिमँ रिपवीत दुबी दोरँब होगत। म्हादा दुनियाँक अजीर खेन अछि। रिसरत रेखामँ जेते दुबी दडिनक बहत ओते दुबी उतब भेल मोसम मलि जागए। ओना दुनु रैकती रीए, रीए-सी छी तँ रैचारिक दृष्टिमँ कम-रैमी आँकरँ उचित ले, तेकब दोसरो कावण अछि जे उमरोक हिसारमँ एकवगाहे छथि। तँ अहो



प्रश्न उठै जे हम बेसी दुनियाँ देखनि आकि अहाँ । मूदा एकठा नम्वर प्रश्न तँ अछि जे एके काजक दु रिचावक रीठ परिवारमे उठि कऽ ठाढ़ भऽ जाय । परिवारक तँ दिशा छै जे आगु मूहें रैठत आकि ठमकन बहत आकि पाछु मूहें सबकत । बघुनाथक मन ठमकन नगन । हाथक कोनो आँखक काँटु या अपन । मूदा रिचारो तँ रिचाव छी । कियो रैनदुकक गोलीक आगु रिचाव भंग ले करै छै तँ कियो रूँधक खेन रूमि गेन जकाँ गड़कलै । खेब जे होई, जानै जख आ जानै जता । मूदा एँठाम तँ एक परिवारक प्रश्न अछि जगमे रौरू-माए छथि, दु भाँग दु दियादिनी आ तीनठा रैछा अछि । रैछा तँ अखनि दुधमूहें अछि तँ जकबरी ले अछि । मूदा चाबि गोष्टे तैयो रैछनो आ चाबि रिचाव जारै एकठाम ले रहत तारै मूहें टंगसँ परिवार चेत केन ? जँ परिवारकें दु पहिया गाड़ १ रूमि रिचावै तँ, माए-रौरू भेन । तंगमे दुनु दिशिया, केन परिवार आगु मूहें समबत । तछमे ठनानपब ले चढ़ १ गपब । कोनो काजक मोनहरी रिसराम तारै धरि ले कएन जा सकै जारै तक मनक मोच (रिचाव) राणी होगत कर्म दिस ले रैठत । जखने हाथ बहत घाँपब आ मन बहत सीकपब तखने केहेन रहत... । हाथमे बघुनाथक मोरौंगन आ मूहमेमोक मोरौंगन मनमनागत । रौनी आशि करैत । मूदा रौन कोनो मूहमे ले । मूदा रिवायक पछाति ले रिशाम रहत, रीचमे केन रिशाम रहत । तैरीच ट्रेनक अराज धमकन । कानमे धमक नगिते मूहमेम रैजन-

“रौआ, गाड़ १ आरि गेन, जाग छिख ।”

पिताक रात सुनि बघुनाथ, थापड़ा क थाएन अन्न जकाँ रौजन-

“रौरू, अहाँ आगु रैठा जानकावी दिख, जकबति देखि रिचावै । जूआन-जहान छौड़ १ छी, अखनि ले ट्रेनक धक्का-धक्का रैबदाम कवरै तँ कहिया कवरै । जेहेन स्थिति बहत तंग हिमरसँ काज कवरै । कोनो जकबरी अछि जे परिवारकें मंगे नऽ चली । अपन डेवा अछि, अपना घरमे बहत । काजक तँ नहबि होग छै, दु-चाबि दिन ले मूहें जूआबि जकाँ बैह, मूदा बसे-बसे बसाय जाय किने ।”

रौज बघुनाथ मोरौंगनक मरीच दारि आगुमे बथनक । नगमे ठाढ़ पनी-सुनीता प्रडुनथिन-

“रौरूजी अमगरे गाम जाग छथिन ? एक तँ अपन देहमे मभ रोग बथने छथि, तैपब आपरेशन कएन पेठ छुनहि ?”

कहि छुप भऽ गेली । गम भेन बघुनाथ एक दिस नजरि पितापब दैत तँ दोसर दिस पनी-रैछा आगुमे । मभ तँ अपन भेन तैठाम डेग उठावै अमान ले । मूदा जहिना भुमकम-रौरू जेतकान बैह ओते कान तँ दुनियाँ पकड़ि अन्न करै । भनहि चलि गेल पछाति जे होई । पनीकें हाथक गशाराम रैमरैत बघुनाथ रौजन-

“माएसँ अहाँ गप कर, हम सुनरै ।”

सुनीता-

“माए, सुननि हें जे गाममे दीदीक डाँड टूटि गेलनि मे रौरूजी गेल हें ?”

मूहमेमक आगुक छुन मूह पतोक आगु तँ छुन-छुन, माधनाक मूह रैजनी-

“रहिन छथिन तँ जेत ले ?”



स्वनीता-

“अपनो तँ रिमबयाहे छथि, तथनि जँ अपनो रिमाव पड़ा जाथि, तथनि ? ”

स्वनीताक प्रश्न सुनि सधना मोरांगन बथि देननि । रैब-रैब स्वनीता हेलौ-हेलौ करैत बहनी ह्मदा कोनो उत्तर नै ।

ह्मनेमब तजारो यात्रीक रीच कोणक मीठपब रैसना । जहिना चौड़ १ खेतमे आनो-धान मरे भ२ जागए तहिना ह्मनेमबक कानमे लोकक रात जड़ ाहे रूमागत बहनि । मन ठँगन बहनि अपन यात्रापब । चाबि भ३-रैहिनक रीच जहिना सुनोचना रैहिन तहिना नै हमछँ भेलौ । तहिना नै हुहो (जुगेमब-करिता) दुनु भ३-रैहिन भेलथिन । ह्मदा चाबिमे दुगए किए ? ह्मेब अपना दिस मन घुमननि अपनो तँ मएह छी । जथनि रैब-रैगबतामे पनीउ मंग नै एनी तथनि केकवा कहरै । कियो अपन मनक बाजा छी आकि भिखाड़ १ । पोथीमे छापल होष्टे जकाँ दुनियाँ नै नै अछि । कर्ता रैनि मभ जनम नेल अछि, दिन-राति कर्मो करिते अछि । मँशो मरैहक एके छै ह्मदा भ२ की जाग छै, से केकब के देखत । ह्मदा अपना मंग परिवार आ समाजक जे दायित्व ङुपबमे बँह छै, सेहो तँ अपन केने हेतै ।

॥॥॥



रचकानी मन जेतने बघुनाथक तेहने स्वनीताक । रचकानी ए मानेमे जे ने बघुनाथ  
रैकती-पविरावसँ आगुक दुनियाँ देखने आ ने स्वनीता । तीस रथिक बघुनाथ मकुन-कौलेजसँ  
रैक धरि जहिना देखने तहिना स्वनीतो मकुन-कौलेजसँ पविरावे धरि समष्टाएन । ओना  
स्वनीताक अपन प्ररन गच्छा जे जखनि ग्रेजुएशन केने छी तखनि केतो लोकबी कवरि जग  
कमागसँ पविरावक भवण-पोषण छैत । रैकतीगत तौरपव तँ सामान्य रिचाव भेल, मभरै  
अपन कर्मपव ठाढ़ भऽ जिनगीक जतवा कवक छाति । ह्दा मन्त्र तँ मन्त्र छी जेकरा मन्त्र  
पैदा करैक क्षमता छै । तँए मन्त्र प्रकथक सम्मिलित रूप पविराव छी । जगमे पति-पनीक  
दुनुक रिचावक समारोह केना पछाति ने बम्ता धेने छैवत । ओना जँ दुनु रैकतीक तनर  
एकठाम जोड़न जाएत तँ एक काज भेल एक बग ले तँ कमी-रैमी किछु हेरै कवत ।  
कावणो अछि दु बगक काज । जहिना बघुनाथ स्वनीताक रीच समरन्धक नाँ जेन गेल तहिना  
दुनुक रिचाव अपन-अपन । कावणो छन जे ने बघुनाथ लोकबी करै छन आ ने स्वनीते ।  
जगसँ रिचावमे रान्ह-डेक पड़ैत । जहिना स्वनीता छैक कौलेज छोड़ने तहिना  
बघुनाथो । ओना बघुनाथ दु-तीन मान स्वनीतासँ रैमी उमेवक । स्वनीता कौलेजसँ मात्र रीए  
आनर्म केने जखनि कि बघुनाथ रीएम-सी आनर्मक मग एमरिमे सेहो केने । जहिना बघुनाथक  
पिता-ह्दलेमवक धावणा जे लोकबी दु-टावि मान आगुओ-पाछु होग छै ह्दा रिखाहोक तँ अपन  
समए अछि । अपनो (ह्दलेमवकेँ) तँ रिखाहक पछाति लोकबी भेल तँए हाथक छुड़ ी जेन  
एनाक कोन प्रयोजन । तहिना स्वनीताक पिता मदन मोहनक धावणा । अपनो जिनगीमे  
तहिना भेल जे प्रशामनिक परीक्षा पास केना पछाति ट्रेनिंग पढाएने छन । जे लोकबीक  
पूरी खरम्हा भेल । ह्दा दुनुक अपन-अपन पविराविक स्थितिक कावण बहनि । ह्दलेमवक  
पविराविक स्थिति बहनि जे रिखाहक तीन मान-पान मान पछाति द्वागमन होग छै । तेरीच  
लोकबीक पवियाम कवरि । ह्दा मदन मोहनक पविरावक रिचाव धावा मग रैरहाविक धावा सेहो  
हुँछैकोर छेलनि । अखनि धरि मदन मोहन मोहनहो आना माता-पिताक आदेशमे छन ।  
जगसँ दु धावणा पविरावमे ले जनम लेने छेलनि जे लोकबी होगते रैष-पुतोहकेँ अग्रखा  
लोकबी जेन घर छोड़त । जहिना पतिक अधिकार पनीपव आ पनीक पतिपव तहिना मासु-  
मसुवक सेहो ले पुतोहपव । समेनकुन खेनाग-पीनाग-भानमो-भात एते अमान तँ भाग  
गेल जे घँष्टे भविक काज ले बहन ।

द्वागमनसँ पहिले बघुनाथकेँ रैकमे लोकबी भऽ गेल । स्वनीता मासुवक तामे ।  
रिखाहक पछाति लेहव-मासुवक रीच म्फमण होगते छै । मदन मोहन दुनु पवानीक म्पष्ट  
मोच बहनि जे रिखाहसँ पहिले धरि स्वनीतापव जेते अधिकार छन तगमे कम कवए पड़त ।  
जँ अपना मभ लोकबीक पक्षमे छी आ ओगठामक (मासुव) रिपक्षमे होथि तखनि एहेन काज  
ओगता कऽ कवरौ नीक ले । द्वागमनक पछाति बघुनाथकेँ एक मग तीन घर मोमहा पड़न ।  
पहिल अपन रिनामपुवक डेवा, मभ तवहक सुरिषा । दोसव, बाँटीक डेवा ह्दा पिता पनाममे  
भाड़ ीक घरमे बँह छथि ! तेसव पूरजक गाम जे समेक धक्कासे डोलि-डोलि उखड़ा  
बहन अछि । केना ले उखड़त ? रिखाहमे रिदागबी आ रिदागबीओ केतए तँ जेठाम लोकबी  
करै छी तेठाम ! मासुव तँ पहिले छुटन जे बसे-बसे लेहरो छुटि जागत । तेमग  
कोजगवाक मथान, तिनार्मकान्तिक जड़ ड-रम्व आ मोमवामनीक हिसार केतए । पनीक  
रैरहावसँ पविचित ह्दलेमव अपन भाव ठँरैत बघुनाथकेँ द्वागमनसँ पहिले कहि देने बहनि,



रौंखा नीक हेतह जे दूबागमनक पछाति रिनामेष्वर चलि जगहह । अगिला छुट्टीमे हमहुँ  
एरह ।

रिनामेष्वरक तीन कोठवीक डेवा, अतिविकृत-अतिविकृत । रौंकमँ रेतन उठा बघुनाथ डेवा  
आरि पनगपव कपेखा बथि राखकम रिदा होगत सुनीतारै कहनक-

“जनथे करैक मन ले अछि, केनष्टिगेमे कइ जेजौ । ह्दा चाह पाँर । तँ जारै  
राखकमँ निकले छी तारै अछि चाहक जोगाव कर । ”

जेठाम चाह-चीनक समस्या बहेत तेठाम ले एहेन आदेशि पाँरि पनी अँगोठी-मडौब करै  
छथि, जेठाम मे ले तेठाम तँ काजे उतव होग छै । मएत भेल । बघुनाथ अपन कमागपव  
अपन जिनगी ठाढ़ करैक प्रश्न उठरैत राजन-

“अहाँक एनापव आ पहिन दबमान छी, हम तँ राँहवमँ कमा हाथमे दइ देजौ, आरँ अहाँ  
कछ जे केना चलाएँ ? ”

जिनगीक नक्शा ले रँना सुनीता अपन मनक राँत उगलि देननि-

“हमहुँ केतो लोकबी करितौ । ”

पनीक रिचाव सुनि बघुनाथ गम भइ गेल । ह्दा एठाम तेसब अछि के जे गमी  
छुजत । एठाम तँ प्रश्नक उतव दिख पड़त । एक मंग अलेको प्रश्न बघुनाथक मनमे तड़केत  
मेघ जकाँ आरि गेल । मवदा-मवदी डेवामँ निकलिते डवए नगै छी जे रौंकक मृष्टाह रूमि  
कियो आह्वय ले कइ दिख तहिना आहिम आरि थड़थड़ गत बहे छी जे फेड़-हाड़ ले  
भइ जाए । आ तँ घबक राँहव भेल ह्दा डेरोकै सुबस्ति ले देखे छी । मभ किछु बहिलो  
डरौन जकाँ नगैत बहे । तेठाम मतिनारै अमगरे घबमँ निकनरँ... ?

दोसब राँत उठन जे परिवारक मृतब रँना ले घबक खर्च निधारित हएत ह्दा हुँहो तँ  
घबक काजेपव निर्भव करै । घबक काज यएह ले जे मद्रुचित भोजन, रमूव, घब, रौन-  
रौंछाकै पठमँ नइ कइ रिखाह-दान आ मोक-ह्दमरैत (रँव-रिमाबीमँ नइ कइ सामाजिक  
काज) ममहारे धरि । अपन मनक दोड़मे बघुनाथ परेशान होगत गमकी नधले । ह्दा तँ  
कि सुनीतारै प्रश्न दोहवरेक मन बहननि । मन रौंखागत माता-पितापव चलि गेलनि ।  
पिताजी जिला- मृतबक प्रशामनिक अहमब बहिलो पाँच गोष्टेक परिवारमे आठ दिनपव मो  
ग्राम खमूमीक कनेजी चाहे तीनठा अँडा अले हुना आ मभ मिति थाग छेजौ । ठूँकड़ १-  
ठूँकड़ १ रँना-रँना हिम्मा पुवरे छेजौ । रँछेमँ कहियो मूठ ले रँजजौ हेल । कहियो  
केकरो कोनो चीज ले छुनि । एहले आदति ले अपनो परिवारमे रौन-रँछाकै नगरैक  
अछि । बघुनाथ राजन-

“अपन की रिचाव, म्पष्ट कर ? ”

रिचाव म्पष्ट सुनि सुनीता ठमकली । ठमकेक कावण भेलनि जे जेते पिताजी दबमान  
उठा पाँच गोष्टेक परिवार नीक जकाँ चनरे हुना तेते तँ पतिउ कमाग छथि, मएउ लोकबी  
ले करै हुनी, तथनि लोकबीक की प्रयोजन । परिवारो तँ परिवारे छी । जहिना कोनो  
देशिक किविया-कनाप छै तहिना ले परिवारोक अछि । जे केना पछाति पुर्ति हएत । जँ  
पागएक पाछु दुनु रौंकतीक ममए चलि जाएत तथनि रौन-रँछा आकि परिवार-समाजक रौं  
ममरँव केना रँनत ? अपना एठामक चिन्तनधारा (अध्यात्मिक मोच) मे मए-रौपकै सिबिह  
जनमदते ले ग्वक सेहो मानन गेल अछि । प्रश्न अछि जे पति-पनी मिति रँछाकै जनममँ





तीन मान धरि पौमि-पानि कोनो रिद्यानयमे द२ द० छिई, माए-रौपमँ कोमो दुब । तेठाम माए-रौपक आकर्षण रँछाक प्रति केते दिन ठिकत । तद्धमे जे लोकबीक (काजक) कप रँनि गेन अछि ओ घँठक समए कितारँक पल्लमे ब्रुकएन जागए । एक तँ ओतुना मभकेँ अपन जिनगीक रँकृतीगत काज (शौच फ्रियामँ सुते धरि) अछि तैपब काजक बृहत् भाव मेहो पडि ए बहन अछि । समए गमोले आमदनी तँ रँटि ए जागए । आमदनी अन्नरूप जिनगी रँनरँक गच्छा तँ मनमे अछि । प्रम टौरिम घँठक दिन-बातिमे अपन आकि परिवारक हड-हडलेक केते समए रँछे आ केते दुनियाँक दौड़मे जा बहन अछि । चाहे रँकृतीगत जिनगी तूअ आकि पारिवारिक, ममेब्रुकन बस्ता तँ रँनरँक पडत, ले तँ धारामँ कष्ट किनहुनि चलि जाएँ ।

रँकृतीक निर्माण (मन्त्र रँनरँक) जेन रँकृतीगत कर्मक आरंभिकता पडरँ करै छै जँ मे ले अत तँ मानरीय मरेदनापब छोट पडरँ कबत । तहिना परिवारो-समाजके दुगहे । स्वनीतामँ स्पष्ट प्रष्टेक कारण बघुनाथक मनमे अपन परिवार (माए-रौपक) आरि गेलै । परिवार तँ परिवारक लोककेँ रिसराममे नगए क२ चनत । तखने परिवारक अमन कप मोमहा पडत, जगमे रँकृतीक मद्धात रिकाम होग छै । पनीक मनक रौत रँने दुखारे प्रम उठौनक । द्वा जग परिवारमे रौषिक अन्नशामन अछि तग परिवारक स्वनीता, तँ प्रमपब ठमकि गेली । दूनुक रँकाव रँन । ले बघुनाथ आगु रँटि किछ रँजि पडैत आ ले स्वनीता । द्वा टिड जकाँ रौनक रँदना जोलोमँ तँ काज नहियेँ चनत । नालो तँ स्वग्गा मोनाक छी । एकठा पाकन तिनकोव-नताम थागरना दोमव काँचमँ काँच थागरना । द्वा यक्ष प्रम जेहने बघुनाथक मंग तेहने स्वनीताक मंग मेहो । एक पनगपब रँमन बहिलो जोगिनी जकाँ मो जोजनपब दूनुक मन रौआगत । केना ले रौएते ? आथिब परिवारक नीर गाडक प्रम अछि ले ।

अपन गति गाड १ (ट्रेन) चलि बहन अछि, कोणक मँपब रँमन द्वामेव रिसि गेना, रँकृतीक फोनपब जानकारी देनाग । ओहो थाह ले बहनले जे रँकृतीक ठगिन पाव केनो । मनमे स्रोजाचना रँहिक जिनगी नछेत । आग जँ आने रँहिन जकाँ स्रोजाचाने रँहिन मासुबमे बहिलथि, रँकृती-प्रतोत्, पोता-पोती बहिलथि तँ हमबा बातिकेँ किछ चनए पडैत । द्वा जँ मे ले छुनि तँ की हमदूँ रिवान भ२ जेयनि । एक तँ ओहिना भैया-भोजी नगमे बहिलो हँन छुनि । तेमंग छोट रँहिलो हँन मन अछि तेठाम के देखत रँकृतीकेँ ? तीनमे एक हम भेलिई, द्वा जँ तीनु कनी-कनी क२ भाव उठा नितथि तँ मोठा तँ हन्नक भाग जागत । भले तँ रँकृती कहरेँ केनक जे केकरो कियो पबान ले द० छै मात्र मेरा धरि करै छै । तगमे जानि क२ कोनो थोँट ले होग । रँन रँमन भागउ मकेँ । नजबि पनीपब गेननि-जिनगीक मंगिनीक मकनप लेनिहावि पनी मेहो रिछुदने जकाँ छुथि, जकाँ की छुथि जे जग काजक नीरते जा बहन छी आ ओ मंग ले छुथि तँ की भेल ? द्वा रँकृती तँ पीठपोछ अछि । रँकृतीपब नजबि पडि ते द्वामेव हाँग-हाँग क२ जेरिमँ मोरौगन निकानि धरेननि-

“रौआ, तेज गति जा बहन छी, कोठबीमे तँ गजोत छै द्वा कोठबीक रौतव तेते अन्हाव छै जे किछ देखि ले पडै जे केतए आरि गेलो । मँशेनक ठेकान ले बहन ।”

पिताक रौत स्रनि बघुनाथ राजन-



“कोनो टिन्ता मनमे ले बाखु। हमझ जगने छी, समए-समैपब जानकारी दैत बहरै।  
अथनि कोनो डाकूठब सभसँ सम्पर्क कबरै उचित ले रूमि बहन छी, तँए किनकोसँ  
सम्पर्क ले केनौ हेल।”

“ठीक छै, मोरौगल बखि दहक।”

मोरौगल बखिते सुनीता रँजनी-

“एक तँ अपनो रौरूजी केतेको रोगसँ रोगाएन छथि तैपब रँहिनक अ दशा छन्हि।  
केना कऽ समझाबि पौता?”

सुनीताक रात सुनि बघुनाथ रँजनी-

“दोसब उपए?”

बघुनाथक प्रश्नक उत्तर सुनीताकेँ ले हुँलनि। असमयजममे पड़न सुनीताकेँ देखि बघुनाथ  
रँजनी-

“पिताजी धैरवादक पात्र छथि। जे अपन रोगाएन बृह् शरीरमे अथनो मेरा नेल  
तैयाब छथि। जँ थोड़-थोड़ सभ कियो मग देरनि तँ की ओ पाछु ठठता। किन्न  
ले पाछु ठठता। पाछु ठठथि रा ले, म्हादा जँ पीठपब बहरनि आ काजक मतत देखरै  
तँ हुनका ठठले की हेतनि। जेठाम तक ओ अग्रथा कऽ पहुँचन बहता तेठाम तक  
अपनो आ परिवारोक तँ रँनले बस्ता भेठेत, मात्र ओग दिशामे आगु रँठक अछि।”

बघुनाथक रिटार सुनीताक मनकेँ तेना हौबनकनि जे पाशा रँदनि गेलनि। जहिना  
अथछा तैपब तारैत खनीहा रा बगमचपब पड्डाँत नर्तक, हरीती रा मँचक मँचन रँदनि दोसब  
दाओ रा टालि पकड़ि नर दृश्य मृजन करैए तहिना सुनीता पाशा रँदनेत रँजनी-

“रौरूजीक जे दशा छन्हि ओ माए किए ले रूमि पौननि?”

जहिना निरुत्तर होगत सुनीता पाशा रँदनि नेलनि तहिना सुनीताक प्रश्न बघुनाथकेँ पाशा  
रँदनेले राख्य केनकनि। म्हादा प्रश्न तँ एहेन सघन भऽ गेल जे रिहिया कऽ जड़ा पकड़ि  
कठिन अछि। रिना जड़ा भेठले केतरौ टिकन शिरद किए ले प्रयोग होग म्हादा रमृत  
मृथिति तँ तबएले बहत। एक मग अलोको प्रश्न बघुनाथक मनमे उठन। माएक थिराम जाँघ  
तबक पनीकेँ कहरै उचित हएत? जँ ले कहरनि मेहो तँ उचित नहिसेँ हएत, एक तँ  
ओहना पठन-लिखन रूमनक पनी छथि आन जकाँ जँ चौरैनीओ-अठनी अरूम बहितिथि तँ  
अँठारैमो भऽ सकै छन, मेहो ले अछि। दोसब पति-पनीक रीच नर समरंन मंगीक रूपमे  
ठाठ भेल। जहिना कोनो छोट गाडक पहिन डारि सुथने-ठूठने रा कठने, जिनगी भविक  
दाग रँना दग छै, तेना जँ भेल तँ कहियो मीना तानि सकै छी? जखने मीना तानि किछ  
रँजए नगर आ जँ ओही रातक गोलामँ गोलियोन जाएत तखनि छ्वाती छोटि नगत केतए।  
जखने मीनामे गोला भिड़त तखने दनदना कऽ करेजमे भुव कबरै कबत! रिचित  
मृथितिमे बघुनाथ उनमन। जिनगीमे जखनि आन मँकठ अरै छै तखनि धर्म ओकरा रँचरेए,  
म्हादा जखनि धर्मपब मँकठ ओत तखनि के रँचौत? जेना-जेना बघुनाथ प्रश्नक जड़ा  
तकैत तेना-तेना मँकठ रँठन छनि जागत। अथनि धरि माएक देख-बेथमे बहने, जेकरा  
नकाबरँ अन्नचित हएत म्हादा कोन रूपमे बहने, अ तँ नकाबन ले जा सकैए। रिटारक  
गंभीरता बघुनाथक चेहराकेँ एते मनिन कऽ दैनक जे नगले पनीक प्रति रिसराम रोपरँ



कठिन तँ भऽ गेल । होगतो छै, पोसन रँछा कनीठ मेरो पारि कनशे नशे छदा  
बोगधन, दुधकछु रँछाके कनशे जडा मे मानीके तेनक मानी नऽ कऽ रँसना पछाति आशा  
जगे छै । छदा बघुनाथके मे ले भेल, भेल आ जे जहिना पाँच रँथक पछाति भेटेल मंगी  
रा परिवार जनके रिद्धि-क अंतिम दिनक मिलाप पहिन दिनसँ मिला आगु रँछ-ए । मनमे  
अरिते बघुनाथ राजन-

“भले दुनु पवानी अपनो मभ छी आ पितोजी गाड़ ीमे अमगरे हेता, एक तँ दुबक  
महब तद्धमे अमगव आरो गड़ु गव होग छै । तँ नीक छत जे अही हनकामँ गप  
कक । ”

मसुबसँ छहाँ-छहाँ गप कवरँ सुनीताके अचिंत रूमि पड़नि । अचिंत आ जे मसुब-  
पुतोहक रीच पति होग छथि । भऽ सकै छै किछु एतेन रात रँजा जाय जे उपयुक्त ले  
होग । काबगो अछि । काबगो आ अछि जे एँठाम तम दुनु पवानी छी, भवन-पुवन परिवारक  
रीच छी, छदा ओ तँ गाड़ ीमे अमगरे छथि, तद्धमे बातिक बमता, एक तँ ओहना रौनो-  
माड़मे मुससँ रँस छुटनविह फडा गेल अछि, गाड़ ी तँ महेजे गाड़ ी छी । जँ कही कियो  
रँगे पाव केने होनहि, जगसँ ले किछु थागक रँचन होनहि आ ले रिमावीक गोष्ठी-दराग ।  
ओ तँ रँसमो मथितिमे भऽ सकै छथि । रँगे तँ रँगे भेलथि । पुकष-नारीक रीच एकठा  
ओहना समरन्ध सूत्र अछि जे मवदा-मवदी भारहीन अछि । रिचाव मनमे अरिते सुनीता  
रँजनी-

“नीक छत जे अही मोरांगनक सम्पर्क कक हमछँ सुनरँ ? ”

सुनीताक रात सुनि बघुनाथक मनमे उठन केकव मन कोन रूपमे कोनो चीज रँमे आ  
तँ रँजने रँमरँ । जँ हमही दुनु रँपुत गप कवरँ तँ अपने ठगसँ ले कवरँ । काजक  
दौड़मे जेतए धवि आरि चुकन छी तगसँ आगुएक गप ले कवरँ । तगसँ तिनका की  
भेटेलनि । छदा प्रश्न तँ अछि परिवारिक रिचावक । राजन-

“देथियो, जहिना कोनो गाछ तँ रीजसँ होग छै । एक दिस गाछ निकलि अकाम दिसन  
रँछ-छै आ दोसर दिस सिब निकलि छमबागत पतान दिसन रँछ-छै । पतानो दिस  
ले सिबगव सिब छमवासँ आरो-आरो सिब मभ निकले छै । सिबसँ सिब निकले छै,  
तहिना धवतीक उपरोक गाछमे डाबि मभ निकले छै । सिबगव डाबि गाछेक रूपमे  
रँछ-त निकले छै माष्टिक तबक छमबा उपव आरि शीन रँनि गाछेक रूपमे रँछ-छै  
आ दोसर-तेसर डाबि मेहो निकले छै । तहिना जग परिवारमे अपना मभ छिप  
ओग परिवारक पछिना पीठ ीक मभसँ उपव (आगु) तम भेलि । हमबा पछाति (पाछु)  
एक दिस अहाँ भेलि आ दोसर दिस भाए । अहाँ एँ मानेमे जे हमबा कान्हीक  
भेलि । अहाँसँ उमेरो भाएक कम छै । अहाँ पहिले सकुन धेलि, आगु भऽ दुनियाँक  
मचपव एलि, भाए पाछु आएन । तँ देहा-देही समरन्ध देखए पड़त । हमबा मंग  
पति-पनीक समरन्ध अछि भाएक मंग दिख-भोजागक । तहिना दुनु दियादिनी  
भेली । जहिना छोट दियादिनी रँगे तन्य होग छै तहिना ले छोट भाए रँगे जकाँ  
होग छै । यह ले परिवारिक समरन्ध अछि । तँ अथनि पितोजी जग मथितिमे  
हेता तगसँ हष्ट आन रात पुछुरँ हमबाने उचित ले भेल । जँ कही कान्ति हमरो  
जागक जकवति भऽ गेल तँ भाए (छोट भाए) एँठाम अछँ छनि जाएर । जारँ धवि  
रँवधन बहरँ तारँ तक अछँ बमकान्त एँठाम बहरँ । जथनि-जथनि गप करैक मम



भेठैत तखनि-तखनि अपनो दुनु दियादीनीक परिवारक आ अपनो परिवारक गप-सप कवरै। गप-सप की कवरै जे मभ मिनि रिचाव कवरै जे पितार्जी केतए धवि हमबा मभकेँ पहुँचा देननि आ आगु हम मभ केना रँठरै। ”

एक मंग बघुनाथक मूँहमेँ केतेको प्रश्न उठै गेल। मिथिलागना सुनीता एके धावक अनेको घाँठ देखि रौंखै गेली जे कोन घाँठ पतिन सुनान कएन जाए। तेरीच मोरौंगनक घंटी रौजन। घंटी रँजिते बघुनाथ उठौनक। नगरे बघुनाथकेँ मोरौंगन उठैत सुनि मूँहमेँ अवसरद दैत रँजना-

“रौंखा, जगरे छी। ”

जागन सुनि बघुनाथकेँ किछु जरूर ले भेठै सकन। थथाम केनक। थथाम सुनि मूँहमेँ रँजना-

“रौंखा, कबैर जमीडीत आरि गेल छी। अथनि धवि गाड़ ीमे एको रँव उकासीओ ले भेल हेल। ओना दरौंगओ आ पानिओ बथले छी, जथले थथाम एत तथले थथ लेरै। मूँदा किछु छिँ तँ गाड़ ी छिँ। भुमकमक मम धवती डोनले देह-राथ तँ डोनले करै छै तहिना ले गाड़ ी छी। ”

पिताक रौत सुनि तोष भरेत बघुनाथ रौजन-

“भोव तँ भाँग गेल, हविच जकाँ मेहो भऽ गेल, ओमह केहेन रूमि पड़ै। ”

एक तँ थिड़की-केरौड़ रँन तेपव रिजनीक गजोत तँ कोठवीक भीतव तँ दिने जकाँ रूमि पड़ैत मूँदा गाड़ ीक रौतव धुनि जकाँ बहले अन्वएले। मर्द हरा अरै दुआरे मूँहमेँ थिड़की थोनि रौतव ले देखननि। एक तँ तेज गतिए छैन अछि तेपव जँ अतिना पूरौ-पछियाक गति होए तथनि तँ जारै थिड़ ीक थोनि देखि रँन कवरै तारै थिड़की मूँहक हरा तँ मर्द कए देत। रौतव देखै ओते थगतो नहियै अछि। अथनि तँ अदहामँ कनी आगु रँठरौ हेल, कहुना-कहुना तँ पान-मात घंटीक बमता रँकीए अछि। रँजना-

“रौंखा, दम रँजे तक दवभंगा पहुँच जाएरै। ”

दवभंगा सुनि बघुनाथ रौजन-

“दवभंगामँ केना जेरैंग। सुने छी सकबीमे गाड़ ी ले कके छै, तथनि तँ दवभंगे उतवए पड़त किने ? ”

“हँ, मे तँ दवभंगे उतवए पड़त। मूँदा दोमव उपएओ तँ नहियै देखे छी। जँ आगु रँठा जाएरै तँ मधुरनीमे गाड़ ी ककत। मधुरनीमे नीक दवभंगे उतवै एत। एक तँ मधुरनीमे मरावीक बमता नीक ले अछि, तेते जवकीन अछि जे देह-राथ तोड़ा दए। तेमंग मरावीक मेन नीक नहियै अछि। मूँदा दवभंगामँ मे मभ नीक अछि। रँड ी नागनिक गाड़ ी जागयोनगव जागए आ रिरौलो जागए। एक-आध घंटी पछातिओ जँ गाड़ ी एत तँ गाड़ ीमेँ सकबी चलि जाएरै आ ओठामँ निर्मलीक गाड़ ी पकड़ा लेरै। किछु अछि तँ छैन मभमेँ नीक मरावी अछि। दवभंगेमे नहा-धो मेहो लेरै। आ किछु थगओ लेरै। जँ मे ले एत तँ दरौंगक रँवे छुमि जाएत। ”



पिताक आशिा भवन रात सुनि बघुनाथ मन-मन खुशी भेल । खुशीक कावण ए जे कोनो काज करैले जखनि कियो रिदा होए तखनि काज पहिले कहि दग छै, जे जेते मनम कबरैत से तेते पेरैत । ठट्टा या प्रणाम आ छुट्टिक हाथी, पानिक किनहुबिमे रैमन बहि जाए । द्दा द्दनेमबक काजक रीट कर्मठता मनकैत । जेठाम कर्मठता बहत तही ठामले महनतो बहत । राजन-

“रारुजी आर हमहुँ उछागन छोछि ए दग छी । हबिछो भाए गेल । द्दा दवर्तगा पठ्ठिछे होन कवर । ”

बघुनाथक रात सुनि द्दनेमबक देखक थकान जेना मेठी गेलनि । मेठी ए दुआरे गेलनि जे मन दवर्तगा मुठैशनक राखकमे स निकलि अपनारै दोकानपव खागत रुमि पडननि । मन-मन गोष्ठीक मिनान कव नगना जे तीनु गोष्ठी एकद्वेब खेले चौरैम घंठी निछेन भं ज़ाए । तारै गामो पठ्ठिछे ज़ाए । गाम त गाम छी, ले कियो मेरो कपमे उत त चारि गोरेकै भवि दिनक रोगले दं देरै । तै कि काज छोछि देर । रजना-

“रौआ, आग रुमि पड ए जे मेरो-निरुति ले भेलौ हेल । भनहि मुकुनमं भं गेलौ द्दा परिवारो त छोछे पाठशाला नहियै होए । चारि भाए-रैहिनक रीट सुनोचना रैहिन मभम जेठ छुथि जिनका परिवारमं नं कं मासुव धवि ठोकवा जिनगीकै नीवम रैना देनकनि, जिनका मोमला मृत्यक मिरा किछु शेष ले रैचननि, तैठाम जै अपनारै पुरै छी त एम रैमी जिनगीमे की कवर । जिनगी जै जिनगी पकछि चनत त जिनगी छोछि आरो भेठेरै की कवते । जिनगी भेठेल, मभ किछु भेठेल । ”

पिताक अल्लाद सुनि अल्लादित होगत बघुनाथ राजन-

“रारुजी, मनमे कखनो ले आनर जे खर्च-रैट दुआरे काज ले कं पारि बहन छी । हमहुँ तेयाव भं कं रैको आ डाकुरो मभमं सम्पर्क रैना नग छी । अहुँ दवर्तगा उतबिते जानकारी देर । ”

“रैडरैटि याँ, मोरोगन बथि दहक । ”

भोवक भेड़ एन भौरा जकाँ बघुनाथकै देखि सुनीता अरमबिकै हाथमं ले गमा ठीप देननि-

“रुन्दारनमे आगि नगन कागे ले मिमारै हो । ”

सुनीताक प्रभात रैन सुनि बघुनाथ रिममित भं गेल । जहिना चकरौ परिवार-समाजमं भंगोन शियामा नेल माए-राप मभकै छोछि रैहिनक पीठपोछु भेला तहिना ले पितोजी भेल छुथि । की माएकै उचित भेल जे मंगी ले भेलथिन । हो-ले-हो जै कही बमते पेरे तून्का किछु भं जाग छुनहि त एह भेल अह्मागिनी, जिनगीक आवा । द्दा पिता नेल जे रैनि सकत तगमे पाछु ठरै रिमरामघात भेल । हो-ले-हो जै दीदीक मेरो नेल माएओ रैपाठ हेती त तून्का किन्नह ले नीक कहैनि । जग परिवारमे जनम भेलनि तग परिवार दिम रैमी मुकुन बह छुथि, बहथु । तगमं परिवारमे कोनो राधो त उपस्थित नहियै होए । द्दा जखनि मोमला-मोमली दुनु परिवारक रीट जै कोनो प्रम उठैत अछि आ माए मासुवमं लेहव दिम मुकै छुथि त अल्लादित भेल । दुनु रीट कोनो तबहक अल्लाद-रिमल्लाद आकि मधलाले-





मिठलोन ले होड मे नीक रात ह्मदा जेठाम परिवारक जडा क प्रश्न बहत तेठाम त रिटावए पड़त जे केकवा जडा मे पानि ठावन जाय।

दिनक सर्रा दम रँजे गाड़ १ दबडंगा म्ठेशेन पहुँचन। निर्मली-सकबीक गाड़ १ जकाँ ले जे जहिना चटकान धकम-धुका आ पाकेठमारी होगए तहिना उतरैकान। उना ह्मनेमबक मनमे उठननि जे गाड़ १मँ बघुनाथकेँ फोन क२ दिई ह्मदा हेब मन रँदनि पन्नेठहार्मेक भेननि। गाड़ १मँ उतबिते बघुनाथकेँ कहनथिन-

“रौआ, दबडंगा पहुँच गेलौ। एके घण्टाक तबपठमे रिरौनक गाड़ १ अडि तगमँ सकबी चलि जाएँ। अथनि रैमी रात ले कवरँ। घण्टे भीतब तेयारो होगक अडि।”

रौक आ अहिमक काज रोकि बघुनाथ मने-मन पिताक रूप देखए नगन। एक त रोगमँ रोगाएन तेपब उमेबक रोग मेहो छन्हिहै, ह्मदा काज केहेन करैक राँठ धेने छथि।

जितेन्द्रीक गन्दी जहिना फियाशीन होगत तहिना ह्मनेमबक मेहो बहनि। नगले रँग उठा शौचानय गेला। रँग बथि अपन फिया-कर्म करैत, कौनठबपब दु-ठकरी दैत पन्नेठहार्ममँ निकलि हेठन पहुँचना। अपेठे आ दराँग खेननि। हिमारी दैत, ठँकठ कठा पुनः पन्नेठहार्मपब पहुँच गेला। गाड़ १ नगले बँठ, जा क२ रैमना। रैमिते मँम छोड़ननि। उना सकबीमँ दुनु सुस्त्रिआ अडि। गामो नगे अडि। जे जकबी रूमि पड़त मे पकड़ा लेरँ। भले दिन-देखाब अडि। घबपब जा रमत म्थिति देखेत जेना-जे ह्मत मे कवरँ। गाड़ १ खुजेमँ पतिने गामेक बाधाचरण मेहो धड़हड़ एन उठी डिर्रामे पहुँचन। जगतक सिकेस देखि ह्मनेमब बाधाचरणकेँ कहनथिन-

“बाधाचरण एठाम आरँह।”

अपने ह्मनेमब कनी घुसुकि बाधाचरणकेँ रैमरैत पछननि-

“सुलोचना रँतिनक का म्थिति छन्हि ?”

बाधाचरण-

“मात दिनपब दबडंगामँ जा बहन छी। नीक जकाँ ले रूमन अडि। उड़न्ती समाचाब सुनलौ।”

ह्मनेमब-

“किए मात दिनपब जाग छह ?”

बाधाचरण-

“छोठकी रँतिनकेँ पेठक आपवेशिन भेन हेल।”

आगु रात ले रँठ १ ह्मनेमब रँजना-

“आपवेशिन सहन भेल किने ?”

“हँ हँ, खर्चा त रँहूत भेल। पबमु ठँका कठत। किछ कपेआ-पेमाक भाँजमे जाग छी। हेब काहि घुमरँ।”



बाधाचरणक काजमे झुनेमब अपनो काज देखननि। काज अ देखननि जे जखनि रैनिक आपरेशन भेल तखनि माएओ आएने हेतनि। तैमंग एकठा-दुठा आरो समांग हेरै कबते। अपने ले अनाइ १ बहरं झुना जखनि बाधाचरणो काहि घुमरै कबत तखनि अपने हिमरैम समए (रैनिके दबउंगा नह जागक समए) रैना लेरै। कम-मै-कम एते त हेरै कबत जे समांगे जकाँ बाधाचरण गामेपब मै जा बहन अछि, जै कही समेपब पागक भाँज ले हेते तै कौकूका रैदना पबमुओ घुमि मकेए। किएक तै काजपब काज ठाढ़ अछि। ठाँका पबमु कठैते। पबमु तक पहुँचराक समए तै छुगते। झुना अपना तै मे ले अछि भह मकेए जे आगओ घुमए पछुए। मन-मन झुनेमब हिमरै रैमरै नगना। गन-धन करैत मनमे उपकननि, आर कि कोनो ओ जमाना बहन जे माम-माम, दु-दु मामपब पोमरै अहिमस पाग भेटै छै। आर तै जेतए जाउ तेतए रैकुमा-पैठी मैगे बहत। तेहेन ले एठैम भह गेल अछि जे जखने खगता तखने पुर्ति होए। मार्जम्य करैत झुनेमब रैजना-

“बाधाचरण, अखनि तै तू मगरे अस्पतान घुमेत हेरै ? ”

अपन प्रशंसा सुनि बाधाचरणक मनमे खुशी उपकन। खुशी उपकिते रैडरैड नगन-

“काका, माते दिनमे की मभ ले देखलौ। एकठा नरका दुनियाँ देखलौ। ”

नर दुनियाँ सुनि झुनेमब रैजना-

“की नर दुनियाँ देखनह ? कोनो कि आग अस्पतान रैनन जे नर देखनह । ”

जहिना छुत्तिपब चढन रतनमे निछाँम आँच नगना पछाति रतनक पाणि उरिया नसेत तहिना बाधाचरणक मन उरियागत। झुना पागक चिन्ता मनकेँ दरेत। झूँक सुर्खिम झुनेमब रूमि गेला जे पागक मावि रेचराक मनकेँ मावि बहन छै। गबजु अखनि जेहेन अ अछि तेहेन तै अपनो छी। तै किए ले अन्हा-लैगवाक दोस्ती जकाँ तथ रैठ री। रैजना-

“क्रेते पागक खगता छह बाधाचरण ? ”

ओना लोकक रीच एहेन धावणा रैनि गेल अछि जे दुनियाँ-जहानक मभ रात राजत झुना जेन-देनक रात छिपा कह बथे। झुना खगता एहेन पविमथिति पैदा करै जे छिपारोकेँ देखाव काग दग छै। बाधाचरण राजन-

“काका, हम तै मकोछे झूँह ले खोललौ। किएक तै एक तै अहाँ मेने ओहन समरन्ध ले अछि, दोसब अछू तै रिपतिमे पड़न छी। ”

बाधाचरणक रात सुनि झुनेमब गम भह गेला। हमरा पविमथितिकेँ आँकि राजि बहन अछि जे अछू रिपतिमे छी। रैजना-

“जखनि जिनगी अछि तखनि किछ-ले-किछ आपति-रिपति एरै कबत, तगने लोक घरैड १ जएत तै काज चनते। जानिये कह तै अन्हाव घब माँपे-माँप अछि। झुना ओहीमे ले मपठबिया अपन शिकारो खेनाए। ”

झुनेमबक रात सुनि बाधाचरण थकथका गेल। राजन-

“काका, अखनि धविक मभ काज ममलावि नेने छी मौका-झुमरैत दुखारे मागयक तथमे पान मौ दगयो कह अएन छि। मभ किछ मिला डेठ हजाबक थर्ट आगु अछि। ”



डेबते तज्जब सुनि हनेमब तन्त्रके बुझनि । रँजना-

“अच्छा पागक टिन्ता मनसँ ठेठा जेत ।”

पागक टिन्ता हठैते जेना फनकेत हुनसँ भौवा हुड़हुड़ । क२ निकनि उड़ैए तहिना बाधाचरण रँजना-

“काका, कतए नगलौ जे नरका दुनियाँ देखनि, मे कहे छी । जहिना अमममान घाँक नीना अछि तहिना अमपतानक नीना अछि । एक गोरेकेँ कनेत देखनि प्रहृष्टि तँ कहनक । खेत रैटि क२ रैठोक गनाज कवरैए एलौ, डाकूँव एँठाम पहुँचौ ने केलेँ आनि तब रिच्छेमे तीनठा रँदयाम आएन आ कपेखा छीनि जेनक । हँह तकेत बहि गेलौ । के हमब रात पतियाएत । नगमे थाना, जेबक-जेब जोक तेँठाम एना भेल ।”

हनेमबक मन सुजोचना रँहिनपब ठँगन तँ दोसब रात कानमे मड़ जकाँ बुझि पड़नि । रँजना-

“अनेरे किए रौआग छुह बाधाचरण । ठनका ठनके छै तँ कियो अपना माथापब राख दगए । आ कत२ जे ठूँठन हड्डीक गनाज कोन-कोन डाकूँव करै छथि ?”

हनेमबक रात सुनि बाधाचरण गम भ२ मने-मन रिचाबए नगन । गनाज तँ अमपतानोमे होग छै आ प्रांगरेठेमे होग छै । हदा जहिना अनेब गाएक धबम बखराब होग छै तहिना अमपतानोक गति अछि । कियो हसिक दुखारे काजमे रँगमानी करैए तँ कियो दरौगए रैटि नगए । कियो कमशिनक भाँजमे काज रिगाड़ैए तँ कियो खेनागए रैटि नगए । तबसँ नीक सुरिषा प्रांगरेठेमे छै । हदा ओ तँ पांगरँनाक छी एकक तीन नगै छै । रँजना-

“काका, जेहेन पाग तेहेन गनाज । की कहँ ।”

बाधाचरणक रात सुनि हनेमब तावतम कबए नगना जे की नीक । हदा जहिना रिब हलोक कोना आम गाछसँ धरँ द२ खसि तहिना मनमे खमनि । गनाजो तँ गनाज छी । आ तँ ले जे सए रँथक रूँठक पाछु घब-घवाड़ै रैटि नगा देरँ । जँ मे नगा देरँ तँ अगिना पीढ़ीमे जँ ओहने रोग नगि जाए तखनि की कएन जाएत । हदा अडेते ममपतिए गनाज ले होग एहो तँ नीक नहिखै छएत । खेब जे होड़, जहाँ धरि मँभर छएत तहाँ धरि मनसँ कमेब ले कवरँ । रँजना-

“बाधाचरण, जँ आगए पागक जोगाव भ२ जेतत तँ आगए घुमि जेरँह ?”

उत्सुक होगत बाधाचरण रँजना-

“आगए किए कहे छी, अखने जँ भ२ जाए तँ अगिना ठंशिनमे उतवि दोसब गाड़ै पकड़ि जेरँ । कतना भेल तँ रिमारीक अरमथा भेल किने । कथनि कि भ२ जेतत तेकब कोना ठेकान छै, मे तँ बहनहि प्रतिकाव छएत ।”

बाधाचरणक रिचाब सुनि हनेमबक मनमे उठन, पकड़ एन मंगी छुष्टि जाएत । मे ले तँ गाम पहुँच कम-सँ-कम सुजोचना रँहिनकेँ देखि जेरँ उचित छएत । रँजना-

“गाम गेलसँ परिवारोक हान-दान बुझि जेरँह, नीक हेतत ले । कहे छुह जे मात दिन गाम छोड़ना भ२ गेल ।”



बाधाचर्णाक दहनएन मन आरो दहनि गेल । रौजन-

“है मे नीक छैत । गामक आरो समाचाव सभ रूमि जेरै । एक नपकन थेतो-सभ देखि जेरै ।”

अपन स्रष्टा यागत काज देखि म्हेनसब रैजना-

“अच्छा, एकठा कतह जे गाममे गाड़ १-सराबी समेपव भेटै जाएत किने ?”

“गाड़ १-सराबीक कोन कमी छै । तथनि तँ समए-हममए कनी दरै कि उनाव भागए जाग छै । जथनि थगत छैत तथनि गाड़ १ भेटैत । अहाँकेँ ले ले रूमन अछि, हमवा तँ सभ गाड़ रीना सभसँ चिन्ताए अछि । घरेपव रैसन-रैसन सभ काज भह जेते ।”

मृष्टेनसँ मंगे दुनु गोष्ठे गाम पहुँचना । गाम आरि बाधाचर्णा अपना एँठाम गेल आ म्हेनसब अपना एँठाम एना । आँगन पहुँचते म्हेनसब देखननि जे ओसबक ओछाकनपव स्रजोचना रैहिन पड़न हठवि बहन छथि । सिवमा नग जोठांमे पानि बाखन अछि । मौसमे देह साँपन, खाली म्हेनसँ उघाव छन्हि । दोसबागत कियो ने । मनमे उठननि जे समरन्धो तँ दु बगक होगए । ओना समरन्धक अनेको डाबि-पात छै म्हेनसँ मोठा-मोठा दु बगक तँ अछि । एक ओ भेन जे हन-खनदान, दियाद-रादक होगए आ दोसब उपकावक होगए । अखनका समेमे केकवा एते पनथति छै जे अपन काज छोड़ि दोसबकेँ देखत । सभ अपने पाछु रैहान अछि । ले रौप-माएकेँ रैठा-प्रतोह देखे आ ले रैठा-प्रतोहकेँ रौप-माए । ओना पढ़-निथे-रिखाह-दान धवि रौप-माए रैठाकेँ देखिते अछि भनहि कमाग-थठाग रैबमे छुटि जाए म्हेनसँ ले । जथने रैठा-रैठाक जनम होगए तथने सँ माए अपन स्रन्नवता दुबि होगए दुआरे अपन दुध ले पीआ रैजकआ दुध पिखरै नहोए । तेसंग कनी छेकुक भेना पछाति आरामीय रिद्यानयमे नाँउ निखा भती कवा दगए । जगसँ मोके-हमोके मोसला-मोसली भेटै-याँट होगए । जँ अहिना छैत तँ किए केकरो कोग छिनह । म्हेनसँ उपकावक समरन्ध मे ले होग छै । एक तँ ओहना लोकक आँखिमे पानि बहिते छै जे हग्राँ रैबपव पाँसँ आकि समागसँ ठाढ़ भेन बहए तँ अपन कर्ज चुकाएँ उचित अछि । म्हेनसबक मन दुनु दिससँ ओसवा गेलनि । गाममे ले बहने समाजक रीच किछ कएन ले अछि । दियादो-राद तेहेन जे भोज तँ खागओ नगए म्हेनसँ छुतका-केशे कठरैमे नाकब-बुकब कविते अछि ।

स्रजोचना रैहिन नग म्हेनसब रैसि रैजना-

“रैहिन, रैहिन, हम म्हेनसब । एहो ।”

म्हेनसबक अराज स्रनि स्रजोचना रैहिन आँखि खोनि उठए नगली । पैठसँ डुपबक अंग तँ डोनननि म्हेनसँ डाँड़क निछाँ मगरंगेरौ ले केननि । तहमे हुनि सेहो गेल बहनि । उठैक प्रक्रिया देखि म्हेनसब रैजना-

“ले उठि छैत, स्रतने बह ।”

मनमे एननि जे पहिने पितियोत समाग सभकेँ रैजा प्रुष्टियनि आकि पहिने रैहिनक रात स्रनी । रैहिनक रात उचित रूमि रैजना-

“रैहिन, की सभ भेरौ कएन, आ होगतो अछि ?”



रौठ क नहरिमे जहिना कोनो छुट्टी रा आन जनत नान्हिउठै सहावा पारि खुशीसँ खुशीया जागत तहिना सुजोचना रैहिन अंतिम सहावा पारि खुशी भेली । खुशी एते भेली जे मने दहना गेलनि । रैजनी-

“रैछा, मनेसब, जे भेल से तँ भेरै कएन आ जे होगए से होगए अछि मदा तँ गाड़ क समावन छह पतिने किछु था नैह । चाहो रैना कऽ दैतियऽ से तँ समागे खमन अछि । ”

सिनेहासिकृत रैहिनक रौन सुनि मनेसब रिममित भऽ गेल । मदा अपनो आगु-पाछुक रौठ रैन देखि ठक-ठका गेल । ठकठकागत मन तारैत जिनगी देखि, अंतिम माँस गनेत रैजना-

“रैहिन, जेते दिन सोमरा-सोमरीक दर्शन अछि से तँ नीके कि अखने बहरै कबत, मदा अपनो छुरी कक आ जेते पाव नगत से कवरौ कवरै । ”

दहनागत मन सुजोचना रैहिनक, मनेसबक रौत नीक जकाँ सुनरौ ले केननि । मदा गपक रिवाय देखि रैजनी-

“रैछा, ले एको रैब दब-दियाद देखए अरैए आ ले एको पवानी जुगमब । रैड आशि छन जे रैब-रिपतिमे डोठकी रैहिन-करिता ठाठ हएत । मदा हुनो एको रैब घुमि कऽ ले तकनक । तखनि तँ दुनियाँमे बहन के जेकब मूँह देखि जीरौ कवरै, तगसँ नीक जे भगरान जगहे दधि । ”

सुजोचना रैहिनक ठूँटैत दुनियाँक समरंन देखि मनेसब रैजना-

“दुनियाँमे अहिना मभ दिनसँ होगत एरैए, होगत बहते । तहीने ले लोक नीक कि अखना कऽ नगए । अछछा पितियोतो मभसँ कनी गप कऽ नग छी आ अखने डाकूँब एँठाम नऽ जएरै । ”

कहि मनेसब पितियोतक दवरैजजा दिस रैठना तँ मबदा-मबदी कियो भैँष्ट ले भेलनि । तही रौच बाधाचवण पठून । बाधाचवणकेँ देखिते मनेसब कहनकनि-

“बाधाचवण, कनी समावपुव चनु । अछुक काज बस्तेमे कऽ देरै । समावपुवमे रैहिनकेँ देखा, जेना जे नीक रूमि पडत तेना से कवरै । ”

मनेसबक रौत सुनि बाधाचवण रौजन-

“काका, गाड़ १० रैनाकेँ कहि दग छिउँ जारै ७ ७त तारै गामपव सँ तेयारो भेल अरै छी । ”

गाड़ १ अरिते बाधाचवण जनिजाति मभकेँ चवियरैत कहनकनि-

“चाबि-पाँच गोरे उठा कऽ चढ़ । दियन । ”

मदा रैगनमे ठाठ मनेसबक मनमे बग-रिबगक प्रश्न उठै गेलनि । जँ मूँह खोनि किनको मंग चलेने कहरैनि तँ पक्कक नाँउ नगा रैहना कवरै कवती । तखनि ? रैजना-

“बाधाचवण, पविचवजा करैमे जनिजातिक जकबति हएत, से... ? ”

मनेसबक रौत सुनिते बाधाचवण रौजन-





“काका, टिन्ता किए करे छी। अम्पतानमे नर्म सभ बहते अछि। तगले काज रोकै नैक ले।”

जहिना फ्लेमसब बाँटीसँ अएन बहति तहिना रैग समझले बहनि। तैयाब होएक प्रश्न ले, तैयाबे बहति। हाथे-पाथे तीन-चारि गोष्टे पकड़ि स्त्रोचना रहिनकेँ गाड़िमे चढ़ीनि।

उना समभावपूर्वमे सबकारी अम्पतान अछि आ प्राणरेष्टे गनाज चलिने अछि। सबकारी अम्पतानक कियो माए-बाप अछि नै। भगवाने भरोसे चले। राँठमे फ्लेमसब बाधाचरणकेँ पड़नाथिन-

“सभसँ नैक डाक्टर के छथि ?”

नैक डाक्टर सुनि बाधाचरण अकरका गेन। नैक-अधनाक रिटार तँ ओगठाम होए जेठाम एके-रिभागक अनेको डाक्टर बने फ्लेम जेठाम सभ रिमावीक डाक्टरो हूँ-हूँ ले अछि तैठाम केना नैक-अधना रूमर। तद्धमे रुद्धी रोगक तँ न२ द२ क२ एके गोष्टे छथि तैठाम केना नैक-अधना रूमर। तथनि तँ जएत छथि मएत नैक। ले मामसँ कनहे मामा नैक किने। रोजन-

“काका, एठाम जे बाँटी जकाँ आकि दबभंगा-पठना जकाँ तकले तग तकले काज चनत। एठाम तँ छूँ-छाँक एके गोष्टे गनाज करे छथि, दोसब ठाम जगए क२ की हएत ?”

बाधाचरणक राँत सुनि फ्लेमसब मने-मन रिटारनि तँ दमगब रूमि पड़नि। दोसब उपाए की अछि। तद्धमे कोनो जकबी अछि जे जँ एको गोष्टे छथि तँ अदले छथि। नीको भ२ मके छथि। तथनि तँ एकठा कमी डाक्टरोमे छनहिने, जे जेहो रोग परेथिमे ले अएन ओछ रोगीकेँ पकड़ि घिसिअरे करे छथि। खेब जे होड, अपनो तँ मोनहमी चोपड़ ले छी, नैक कि अधना देखरे करै।

डाक्टर एठाम पछुँते-पछुँते गोसाँग डूमि गेन। छहलेले डाक्टर बमेशो चलि गेन छना। फ्लेम गाड़ि पछुँते पनी जानकारी देनथिन। डाक्टर बमेशो नगले पछुँतना। पछुँते स्त्रोचना रहिनकेँ देखनथिन। देखते रोजना-

“मामसँ, जेते ओजाबक जकबति पड़त तेते ले अछि। नैक हएत जे दबभंगा न२ जेयनि।”

दबभंगा सुनि फ्लेमसब मने-मन ताबतम कबए नगना जे एक सँग केतेको समझा अछि। सोमहे कोनो-कोनो करित चलि जएर आ ओगठाम समझबन ले तूअ तथनि की कवर। दबभंगा गाम थोड़ छी जे नाजो-पडे लोक मदति कबत। अपने अमगब छी, तद्धमे नैक जकाँ रूमन गमन ले अछि। आ तँ बैनराद बाधाचरणकेँ दी जे एतरो मदति केनक। फ्लेम रोगीक जे दशा अछि हुनो बाँटी-पठना न२ जागरना ले अछि। गाड़ि-मरावीक अस्वस्थि अछि। एन-एच रैनले पठनाक तँ भागए गेन फ्लेम बाँटीक तँ नहिसेँ भेन अछि। छोटकी गाड़ि रैना एते दुब जागउसँ चिकिछेरे करत। जँ पठना जागले तैयारो हएत तँ जे समझा (समागक) दबभंगामे अछि से तँ पठनामे हेरे करत। काज भविष्यगत देखि फ्लेमसब बाधाचरणकेँ पड़नाथिन-

“बाधाचरण, हमबा की अमान हएत ?”



झनेमबक प्रम सुनि बाधाचवण पेमो-पेममे पड़ि गेन। जहाँ धरि रँनि पड़न, मंग देनियनि। अपनो रँनिक आपरेशन भेन अछि, तेकरो छोड़ै उचित ले। रिमावी रिमावी छी, कथनि की भ२ जाएत तेकर कोन ठेकान। जँ हम भाव जेरनि, तँ पाव नगाएरँ कठिन भ२ जाएत। एक मंग केवा-दहीक भाव कियो थोड़े उठा सकैए। जथनि उठरै ले कबत तथनि चनत केना। एकठा भेन कमतावाक दही दोमब भेन राँगनबक घोब। ठठकानब जकाँ छीपक झूठ केतो कबीनक झूठ केतो बहत। झूदा तगमँ की! मन्त्र तँ मन्त्र छी, नीक राँत मभकेँ प्रिय नहोँ छै। ओना नीकोक अनेक कप छै, झूदा मे ले, काजक नीक नीक भेन। काजकेँ ठेकनरैत बाधाचवण रँजन-

“काका, ए देहक काजे की छै, जगबनाथ, केदाबनाथ नीक बहियो दूनु दु दिस अछि। एकठा पूरँ अछि आ दोमब पछिम। किमहरो तँ एके दिस जेरै। एकब माने आ ले ले भेन जे दोमब अना भेन। हमरो तँ अहाँ देखिते छी।”

बाधाचवणक राँत सुनि झनेमब मन-मन रिचावए नगना जे जहिना रँनि हमब तहिना तँ अपनो भेन। तछुमे दुनियाँक रौनमे अपन समरंन आ भूमि मेहो अछि। तथनि जहिना सुनोचना रँनिक भाव हमबा उपर अछि तहिना तँ बाधाचवणकेँ छै। तछुमे सुनोचना रँनि अस्मी रँथ पाव क२ गेन छथि जथनि कि बाधाचवणक रँनि हमबि अछि। जे दुनियाँकेँ किछु ले अथनि धरि देखनक तेन। उचित हएत जे बाधाचवणकेँ अपन काज करैले छोड़ि दिई। अथनि धरि रेचवाक जान भबियाएले छै तँए भ२ सकैए जे रँरँस (दोमवाक भाँज) तूअ। मे ले तँ पहिले बाधाचवणकेँ कपेखा द२ देरँ उचित हएत। जथनि ओकरो काज सुटा या जेते तथनि देखेओक अरमबि भेठेत जे आरँ ओ कि करै। काज छोड़ि चलि जाओ आनि काज सुटा या क२ जाओ। कहनो गेन छै दुथमे सुमिवन मभ करे। पछिना जेरँमँ पर्षि निकानि झनेमब छेटी हजाब कपेखा दैत बाधाचवणकेँ पछनथिन-

“काज समहबि जेतत आकि आरो खगता छुह ?”

ओना अथनि धरि तिमरँ बाधाचवणक डेबते हजाबक छन झूदा कोष्ट-कचहरी आ अम्पतानक तिमरँ अनठिया जेन कनी उकड़ू डेरै करै। आएन नम्मीकेँ हाथमँ छोड़रँ नीक ले रँनि बाधाचवण रँजन-

“काका पान मो जँ आगरे क२ द२ देरँ मेहो नीके हएत ?”

बाधाचवणक राँत सुनि झनेमबक मनमे उठननि, खगन लोककेँ अहिना नोए छै। झूदा जथनि पुछि देनि तथनि नहियोँ देरँ नीक नहियोँ हएत। दु हजाब कपेखा पूरा क२ दैत झनेमब रँजना-

“आरँ तँ कोनो उनमन ले ले बहतत ?”

कनियाएन हुन जकाँ झुम्की दैत बाधाचवण रँजन-

“काका, आरँ तँ पवमु अपन रोगीकेँ घर पँछा अछि जेतए बहरँ (बाँटी आनि पंठना) तेतए पँच जाएरँ। बमतोक भाड़ १ भाओ गेन।”

बाधाचवणक राँत सुनि झनेमबकेँ ग्लानि भेननि। ग्लानि आ भेननि जे एकमँ अरि क रम्भ मित्रोना पछाति जहिना थिछ १० आ थीरो रँले झूदा दूनु एक तँ ले भेन। एकमे जहिना नोन-मीठनोन तँ भाओ जाओ।



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका 'विदेह' १३९ म अंक ०१ अक्टूबर २०१३ (वर्ष ६ मास ७० अंक १३९)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

॥॥॥



ॐ

डाकूँब बमेशिक रात सुनि म्हेमब मन-मन गब अँठैरै नगना जे कोनो धवानी सुनोचना रँहिन जे बाँटी पँच जाग छथि तँ मभमँ नीक छैत । बाँटीक गाड़ १ कान्हि आँठ रँजे बातिमे दबभंगामँ अछि । तेरीच भवि दिनक रात बहन । गाड़ १मे रूमन जेते । रँजना-

“डाकूँब माँहँ, बाँटी पँचै तकक ओवियान अहाँ क२ दिअ ।”

म्हेमबक रात सुनि डाकूँब अपन भाव कम होगत देखि रँजना-

“अन्जेकशिन, दराँग द२ द० छियनि कान्हि चाबि रँजे तक एते अँठकि जाड । मभ रँरमथा अछि । भवि दिनक घब भाड १ आ दराँगक थर नागत । तीन दिन तक एक्क उपे बहती, कोनो रँमी तबदूतक जकबति नै पड़त ।”

म्हेमब-

“रँडरँटि याँ । बाधाचवण कौकूको गाड़ १ पकड़ि चलि जाएँ ।”

म्हेमबक रात सुनि बाधाचवण रँजन-

“हमबा की कहे छी ? हम की कहँ ।”

म्हेमब-

“डाकूँबो माँहँक रिचाव सुनियेँ नैनियनि । तथनि तँ कौकूका गाड़ १ पकड़ि धवि तँ मग देह ।”

बाधाचवण-

“अ तूना कान्हि दबभंग जाग० क२ अछि, तेरीच जँ दोमरो काज भ२ जाग० तँ तबजे की । म्हा भवि दिन जे संभावपुवमे रँमन बहँ त०मँ नीक दबभंगे जाएँ छैत । किएक तँ अपनो रोगीकेँ देखि नैरँ आ ओहो काज सम्हावि नैरँ ।”

संभावपुवमे मभ सुनि देखि म्हेमब रँजना-

“ओना तोरो रिचाव कँठैरँना नहियेँ अछि । म्हा जथनि भवि दिनक घबक भाड १ एँठाम नागि जाएत आ मभ सुनिओ अछि तथनि एना क२ जेरँक प्राग्राम रँनारँह जे दबभंगामे बँक जोगाव नै कबए पड़ए ।”

दुनु काजकेँ अँठारै करैत बाधाचवण रँजन-

“कान्हि राबह रँजे तक एँठाम बद्ध तेकब पछाति एतएँ चलि जाएँ । हमँ अपन रोगी देखि डाकूँब माँहँमँ बाय-रिचाव क२ नैरँ आ अँठकेँ गाड़ १मे रँमा देरँ ।”

बाधाचवणक रात म्हेमबकेँ जँचननि । म्हा १ डोनरँत मरीकाव कबिते बहथि आकि धक द२ रँठै-बघुनाथ मन पड़ननि । मन पड़ि ते मोरँगनमँ बघुनाथकेँ कहनथिन-

“बघुनाथ, संभावपुवमे छी । एँठाम दबभंग-पठना आकि बाँटी जकाँ तँ सुनिओ नहियेँ अछि, डाकूँबो माँहँ कहननि जे नीक छैत बाँटी न२ जेयन ।”



झनेमबक रात सुनि बघुनाथ राजन-

“बाँटी रीचक भाव जौं ओ नह नग छथि तौं नीक छत जे बाँटी चलि आरी।”

झनेमब-

“है, मे डाकूरो मोहरे कह छथि जे तीन दिनक रैरमथा कह दग छी। जौं दबलंगा आकि पठना जेरौ कवर तौं अमगरे ह्रीमान भह जाएर, तगम नीक बाँटी छत।”

बघुनाथ-

“जे रैमी नीक हूँ मे कह।”

प्रात भने दोमब चविपठिया गाड़ ी भाड़ ी कह रावत रैजे तीनु गोष्टे दबलंगा रिदा भेना।

दबलंगा पहुँच झनेमब म्ठेशनमे पता नगौननि जे कोन पन्नेरहमपब गाड़ ी अरै छै। भाँज नगा दुष्टा हनी पकड़ा पन्नेरहमपब सुनोचना रैकिनके नह जा सुता देननि। बाधाचवण राजन-

“काका, चाबि-पाँच घण्टा अहाँ ओगबि कह बह, तेरीच हम अपनो समाग मभमँ भैठ केने अरै छी।”

“रैड़रै छी याँ।”

म्ठेशनमँ रिदा होगत बाधाचवण मने-मन हिमारे रैमरै नगल जे माठे-मात रैजे जयनगबमँ गाड़ ी पहुँचै। तेरीच एनो कोनो काज नहियै छत। झदा अपन जे काज अछि, तहमे काहि ठीका कष्टे डेरौ तोड़र। तेरीच जेकब जे हिमारे-राड़ ी छै सेनो मभ हबिया जेर। माठे-मात रैजे गाड़ ी छै माते रैजे पहुँच जाएर। मएह केनक। बाँटीक गाड़ ीमे दुनु भाए-रैकिनके रैमा बाधाचवण राजन-

“काका, ओना बाँटीमे अपन घर अछि, जानो-पठिनाक लोक मभ डेरै कबि, असुरिवा नहियै छत, झदा तेयो कह दग छी जे जौं जकबति हूँ तौं कहर।”

बाधाचवणक रात सुनि झनेमब रिममित भह गेना। मनमे उठननि कोन जन्यक उपकाव कएन छन जे बाधाचवण एते केनक। जे पाग देनिँ मे ले जेर। अह रेटावाके पेट-पानठ ले हेतग आ अपनो मन कहत जे रिमाबीमे मदति केनँ। जिनगी भवि तौं कमेरै केनो, झदा एतेन उपकारो तौं नहियै केने छेनो। ओना अखनो समाजमे एतेन हुमि-हठक थर मभ अछि जे जौं ओकरा रैचा कह (बस्ता रैदनि कह) थर कएन जाय तौं समाजक जे पठ-रैना अछि आकि रैव-रिमाबी अछि ओ शीत-प्रतिशित समाधान भनहि ले होड, झदा रैहूत हद तक तौं हेरै कबत। तेतरेँ कि, समाजो जे दिशा-रिनि चलि बहन अछि हुनो सुदु या कह बस्तापब चलि ओत। जारै समाज आकि रैकती अरना बस्ता डोड़ा नीक बस्ता पकड़ा ले चनत, तारै कन्या केन छत। कन्याक कोन केतरो कि ले रैजौन जाय झदा कोनमँ काज थोडे चनत। नगले मन घुमनि। कोनो जकबी अछि जे बाधाचवणके कोनो उपकाव हममँ भेने हेते। एहलो तौं भह मरै जे ओकर अगबरावे होग। होग कि भेरे कएन ले। जौं किछु उपकाव कएन बहेत तौं मन ले बहित ? जिनगीमे मभ काज मभके मन बहो आकि ले बहो, झदा उचित-उपकाव तौं बहिते छै। रैजना-





“बाधाचरण, तू भगवान रनि आगुमे ठाठ भेनह । जीरनमे कहियो नै रिमबरह ।  
तोहू मनमे बथि जेह जे जै कहियो जकबति तू तै कहिह । शीवीर तै देखिते  
हुत जे अपनो दरौगएव चले छी, एकव माने आ नै नै जे अकाजक भऽ गेल  
छी । ”

झनेमबक रात सुनि बाधाचरण रिमबि गेल जे तीन किलो मिष्टिब अमगरे जागउक अछि ।  
राजत किछु नै । झनेमबक आँखि-पब-आँखि गाढ़ी मोमहे देखेत बहन । गाढ़ीक समए  
होगते मिष्टी देनके । मिष्टी सुनि बाधाचरणक भक्त खूजन । गाढ़ी समबले । बाधाचरण  
पलेष्टहामिपब ठाठ, झनेमब बाँटीक राँठ पकड़नि । पाछु उनीष्ट झनेमब आ आगु देखेत  
बाधाचरण, धीरे-धीरे ओसन होगत गेल ।

बाँटी पछु झनेमब अपना डेवापब पछुटना । एकर दुगए भाड़ दाब मभ आरि-आरि  
सुनोचना रितिनके देखै नगननि । जेते मूह तेते जूति-भाँति । उमापब सुनोचना रितिनके  
सुता अपने झनेमब आगुने मोछै नगना । मृगीगण छी तँ मृगीगणक जकबति अछि । उना  
भाड़ दाब मभ अछिउ मूदा अपना तँ परिवार अछि । हुनका (पनीक) मनमे अनोन-  
रिमलोन बहते हुनकि मूदा की ? परिवारो आ मयाजेमे तँ आ गण अछि जे मयेपब चूना-  
तमाहन जेन मगड । होग छै आ रैब-रैगवतामे मयारो होग छै । दिनक दोख कहि  
लोक ठाँव दग छै । नीक हएत जे गलाजमे जागमँ पहिले परिवार जनमँ बाय-रिचाव कऽ  
नी । उना परिवारमे तीन राँपुत आ तीन मास-पुतोह अछि, मूदा एँठाम नगमे तँ पनीगण  
छथि । मए किलो मिष्टिब कोलो दुब भेल । तेमग गहो हएत जे जै पुतोहके कहरनि तँ  
रैष्टे रैबदएत । तगमँ नीक पनीग भेली । मन तँ मानि गेलनि मूदा नगले प्रम अँहव  
गेलनि जे जै कही पनी मययोग नै कबथि, तथनि ? मूडछेत मन तुड छि गेलनि । एक  
गड्डके रैहति आशि । पनी-माधनाके मोरौगन नगा झनेमब रैजना-

“सुनोचना रितिनके एते नऽ अनियनि । आनठामक (दवभंगा-पठनाक) असुरिषा देखि  
यएत नीक रूमि पडन, तँ अहाँ छुट्टी नऽ कऽ चलि आउ ? ”

झनेमबक रात सुनिते जेना जीएव माधनाके बहनि तहिना रैजनी-

“अनियनि तँ नीक केनो । अम्पतानमे भती कवा दियन । उगठाम मभ रैरमथा  
हुगहे, हमब कोन काज अछि । अपने डेवामे बहरै, एक रैब-दु रैब देखि-सुनि  
एरनि । ”

पनीक रिचाव सुनि झनेमब सकदम भऽ गेल । आगु रैजेक माहम नै भेलनि ।  
मोरौगन बथि रिचाव नगना जे की कएन जाए ? अम्पतानक जेहेन रैरमथा अछि मे  
केकवा नै रूमन छै । कनी-नीक आकि कनी अधना, मरहक एके गति अछि । तथनि तँ  
दवभंगामे रैमी बदी अछि बाँटी-पठनामे कनी तहदव अछि । तँ नीक कहरै मेहो नहिये ।  
रएत डाकूरो आकि नर्मो नै अदनि-रदनि एँठाम-उँठाम करै छथि । दोष की कोलो जगहक  
होग छै, दोष होग छै लोकक चालिक । जेहेन चालि-चनिक लोक बहै तेहने तेकब  
काजो होग छै । मूदा मेहो की उतिना होग छै, होग छै रैरमथाक अन्नकप । रैकती-  
रिसेषक दोख तँ लोक थिमिया कऽ नगा दग छै, मूदा मे थोड़ अछि । निछाँ-हुपब  
एके-बग अछि । कनी कम आकि कनी रैमी, मूदा अछि मरतवि । दूठ होगत, नै हम  
सुनोचना रितिनक नीक गलाज करैनि । मवण-जीवन अपना हाथमे नै अछि, मूदा नीक-  
अधनाक जोगाव तँ अपना हाथमे अछि । हम जे कवरै मे की सुनोचना रितिन नै देखती,



देखरै कबती। कथनो-पानि पीरैक मन हेतनि आ कियो दगरना ले बहतनि, तथनि ओ की बूमती जे नीक मेरा होए। पनीक रिचाव सुनि जेनो, रैठेसँ पुछिनि नि। म्हादा प्रतोहूकेँ अरैले ले कहैनि। पनी जँ बहिति तँ उमेवदारो भेली आ एँठामक मभ किछु बूमनो-सुमन छन्हि। से तँ प्रतोहूकेँ ले छन्हि। बघुनाथकेँ मोरौगन नगा कहनिथि-

“रौआ, रैठिनकेँ बाँटि आनि जेनिथि। एँठाम सुनिधो हएत।”

म्हनेमबक रात सुनि बघुनाथ राजन-

“नीक केनो। पहिले आ भाँज नगा निख जे मभसँ नीक रैरस्था कोन ठाम अछि। पाग भनहि किछु रैसीओ खर्च तूआ म्हादा गलाजमे कमी ले होन्हि।”

बघुनाथक रात सुनि म्हनेमबक मन भवि गेलनि। रैजना-

“रौआ, परिवारमे अहिना मभ एक-दोसबपव आश्रित बँहए, जँ से ले बहत तँ हठा-रिनाग आ मन्त्रथमे अन्तरे की भेल। एक तँ ओतूना रिग रिनेकेक मभ अछि सिरी मन्त्रथक। दोसब मन्त्रथेक योनि ले कर्म योनि छी, रौकी तँ भोगे योनि छी किले। से जँ मन्त्रथमे ले आएत तँ कर्म-योनि आ भोग-योनिमे दूबी की बहन।”

पिताक रात बघुनाथ कान ठाठ क२ सुनेत बहन, सुनेत बहन। राजन किछु ले। म्हादा नगमे पनी-सुनीता जे रैजननि से म्हनेमरो सुनना। राजन डेली-

“माए छथिन की ले से पुछि निखन ?”

बघुनाथ-

“किए ?”

सुनीता-

“नगमे बहने काज अमान हेतनि। एहेन ममेमे जनिजातिकेँ बहरँ जकबी होए छै। मेरा-ठहनसँ न२ क२ पानिक ओरियान धरिक जकबति तँ होएते छै किले ? मबदकेँ तँ कृत्तिकसँ दरौग दोकान आ दरौग दोकानसँ डाकूँव नग करैत-करैत ममए चलि जाए छै।”

रैहाना रैनरैत बघुनाथ पिताकेँ कहनिथि-

“ठारैव कष्ट बहन अछि। कनीकानमे हेल मोरौगन करै छी।”

कहि पनी-सुनीताकेँ कहनिथि-

“अहाँ जे रात कह छी, से उचित हएत। केना पुछरैनि जे माए छथि की ले।”

जग नजबि बघुनाथक प्रश्न छन तग नजबि उत्तर ले दैत नजबि रैदनि सुनीता रैजनी-

“नारीक म्रभारक ठेकान ले अछि। नानहिठा रात न२ क२ लोक मुसक दरौग आ जिनगी मेठा नए। जिनगी घिया-प्रताक खेल ले ले छी जे राथेसँ रैहवि गवदा-माष्टिक घब-अँगना रैना खेला जेरँ आ मन उछैत तँ हाँ-हाँ क२ मेठा चलि देरँ।”

बघुनाथ-



“है मे तै नहिये छी, म्हादा...”

स्वनीता-

“म्हादा-तुदा किछु ले, म्हाह थोनि क२ रौजू। कतियन जे एकठा महीनाक जन्मवति अछि, जै मए ले अरै छथि तै पुतोहू अरैले तैयार छथि। अहाँ रैतिनकेँ गनाजमे न२ चनियन, गाड़ १ पकड़ा आरि बहन छी। भवि दिन गाड़ १मे नगत, गाड़ १ पकड़ा आरि बहन छी।”

भवि दिन गाड़ १मे नागत, पबसुका नाँउ कति दियन जे पहुँचै। पनीक रात सुनि बघुनाथ थकथका गेल। म्हादा धर्म मकठ तै अछि। पनीक रिचाव अकाँठ अछि म्हादा मागक समर्थनमे पितामँ पुछ्छो नहिये छै। तथनि? तथनि कि ए ले दुनुकेँ म्हाह-म्हाह रात होनहि। ले मसुब आन भेनथिन आ ले पुतोहू। पिते-पुनीक समर्थन भेननि, कि ए ले दुनुक रिच्छे रिचाव जानि रिनिमय भ२ जाग। मोरौगन उठा नम्रव मिला बघुनाथ स्वनीताक तथमे देनथिन। स्वनीता-

“रौजूजी, गोड़ नगै छियनि।”

पुतोहूक रौन अकानि म्हाहमेव अमीवराद तै द२ देनथिन म्हादा आगु किछु रैजेमँ पवहेज केननि। पवहेज ए दुआरे केननि जे जे किछु कहै छै तै रैठाकेँ कहै, हिनका कि ए कहैनि। मसुबक कोनो आगुक रात ले सुनि स्वनीता रैजनी-

“जहिना सुनोचना रैतिन हिनक जेठ रैतिन छियनि जे मए दाखिन भेली, तहिना तै हमरो जेठ दीदी भेली? पितक रैतिन तुन्य।”

म्हाहमेव-

“भेली। जै मगड़ १-दन भेले रैरठाविक पक्ष दुँष्टि जाग छै तैयो पुनैतनी पक्ष तै बहलै करै छै। एकवा हम केना नकाबि देरै।”

स्वनीता-

“काहि गाड़ १ पकड़ा आरि बहन छी।”

गाड़ १ पकड़ा आरि बहन छी, स्वनीताक रात सुनि म्हाहमेव थकथका गेल। पुतोहू गुती मासुक किबदानी देखती। हो-ले-हो जै कही पुछ्छि दथि जे मए कि ए ले छथि, तथनि की जेठार देरैनि। म्हादा काजक दौड़ तै ठहन दौड़ होए जे नीक-अधनाक भण्डाहावे कबिते अछि। मन गबमेननि। गबमागते मन रौजि उठननि- मत्तपव पर्दा देरै पाप छी। मन्थक रीच देह-देहीक समर्थन होए छै, मभकेँ अपना लेन करैक अधिकार छै। हुनको छनहि, तै रोकै नीक ले।

मसुबक कोनो रात ले सुनि स्वनीता रैजनी-

“एक तै हिनको रैसी उमेरा भ२ गेलनि तैपव केते बगक रोगो छनहि। एहना तै भ२ मकेँ जे एके-रैव दुनु गोठेकेँ रोग जोव माबनि। तथनि के केकवा देखथिन?”

निकतुव होगत म्हाहमेव उत्साहित भ२ रैजनी-



“कनियाँ, केकरो अधिकारमे दखन देरै उचित ले रूमि पड़ैए तँ हय किछु ले कहै, जे मन तूअ मे करै। अहाँ मरतल छी।”

कहि मोरौगन बधि देनथिन। मोरौगन बथिते सुनीता बघुनाथकेँ कहनी-

“काज-उदेममे कोनो काजकेँ माँपि-तोपि ले बाथी। एम्माँ काज राखित होग छै। जँ काजे राखित भऽ जायत तखनि काज छैत केना।”

बघुनाथ-

“हँ, मे तँ ले छैत ?”

मह पुरैत सुनीता रँजनी-

“कोनूका गाड़ सँ हमरा बाँटी पड़ैत अहाँ घुमि जायँ। अहाँ लोकरी करै छी तँ छुट्टी कठैत, दबयारा कठैत। ह्मदा उगठाय पड़ैत पड़ैत तँ अपन चमयसँ मल किछु देखै। ले जकबति पड़ैत जिगेसा भेल, जकबति पड़ैत बहि कऽ मेरा करैनि।”

प्रतोतूक रात ह्मनेमबक मनकेँ थोड़ा देनकनि। रिचाव नगना जे केना कएन जाय। उना अपन अंगीते (पिमियोत जमाय) डाकूँव छथि। हुनो जले छथि ह्मदा मोमला-मोमली गप-मपप ले भेले चेहवासँ ले उ चिन्ह छथि आ ले हय चिन्ह छथिनि। ह्मदा नगने मनमे दनदु ठाठ भऽ गेलनि। एक मन कहै नगननि जे जखनि समाग डाकूँव छथि तखनि नीक काज किछु ले छैत। दोसब कहनि जे जखनि पागएक खेन-तमाशा अछि तखनि पविछै दऽ कऽ अपन प्रतिष्ठा किछु गमायँ। प्रतिष्ठा तँ प्रतिष्ठा छी। मास-मास जँ भीखो मागि खेती आ जँ रँगी-जमागक दवरँजजापव राखि बहति तँ केना राख पमावती। ह्मदा सम्पति सम्पति छी जे भोज्य पदार्थ छी ह्मदा प्रतिष्ठा सँ छी। खेब जे होड, ह्मनेमब रिचाव केननि जे एक शिक्षकक रूपमे अपन पविछै देरनि। गाय-घबक कोनो चर्च ले करै। मन ठमकनि, उतमह जगनि, काँचि निश्चित डाकूँव एठाय जेरे करै। ह्मदा जागसँ पहिने नीक छैत जे अम्पतानक रँरमा देखि निर्र आ प्रागरेठे मलकेँ देखि नी। आँखि देखनकेँ मनो माले छै। रँर देखनमे एहनो भऽ सकै जे उगतगमे अने भऽ जाय। पड़ैत जँ रूमिओमे उत तँ काजे छुमि गेल बहति।

दोसब दिन सरैरे आठ रँजे ह्मनेमब ठैम्पु पकड़ा अम्पतान पड़ैत। रोगी-राडि मलमे जा-जा देखनि तँ मन मालि गेलनि जे प्रागरेठेमे गलाज कराएँ नीक। उना हड्डी रोगक केते डाकूँव छथि, ह्मदा तगमे नीक के छथि? भाँज नगरैत-नगरैत भाँज नगननि जे डाकूँव शेख नीक छथि। ह्मदा छिया तँ अंगीत। पागरेना सरैरक मरभारो रँदनि जाग छै। केतरो नगक किछु ले तूअ, पाँच प्रतिशत छोड़ा कऽ, मने-मन रँजि देता जे जेते-हवाएन-भोथियाएन बँछै, धवमशाला रूमि। तँ नीक जे जखनि चेहवाक चिन्हाव ले अछि तखनि भरो तँ दूरी रँनरिते छै।

राडि मल देखि-सुनि ह्मनेमब आहिमक आगु पड़ैत केना आकि डाकूँव शेख गाड़ सँ उतवि आहिममे प्रवेश केननि। मयोग नीक रूमि ह्मनेमब कनी अछि पाछुसँ अपनो आहिम पड़ैत। हवमीपव रँरित प्रछनथिन-

“डाकूँव मारै, अम्पतान अछा होगा कि प्रागरेठे ?”



डाकूँब शैख-  
 “अछुछा दोनो है। हमरी लोग ते दोनो जगह है। बही रात देख-बेख की, यहाँ  
 हम स्थाई को कह सकते हैं, दरार नहीं दे सकते हैं। लेकिन प्रांगरेष्ठ कि दुमरी  
 रात है।”

दुनु गोष्ठेक रीच गप-मपू शुकहे भेन छेननि आकि हनेमबक पिसिथोत भातीज माने  
 डाकूँब शैखक माव, आहिम पहुँचना। हनेमबकेँ देखिते गोड़ नागि पृष्ठनकनि-

“काका, केम्ह-केम्ह आएन छी ?”

हनेमब-

“कनपब रैहिन खसि पड़नी मे डाँड़मे कज्जी भ२ गेन छन्हि मएह एनो जे नीक  
 अम्पतान छएत आकि प्रांगरेष्ठ।”

डाकूँब शैखक माव-देरेन्द्रक मंग हनेमबक रीच समरंनधकेँ अकैत डाकूँब शैख हूँत  
 थोनननि-

“अपने पनामुमे कार्यबत छिउँ ?”

हनेमब-

“छेनिउँ। आरि मेरा-निरूत भ२ गेलो।”

जहिना डाकूँब शैख हनेमबक समरंनधमे रूत रात जले छुथि तहिना हनेमब मेरो  
 डाकूँब शैखक समरंनधमे जनिते छुथि। हदा पनबह मान पहिने जे शैखक रिखाह भेननि  
 तगमे हनेमबकेँ ले बहलो छेहवाक चिन्ह-पहचिन्ह ले भेन बहनि। जहिना कोनो पोथी  
 पठक जिज्ञासुकेँ अनायाम कोनो समागक माध्यमसँ एने मनक पोष्टी अपने खुजि जागत  
 तहिना डाकूँब शैखकोकेँ भेन छेननि। होगक कावण भेननि जे रिखाहक पछति मन पड़ा  
 गेननि। मन पड़ा गेननि पनी-पिताक मात्रिक। नीक हन-मुन। अपनासँ दोमब भेन।  
 एँठाम भेन अर्थक कावण। उदाव पिता रैष्टीक सुख-सुखिषा (आर्थिक) देखि अपन रिचाव स्वाव  
 केने बहथि। मन पड़ननि सुनोचना दीदीक जिनगी। केना लेहव-मासुबमे ठोकरोन गेन  
 छुथि। एहेन जगहपब जँ मानरीय रिचाव प्रतिपादित ले कबरँ तँ हमरा रिचावक कोनो मोन  
 ले। मनमे रिचाव हूँतिते डाकूँब शैख, देरेन्द्रकेँ कहनिथि-

“चाचाजी एना अछि, आ अहाँ रैमन गप-मपू करै छी।”

डाकूँब शैखक मनमे एननि जे कि ए ले घरे सुमना दियनि। ले तँ अनेरे हज्जतिमे  
 पड़रँ। जखने ओ (पनी) रूमती जे चाचाजी केँ चिन्हरो ले केननि तखनि आन कान जे  
 तूअ हदा थागक गड़गठ भाग जगएत। तगसँ नीक ले छएत जे अखनि मभ रूमो छुथि  
 जे लोकवीक डूँठीमे छी। यएह ले छएत जे अपन आहिमो सुमना देरँनि, खेता-पीता  
 अवाम कबता। काज तँ काजक पछाति छएत किने। तद्धमे जारै चार-पान कबता तारै  
 एकेष्टी काज अछि, ओकरा हमहुँ पूरा क२ अगिना काजक योजना रँना जेरँ।

डाकूँब शैखक गीवा देरेन्द्र रूमि गेन। रूमि गेन आ जे जँ जेठ बहितिथनि  
 (पनीक जेठ भाय) तखनि जँ कहितिथि, तँ रिचारो कबितो। हदा मे ले अछि। जे मन  
 हुँत से कबरँ। खर्चा तँ दिख पड़नि। राजन-





“काकाजी, अहाँ तारै खराम करू। घर ले ले छिउँ, सबकाबी अम्पतान छिउँ किले, एँठाम की थाएँ की ले थाएँ आ की पीअरँ मे तँ रिचावए पड़त किले।”

भाव उतरैत देखि डाकूँव शैखर रँजना-

“एकठाँ अपवेशिन अछि, तारै हमछँ निचेन भ२ जाग छी। तथनि अगिला काजमे भीड़ जाएँ।”

अम्पतानक आफिमकेँ घर जकाँ देखि हनेमबक मनमे रिसराम जगननि जे ठौब पवतक काज भेल। जँ पनी-माधना नगमे नहियौ बहती तैयो भतीजी (डाकूँव शैखरक पनी) तँ अछि। रँचमेँ देखन अछि जे केहेन रँचिया अछि।

ठैरूनपव मँ उठैत शैखर देरेन्द्रकेँ कहनथिन-

“डेरपव चाटी जीक जानकारी द२ दियन। कति दियन जे दुँ घंठा पछाति आरि बहन छी।”

दुँ घंठा आगत-भागतक पछाति तीनु गोठेक डाकूँव शैखर, हनेमब आ देरेन्द्रक रीच काजक गप-सप उठन। ले डाकूँव शैखर सोम हनेँ हनेमबकेँ किछ कहथिन आ ले हनेमब डाकूँव शैखरकेँ। दुनुक रीच देरेन्द्र, तँ दुनु गोठे देरेन्द्रकेँ मनि रँजथि।

रिचाव करैत हनेमब रँजना-

“जथनि डेरक रिचाव भेल तथनि नीक छत जे पहिले हुनका (रँडकी रँहिनकेँ) न२ अरियनि।”

डाकूँव शैखर चूप-चाप सुनेत बहथि, देरेन्द्र रँजन-

“काकीक मंग दीदीओकेँ डेरपव पहिले पँछा निख। अथनिमँ डाकूँवो माँहँ छुट्टीमे बहता। अपन कनिनिक छुनति तँ रीच-रीचमे देखि उता।”

देरेन्द्रक रीच सुनि हनेमब सकपका गेल। सकपका गेलो जे काकीओ केँ मंगे लेने एरनि। हदा डुमेत मन्थक धैर्य थड़थड़ै करै छै, हदा रँचमे यक्ति हुननि। रँजना-

“रौआ, एहलो रीच लोक रँजैए जे काकीओकेँ मंगे लेने एरनि। अहिना हन-खनदानकेँ रूँमे छतक।”

जमागक सोम अपनारकेँ छिपरेत हनेमब रँजि तँ गेलो हदा मन बिकार नगननि। गनानि अपनपव भेलनि जे पठन-लिखन (पति-पनी) परिवारमे जँ एना हूँए तँ आनक की गति छत। हदा, जहिना एक मुँठ हजारी मुँठकेँ हजम क२ जाग तहिना एक मतोक तँ गप छत। जमाकेँ परोछ होगते देरेन्द्रकेँ कति देरै जे रौआ पनीक मन्थोग ले अछि।

ठैमपु अरिते हनेमब देरेन्द्रकेँ कहनथिन-

“रौआ, तैवामँ नाथ कोन। भानस अपन करै छी। जथनि काज ले बँध तथनि तँ लैमक रँरमथा अछि, भीड़ ले रूँमि पड़ैए हदा, जेना आग देखतक जे भानस कवर आनि रँहिनकेँ डाकूँव एँठाम न२ जाएँ।”

हनेमबक रीच सुनि देरेन्द्र रँजन-



“हुनो घब की आन भेल । कहि देलें छिई, मभ ओते भोजन कवरै ।”

ठैम्पुमँ तीनु गोष्ठे डाकुँव शैखक डेवापव पठ्ठना । डेवापव पठ्ठिजे यम्हनाकेँ नैतव मन पड़ा गेलनि । मन पड़ा गेलनि जे जहिया स्त्रोचना रहिन अपना ओतए बहथि । केते मामोक गीत आ आनो-आन सिखा देलें बहथि । यएत ले स्त्रोचना दीदी छथि । ह्दा रँजनी किछु ले । डाकुँव शैखक स्त्रोचना रहिनकेँ डाकुँवी नजरेँ देखि रिचावननि । रिचावननि आ जे देहक काज-थोष्टि छी, हो-ले-हो अपनतरमे मन पघिन जाए । ह्दा डाकुँव होएक नाते रँजिओ तँ ले सकै छी । रात रँदनि यम्हनाकेँ कहनथिन-

“काज गड़ु गव तँ अछि, ह्दा अमाध ले अछि । तेयो नीक लएत जे दोमरो मरयोगीकेँ रँजा नियनि ।”

डाकुँव शैखक भक्ती यम्हना ले रूमि सकनी । ह्दा नीक होन्ति से तँ मनमे बहरै कवनि । रँजनी-

“एकठा किए जेतक जकबति ह्दुआ आकि बाँटीक मरैतक (ह्दुआ रोगक डाकुँव) जकबति ह्दुआ तँ मभकेँ रँजा निख, ह्दा दीदी एँठामँ अपना पएरे जाथि से तँ देखरै पड़त ।”

माठे छह रँजे माँममे तीनठा डाकुँव रीच स्त्रोचना रहिनक आपरेशेन भेलनि । नीक आपरेशेन ।

तेमवा दिन तहएन-हुतएन बघुनाथ पठ्ठना । डेवा रँन देखि मोरौगतमँ सम्पर्क केनक । ह्दा टीज-रौम तँ बहरै करै । भाड़ दाबक डेवामे मभ समान बथि दुनु पवानी बघुनाथ शैखक डेवापव रिदा भेल ।

डाकुँव शैखक डेवाक रौतव ओमापव बाखन ह्दुआपव रौमन ह्दुआमव रिचाव करैत बहथि जे एक दिस रौँठा-पुतोह, भतीजी-जमाएक रीच छी तँ दोमव दिस अछाँगिनीमँ दुब । यएत छी जिनगी ।

मड़कपव रौँठा-पुतोहकेँ गाड़ मँ उतरिते ह्दुआमव आगु रँठना । ह्दा रिना गोड़ नगले बघुनाथ केना किछु पुछितनि आकि रिनु अमीवराद देलें ह्दुआमरे किछु रँजितथि । ह्दा दुनु दिसमँ दुनु आगु रँठेत गेला । नग अरिते बघुनाथमँ पहिले सुनीता गोड़ नगलनि । गोड़ नगिते ह्दुआमव अमीवराद दैत रँजना-

“कनियाँ, अपने भतीजीक परिवार छी ।”

मड़कपव गाड़ कि अराज सुनि यम्हना मेहो रँहवा गेल छेली । ह्दा परिचित अनठिया देखि ठमकि गेली । नग अरिते ह्दुआमव रँजना-

“बघुनाथ दुनु रँकती छी । रौँखा, यम्हना रहिन छथुन ।”

मौमुका ममए । बघुनाथ डाकुँव शैखमँ पुछलनि-

“डाकुँव माँरै, एँठाम थोड़ अस्त्रिदा अछि । अस्त्रिदा आ अछि जे मध्य प्रदेशक रिनामपुवमे कार्यबत छी । एक तँ लोकबी तहमे रँकक, एँठामँ ओठाम ले नः जा सकै छी ।”

डाकुँव शैख-



“मात दिन एते बरु दियन, तरीमे एते भ२ जेतनि जे दोसब डाकूँव एँठाम ले  
न२ जाए पड़त। दरौंग-दाकूँ चेतनि।”

सएह भेल। मात दिन पछाति सभ कियो- सुजोचना रँतिन, दूजेसब दुनु जेकती बघुनाथ  
आ रँट्टाक संग रिनसम्ब बरौना भेला।

छह मास पछाति रिनसम्ब सँ सभ कियो गाम एला।

॥॥॥

ए कनापब अपन मतब [ggaj\\_endr\\_a@videha.com](mailto:ggaj_endr_a@videha.com) पब पठाउ।

बिदेह नूतन अंक गद्य-पद्य भावती

१. मोहनदास (दीर्घकथा): लेखक: उदय प्रकाश (मूल हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुराद रिनित  
उपेन)

मोहनदास (मैथिली-देरनागरी)

मोहनदास (मैथिली-मिथिलासूत्र)

मोहनदास (मैथिली-ब्रेल)

२. छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक सुशीला सा द्वारा मैथिली अनुराद

छिन्नमस्ता

३. कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुराद श्रीमती कपा धीक आ श्री धीरेन्द्र  
प्रेमर्षि)

भगता रैङ्क देशे-भ्रम

४. तुकाबाम बामा शैष्टिक कौकशी उपन्यासक मैथिली अनुराद डॉ. शिबु कुमार सिंह द्वारा  
पाथरो

रौनारा धते



## रैछा लोकनि द्वारा स्वरणीय श्लोक

१. प्रातः काल ब्रह्महृत् (सूर्योदयक एक घण्टा पहिने) सरप्रथम अपन दू हाथ देखरौक चाही, आ ग श्लोक रैजरौक चाही ।

कवाथे रसते लक्ष्मीः कवमश्च सबस्रती ।

कवमुने स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ लक्ष्मी रसित छथि, कवक मध्यामे सबस्रती, कवक मूत्रमे ब्रह्मा स्थित छथि ।  
भोवमे ताहि द्वारे कवक दर्शन कवरौक थीक ।

२. संध्या काल दीप लेसरौक काल-

दीपमुने स्थितो ब्रह्मा दीपमश्च जनार्दनः ।

दीपाथे शिर्षवः प्राकतः संध्याज्यातिर्नमोऽस्तुते ॥

दीपक मूत्र भागमे ब्रह्मा, दीपक मध्याभागमे जनार्दन (रिछु) आह दीपक अग्र भागमे  
शिर्षव स्थित छथि । हे संध्याज्याति । अहाँकेँ नमस्कार ।

३. स्वतरौक काल-

वामं स्कन्दं हनुमन्तुं रैनतेर्यं वृक्षोदवम् ।

शियने यः स्मरेन्नितं दुःस्वप्नस्तु नश्यति ॥

जे सभ दिन स्वतरासँ पहिने वाम, क्रमावस्त्रामी, हनुमान्, गरुड आह तीमक स्मरण करैत  
छथि, हुनकर दुःस्वप्न नष्ट भऽ जागत छन्हि ।

४. नहरौक समय-

गङ्गा च यद्गने चैर गोदारवि सबस्रती ।

नर्मदे सिङ्गु कारेवि जनेऽस्मिन् सन्निधिं करु ॥

हे गंगा, यद्गना, गोदारवी, सबस्रती, नर्मदा, सिङ्गु आह कारेवी पाव । एहि जनमे  
अपन सान्निध्य दिथ ।



३. उतर्ब यस्मैन्द्रस्य हिमाद्रश्चर दक्षिणम् ।

रर्षी तत् भावतं नाम भावती यत्र सन्ततिः ॥

सम्पदक उतर्बमे आह हिमावयक दक्षिणमे भावत अस्ति आह उतुका सन्तति भावती  
कहरोत छथि ।

३. अहर्णा द्रौपदी सीता तारा मल्हादवी तथा ।

पथर्क ना स्मरेन्निर् महापातकनाशिकम् ॥

जे सभ दिन अहर्णा, द्रौपदी, सीता, तारा आह मल्हादवी, एहि पाँच साप्ती-स्त्रीक स्मरण  
करैत छथि, हुनकर सभ पाप नष्ट भऽ जागत छन्हि ।

१. अग्निथोमा रैविरासो हनुमाश्च रिभीषणः ।

क्षपः पञ्चवामश्च संस्तुते चिबङ्गीरिनः ॥

अग्निथोमा, रैवि, रास, हनुमान्, रिभीषण, क्षपाचार्य आह पञ्चवाम- आ सात ठाँ चिबङ्गीरी  
कहरोत छथि ।

४. साते भवतु स्मृतीता देरी शिखर रासिनी

उत्थेन तपसा तर्ह्या यथा पशुपतिः पतिः ।

सिद्धिः साक्षा सतामस्तु प्रसादान्तुश्च धूर्जटेः

जाह्नरीफेननेथेर यनूषि शिनिः कना ॥

६. रौद्रोऽहं जगदानन्द न मे रौद्रा सबस्रती ।

अपूर्णे पंचमे रर्षे रर्ष्यामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दूरस्थित मर्षेष्कन यजुर्देद अघ्याय २२, मंत्र २२)

आ अँह्नितस्य प्रजापतिवृद्धिः । निभोकता देवताः । स्वबाहुकृतिश्रुतः । षड्जः  
स्ववः ॥

आ अँह्नन् अँह्नो अँह्नरचसी जायतामा बाष्पे बाजुन्यः श्वरेऽगमरातिरापी महावथो  
जायता दोग्ध्री धेनुरोतान्द्रानाश्वः सन्तिः पृथ्वीर्योरा जिष्णु वथेष्ठाः सन्धेयो हाराश्व





यजमानश्च रीरो जायता निकामे-निकामे नः पुर्जन्ता रर्यत्तु फनरता न२ओषधयः पचात्रा  
योगेष्कमो नः' कम्पताम् ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थः सिद्धयः सत्तु पुर्णाः सत्तु मनोवथाः । शिदृणां रूहिनाशोऽस्तु मित्राणां दयस्तु ।

ॐ दीर्घार्तिर । ॐ सौभाग्यरती भव ।

हे भगवान् । अपन देशीमे सुयोगा आ सरिद्ध रिद्वार्थी उपेन होथि, आ श्रुके नशि  
कएनिहाव सैनिक उपेन होथि । अपन देशीक गाय खुर दुध दय रानी, रवद भाव रहन  
कबएमे सम्म होथि आ घोड़ । ह्वित कपे दौगय रना होए । स्त्रीगण नगबक नेत्र  
कबरामे सम्म होथि आ हारक सभामे ओजपूर्ण भाषण देरयरना आ नेत्र देरामे  
सम्म होथि । अपन देशीमे जखन आरथक होय रर्या होए आ ओषधिक-रूँटी सरिदा  
पविपक होएत बहए । एर एमे सभ तबहे हमरा सभक कर्णा होए । शिदृक  
रूँहिक नशि होए आ मित्रक उदय होए ॥

मन्त्रार्थे कोन रद्वक गछा कबरक चाली तकव रर्न एहि मन्त्रमे कएन गेल अछि ।

एहिमे राचकवृत्तापमानङ्काव अछि ।

अन्वय-

ब्रह्मन् - रिद्व आदि ग्वसँ पविपूर्ण ब्रह्म

वाष्ट्रे - देशीमे

ब्रह्मरुचि-ब्रह्म रिद्वक तेजसँ हकत

आ जायता- उपेन होए

वाज्ज्यः - वाजा

शुरे रीना डव रना

ओषध्या - रीण चनेरामे निपुण

अतिरानी-शिदृके तावण दय रना

महावथा-पेघ बथ रना रीव



दोग्ध्री-कामना(दूध पूर्ण कवण रानी)

धेनुर्बोतान्द्रान्धः धेनु-गौ रा राणी र्बोतान्द्रा- पैघ रैवद न्धः -आन्धः -ब्रवित

सन्धिः -घोड १

प्रवर्धिर्योरा- प्रवर्ध- रारहावके पावण कवण रानी र्योरा-म्वी

जिष्णु-शत्रुके जीतए रीना

वथेष्ठाः -वथ पव स्थि

सुभेयो-उत्तम सभामे

हाराण्-हारा जेहन

यजमानन्-बाजाक बाजामे

रीरो-शत्रुके पवर्जित कवणरीना

निकामे-निकामे-निश्चयहाकन्त कार्यामे

नः -हमव सभक

पुर्जन्ता-मेघ

रर्षन्तु-रर्षा हेए

हन्तरन्-उत्तम हन् रीना

उषधयः -उषधिः

पचान्ता- पाकए

योगेष्कमो-अनन्त नन्त करैरैक हेतु कएन गेन योगक वस्त्रा

नः'-हमवा सभक हेतु

कम्पताम्-समर्थ हेए



बिबिधक अनुवाद- हे ब्रह्मा, हमर बाज्यमे ब्रह्मा नीक धार्मिक रिद्या रैना, बाज्य-  
रीब, तीबदज, दुध दए रैनी गाय, दौगय रैना जल्मु उद्यमी नाबी होथि । पार्जन्य  
आरथकता पडना पब रर्या देथि, बन देय रैना गाढ पाकए, हम सब संपत्ति  
अर्जित/संवर्धित करी ।

बिदेह नूतन अंक भाषापक बचानेखन-

अंग्लिशकोष-मैथिली- / मैथिलीकोष-अंग्लिश- प्रोजेक्टकेँ आगु रैढ १३, अपन स्मार  
आ योगदान अ-मेर द्वारा [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब पठाडु ।

१.भावत आ नेपाक मैथिली भाषा-बैज्ञानिक लोकनि द्वारा रैनाओन मानक शैली आ  
२.मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

१.नेपा आ भावतक मैथिली भाषा-बैज्ञानिक लोकनि द्वारा रैनाओन मानक शैली

१.१. नेपाक मैथिली भाषा बैज्ञानिक लोकनि द्वारा रैनाओन मानक उच्चारण आ लेखन  
शैली

(भाषाशास्त्री डा. बामरताब यादरक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सझ नऽ निर्धारित)

मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन

१. पञ्चमस्वर आ अनुस्वार: पञ्चमस्वरानुशात ओ, ए, ण, न एरँ म अरैत अछि । संस्कृत  
भाषाक अनुसार शिष्टक अनुक्रमे जाहि रश्नाक अस्वर बहैत अछि ओही रश्नाक पञ्चमस्वर  
अरैत अछि । जेना-

अङ्ग (क रश्नाक बहरौक कावणे अनुक्रमे ङ् आएन अछि । )

पञ्च (च रश्नाक बहरौक कावणे अनुक्रमे ञ् आएन अछि । )

खल्ल (छ रश्नाक बहरौक कावणे अनुक्रमे ण् आएन अछि । )

सङ्गि (त रश्नाक बहरौक कावणे अनुक्रमे न् आएन अछि । )

खम्ब (प रश्नाक बहरौक कावणे अनुक्रमे म् आएन अछि । )



उपर्यङ्ग रात मैथिलीमे कम देखन जागत छट्टि । पञ्चमाङ्कबक रँदनामे अङ्किकाणि जगहपव अङ्गुस्त्रावक प्रयोग देखन जागट्ट । जेना- अंक, पंच, थंड, मणि, थंड आदि । राकवारिद पण्डित गोरिन्द नामक कहँ छनि जे करञ्ज, चरञ्ज आ ठरञ्जसँ पूर् अङ्गुस्त्राव निखन जाए तथा तरञ्ज आ परञ्जसँ पूर् पञ्चमाङ्कमे निखन जाए । जेना- अंक, चंचन, थंडा, अङ्गु तथा कम्पन । झुदा हिन्दीक निकट बहन आधुनिक लेखक एहि रातकेँ नहि मानैत छथि । ओ लोकनि अङ्गु आ कम्पनक जगहपव सेहो अंत आ कंपन निथैत देखन जागत छथि ।

नरीन पञ्चति किछु स्वरिपाजनक अरथ छैक । किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक रँचत होगत छैक । झुदा कतेक रँव हस्तलेखन रा झुदामे अङ्गुस्त्रावक छोट सन रँन्दु स्पर्श, नहि बेनासँ अर्थक अर्थ होगत सेहो देखन जागत छट्टि । अङ्गुस्त्रावक प्रयोगमे उच्चारण-दोषक सम्भारना सेहो ततरँ देखन जागत छट्टि । एतदर्थ कसँ नह कसँ परञ्ज धरि पञ्चमाङ्कमे प्रयोग कवरँ उचित छट्टि । यसँ नह कसँ छ धरि अङ्कबक सङ्ग अङ्गुस्त्रावक प्रयोग कवरँमे कतहु कोनो विवाद नहि देखन जागट्ट ।

२. ठ आ ट : ठक उच्चारण “व् ह”जकाँ होगत छट्टि । अतः जतह “व् ह”क उच्चारण हो ओतह मात्र ठ निखन जाए । आन ठाम खाली ट निखन जएरँक चाही । जेना-

ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेडआ, ठम्, ठेवी, ठाकनि, ठाठ आदि ।

ठ = पढ़ाग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रँठरँ, साँठ, गाठ, बीठ, चाँठ, सीठी, पीठी आदि ।

उपर्यङ्ग शिष्ट, सबकेँ देखनासँ ङ स्पर्श, होगत छट्टि जे साधारणतया शिष्टक शुरुमे ठ आ मध्य तथा अन्तमे ठ अरैत छट्टि । एह नियम ड आ डक सन्दर्भ सेहो लागू होगत छट्टि ।

३. र आ रँ : मैथिलीमे “र”क उच्चारण रँ कएन जागत छट्टि, झुदा ओकरा रँ कपमे नहि निखन जएरँक चाही । जेना- उच्चारण : रँदनाथ, रिछा, नरँ, देरँता, रिछु, रँशि, रँन्दना आदि । एहि सबक स्थानपव क्रमशः रँदनाथ, रिछा, नर, देरता, रिछु, रँशि, रन्दना निखरँक चाही । सामान्यतया र उच्चारणक लेन ओ प्रयोग कएन जागत छट्टि । जेना- ओकीन, ओजह आदि ।

४. य आ ज : कतहु-कतहु “य”क उच्चारण “ज”जकाँ करैत देखन जागत छट्टि, झुदा ओकरा ज नहि निखरँक चाही । उच्चारणमे यङ्ग, जदि, जझना, जूग, जारँत, जोगी,



जदू, जम आदि कहल जाएँना शिछ, सभकेँ क्षमणः यद्ध, यदि, यद्गना, हाग, यारत, योगी, यदू, यम लिखरौक चाही ।

३.ए आ य : मैथिलीक रतनीमे ए आ य दुनु लिखल जागत छटि ।

प्राचीन रतनी- कएल, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि ।

नरीन रतनी- कयल, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।

सामान्यतया शिछक शुरुमे ए मात्र अरैत छटि । जेना एहि, एना, एकव, एहन आदि । एहि शिछ, सभक स्थानपर यहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि कवरौक चाही । यद्यपि मैथिलीभाषी थाक सहित किछु जातिमे शिछक आवृत्तमे “ए”केँ य कहि उच्चारण कएल जागत छटि ।

ए आ “य”क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीने पञ्चतक अनुसर्षण कवरौ उपहाज मानि एहि प्रसक्तमे ओकरे प्रयोग कएल गेल छटि । किएक तँ दुनुक लेखनमे कोनो सहजता आ दूकहतक रौत नहि छटि । आ मैथिलीक सरसाधारणक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एसँ रैसी निकट छैक । खास क२ कएल, हएँ आदि कतिपय शिछकेँ कैल, हँ आदि रूपमे कतहू-कतहू लिखल जाएँ सेहो “ए”क प्रयोगकेँ रैसी समीचीन प्रमाणित करैत छटि ।

३.हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पवम्पवामे कोनो रौतपर रँल दैत काल शिछक पाछाँ हि, हू नगाओल जागत छैक । जेना- हुनकहि, अपनहू, ओकवहू, तकोनहि, छेष्टहि, आनहू आदि । झुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर एकाव एँ हूक स्थानपर ओकावक प्रयोग करैत देखल जागत छटि । जेना- हुनके, अपनो, तकोने, छेष्ट, आनो आदि ।

१.ष तथा थ : मैथिली भाषामे अधिकारीतः षक उच्चारण थ होगत छटि । जेना- षडान्न (थडयन्न), थोडशी (थोडशी), षष्टीकोष (थष्टीकोष), वृषेशी (वृथेशी), सन्ताष (सन्ताथ) आदि ।

+.पुनि-लोप : निम्नलिखित खरस्थामे शिछसँ पुनि-लोप भ२ जागत छटि:





(क) क्रियान्वयी प्रत्यय अथमे य रा ए वृत्तु भ२ जागत अछि । ओहिमे सँ पहिने अक उच्चारण दीर्घ भ२ जागत अछि । ओकर आगाँ लोप-सूचक चिह्न रा रिकारी ( ' / २ ) लगाओन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) लेन, उठए (उठय) पडतौक ।

अपूर्ण कप : पठ गेनाह, क लेन, उठ पडतौक ।

पठ२ गेनाह, क२ लेन, उठ२ पडतौक ।

(ख) पूर्वाकारिक छत आय (आए) प्रत्ययमे य (ए) वृत्तु भ२ जागछ, झुदा लोप-सूचक रिकारी नहि लगाओन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : थाए (य) गेन, पठाए (ए) देरै, नहाए (य) अएनाह ।

अपूर्ण कप : था गेन, पठा देरै, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्यय अक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनुमे वृत्तु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : दोसबि मानिनि चलि गेलि ।

अपूर्ण कप : दोसब मानिन चलि गेल ।

(घ) वर्तमान धातुबद्ध अन्तिम त वृत्तु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : पठैत अछि, रजैत अछि, गरैत अछि ।

अपूर्ण कप : पठै अछि, रजै अछि, गरै अछि ।

(ङ) क्रियापदक अरमान अक, उक, एक तथा हीकमे वृत्तु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप: डियोक, डियेक, डहीक, डौक, डैक, अरितेक, होगक ।

अपूर्ण कप : डियो, डिये, डही, डौ, डै, अरिते, होग ।

(च) क्रियापदीय प्रत्यय न्ह, ह् तथा हकावक लोप भ२ जागछ । जेना-

पूर्ण कप : कहि, कहरहि, कहरहूँ, गेनह, नहि ।

अपूर्ण कप : कहि, कहरनि, कहरौँ, गेनह, नग, नहि, नै ।

६. **प्रति स्थानान्तरण** : कोनो-कोनो स्वर-प्रति अपना जगहसँ हटि क२ दोसब ठाम चलि जागत अछि । खास क२ द्वय अ आ उक समूहमे अ राँत लागू होगत अछि ।



मैथिलीकवण भ२ गेल शिछक मण्य रा अलुमे जँ द्रस्य ग रा उ आरँए तँ ओकव धनि  
स्थानाबुवित भ२ एक अस्कर आगाँ आरँ जागत अछि । जेना- शनि (शेगन), पानि  
(पागन), दानि ( दागन), माष्टि (मागष्ट), काढ (काडुढ), मास्य (माडस) आदि । ऋदा  
तसेम शिछ सभमे ग निथम नागू नहि होगत अछि । जेना- बग्मिक्के बगम्य आ  
स्वपागूक्के स्वपाडस नहि कहन जा सकैत अछि ।

१०. हलन्त ( )क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हलन्त ( )क आरथकता नहि  
होगत अछि । कावण जे शिछक अलुमे अ उचावण नहि होगत अछि । ऋदा संस्कृत  
भाषासँ जहनाक तहिना मैथिलीमे आएन (तसेम) शिछ सभमे हलन्त प्रयोग कएन  
जागत अछि । एहि पौथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शिछकेँ मैथिली भाषा सँखी निथम  
अनुसाव हलन्तरिहीन बाखन गेल अछि । ऋदा राकवण सँखी प्रयोजनक लेन अवारथक  
स्थानपव कतहु-कतहु हलन्त देन गेल अछि । प्रस्तुत पौथीमे मैथिली लेखनक प्राचीन  
आ नरीन दुनु शैलीक सबन आ समीचीन पक्ष सभकेँ समेटि क२ रर्ण-रिग्यास कएन गेल  
अछि । स्थान आ समयमे रँचतक सङ्गहि हस्त-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सबन  
होर्हरना हिसारसँ रर्ण-रिग्यास मिनाओन गेल अछि । रतिमान समयमे मैथिली मात्रभाषी  
पर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान लेरँ पडि बहन परिप्रेक्ष्यमे लेखनमे  
सहजता तथा एककपतापव ध्यान देन गेल अछि । तखन मैथिली भाषाक मूल विशेषता  
सभ ऋष्टित नहि होगक, ताछु दिस लेखक-मन्दन सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री  
डा. वामारताव यादरक कहँ छनि जे सबनतक अनुसन्धानमे एहन अरस्था किन्हु ने  
आरँ देरौक चाही जे भाषाक विशेषता डौहमे पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. वामारताव यादरक पावणार्के पूर्ण कपसँ सङ्गि न२ निर्धारित)

## १.२. मैथिली अकादमी पठना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-शैली

१. जे शिछ मैथिली-साहित्यक प्राचीन कानसँ आग धरि जाहि रतिनीमे प्रचारित अछि, से  
सामान्यतः ताहि रतिनीमे लिखन जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राह

एथन

ठाम

जकव, तकव

तनिकव

अछि



अग्रार्थ

अथन, अथनि, एथेन, अथनी

ठिमा, ठिना, ठमा

जेकब, तेकब

तिनकब । (रैकम्पिक कर्पे ग्राह)

ईछ, अहि, ए ।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप रैकम्पिकतया अपनाओन जाय: भ२ गेन, भय गेन रा भ३ गेन । जा बहन अछि, जाय बहन अछि, जाए बहन अछि । कब गेनाह, रा कबय गेनाह रा कबय गेनाह ।

३. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' प्रनिक स्थानमे 'न' लिखन जाय सकैत अछि यथा कहनि रा कहन्हि ।

४. 'अ' तथा 'उ' ततय लिखन जाय जत' स्पर्शतः 'अग' तथा 'अड' सदृश उच्चारण अछि हो । यथा- देखेत, छलैक, रौखा, छोक अलादि ।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शिष्ट एहि कपे प्रयुक्त होयत: जैह, सैह, अह, ओह, लैह तथा दैह ।

६. ह्रस्व अकारांत शिष्टमे 'अ' के वृद्ध कवर सामान्यतः अग्रार्थ थिक । यथा- ग्राह देखि आरह, मानिनि गेलि (मनुष्य मात्रमे) ।

७. स्वतंत्र द्वय 'अ' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण आदिमे तँ यथारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकम्पिक कर्पे 'अ' रा 'य' लिखन जाय । यथा:- कयन रा कयन, अयनाह रा अयनाह, जाय रा जाए अलादि ।

८. उच्चारणमे दु स्वक रीच जे 'य' प्रनि स्वतः आरि जागत अछि तकरा लेखमे स्थान रैकम्पिक कर्पे देन जाय । यथा- पीछा, अछैछा, रिछाह, रा पीया, अछैया, रिछाह ।

९. सान्नासिक स्वतंत्र स्वक स्थान यथासंभर 'अ' लिखन जाय रा सान्नासिक स्व । यथा:- मैअ, कनिअ, किवतनिअ रा मैआँ, कनिआँ, किवतनिआँ ।

१०. कारकक रिभक्तिन निम्नलिखित रूप ग्राह:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे । 'मे' मे अनुस्वार सर्वा बाज्य थिक । 'क' क रैकम्पिक रूप 'केव' बाखन जा सकैत अछि ।



११. प्रकाशिक क्रियापदक रौद 'कय' रा 'कए' अरय रैकल्पिक कर्पे नगाउन जा सकैत छि। यथा:- देखि कय रा देखि कए।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ आदि निखन जाय।

१३. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'म' क रँदना अनुसाव नहि निखन जाय, किंतु छापक सुरिधार्य अर्द्ध 'ङ', 'ए', तथा 'ण' क रँदना अनुसारो निखन जा सकैत छि। यथा:- अर्द्ध, रा अर्क, अर्धन रा अर्चन, कर्ण रा कर्ण।

१४. हर्त छि निश्चयतः नगाउन जाय, किंतु रिभञ्जिक र्ग अकारांत प्रयोग कएन जाय। यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक।

१५. सभ एकन कावक छि शिष्टमे सँ क' निखन जाय, हँ क' नहि, सँज्ञ रिभञ्जिक हेतु कवाक निखन जाय, यथा घब पबक।

१६. अनुनासिककेँ चन्द्रिन्दु द्वारा रञ्ज कयन जाय। पर्वत रुद्रक सुरिधार्य हि समान जर्जन मात्रापव अनुसारक प्रयोग चन्द्रिन्दुक रँदना कयन जा सकैत छि। यथा- हि केव रँदना हि।

१७. पूर्ण रिवाय पासिसँ ( । ) सूचित कयन जाय।

१८. समस्त पद सँ क' निखन जाय, रा हागहनसँ जोडि क' , हँ क' नहि।

१९. निख तथा दिख शिष्टमे रिकारी (२) नहि नगाउन जाय।

२०. अर्क देरनागवी कपमे बाखन जाय।

२१. किछु प्रनिक नेव नरीन छि रँनराउन जाय। जा अ नहि रँनव अछि तारैत एहि दू प्रनिक रँदना प्ररित् अय/ आय/ अय/ आय/ आउ/ अउ निखन जाय। आकि ए रा अँ सँ रञ्ज कएन जाय।

ह./- गोरिन्द मा ११/१/१३ श्रीकांत ठाकुर ११/१/१३ सुरेन्द्र मा 'सुमन' ११/०१/१३

२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

२.१. उचारण निर्देश: (रौलेड कएन कप ग्राह):-



दन्त न क उचावामे दाँतमे जीह सँत- जेना रौजू नाम, झुदा ण क उचावामे जीह मुपामे सँत (ने सँतै तँ उचावामे दोष थि)- जेना रौजू गणेश। तानरा नेमे जीह तानसँ, षमे मुपसँ आ दन्त समे दाँतसँ सँत। निशौ, सभ आ शौषण रौजि क२ देखु। मैथिलीमे ष केँ रैदिक संस्कृत जकाँ थ सेहो उचवित कएन जागत थि, जेना रसा, दोष। य अनेको स्थानपर ज जकाँ उचवित होगत थि आ ण ड जकाँ (यथा संयोग आ गणेशे संयोग आ

गङ्गसे उचवित होगत थि)। मैथिलीमे र क उचावा रँ ने क उचावा स आ य क उचावा ज सेहो होगत थि।

ओहिना द्रस्र ग रैशीकान मैथिलीमे पहिने रौजन जागत थि कावण देरनागरीमे आ मिथिलास्रवमे द्रस्र ग थस्रवक पहिने निखनो जागत आ रौजनो जएरौक चारी। कावण जे हिन्दीमे एकर दोषपूर्ण उचावण होगत थि (निखन तँ पहिने जागत थि झुदा रौजन रौदमे जागत थि), से शिक्षा पञ्चातिक दोषक कावण हम सभ ओकर उचावण दोषपूर्ण ठगसँ क२ बहल छी।

थि- थ ग ङ ईँ (उचावण)

ढि- ङ ग थ ढैथ (उचावण)

पँ- प ङ ग च (उचावण)

आरँ थ आ ग ङ ए ईँ ओ ङ थं थः म ईँ सभ नेन मात्रा सेहो थि, झुदा ईँमे ङ ईँ ओ ङ थं थः म केँ सहाजस्रव कपमे गगत कपमे प्रहाज आ उचवित कएन जागत थि। जेना म केँ बी कपमे उचवित कवरँ। आ देखियो- ईँ नेन देखिँ क प्रयोग थरित। झुदा देखिँ नेन देखिये थरित। कू सँ हू धवि थ समितित नेनसँ कू सँ हू रँनेत थि, झुदा उचावा कान हननु हाज शैलक थनुक उचावणक प्रवृत्ति रँन थि, झुदा हम जखन मनोजमे ज् थनुमे रँजैत छी, तखनो प्रबनका लोककेँ रँजैत स्वरँहि- मनोज२, रासुरमे ओ थ हाज ज् = ज रँजै ढि।

फेव ङ थि ज् आ ए० क सहाज झुदा गगत उचावण होगत थि- गा। ओहिना स्र थि कू आ ष क सहाज झुदा उचावण होगत थि ङ। फेव शिं आ व क सहाज थि श्रि (जेना श्रिमिक) आ स् आ व क सहाज थि स्र (जेना मिस्र)। ए नेन त+व।

उचावणक ऑडियो फागत रिदेह आर्कागर <http://www.videha.co.in/> पर उपलब्ध थि। फेव केँ / सँ / पर परँ थस्रवसँ सँ क२ निथु झुदा तँ / क२ सँ क२। ईँमे सँ मे पहिन सँ क२ निथु आ रौदरँना सँ क२। थकक रौद ठी निथु सँ क२ झुदा थन ठाम ठी निथु सँ क२ जेना





**ढुल्लै रूदा सभ ठी । केव उथ म सातम विभू- ढुठम सातम ले । घवरैवामे रैवा  
रूदा घवरैवामे रावी प्रयाङ्ग कर ।**

बहए-

**बैठ रूदा सकैए (उचावण सकै-ए) ।**

रूदा कथनो कान बहए आ बैठ मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कम्या जगहमे पार्किंग  
कवरौक अत्रास बैठ ओकवा । प्रह्लापव पता नागत जे टुनटुन नाम्ना आ ड्रागन कनाठ  
झसक पार्किंगमे काज करैत बहए ।

ढुल्लै, ढुनए मे सेहो ई तबहक भेल । ढुनए क उचावण ढुन-ए सेहो ।

संयोगने- (उचावण संजोगने)

**कै/ क२**

केव- क (

**केव क प्रयोग गद्यमे ले कर , पद्यमे क२ सकै छी । )**

क (जेना वामक)

**वामक आ सगे (उचावण वाम के / वाम क२ सेहो)**

**सँ- स२ (उचावण)**

चन्द्रबिन्दू आ अन्नस्राव- अन्नस्रावमे कठ धरिक प्रयोग होगत अछि रूदा चन्द्रबिन्दूमे  
ले । चन्द्रबिन्दूमे कनेक एकावक सेहो उचावण होगत अछि- जेना वामसँ- (उचावण  
वाम स२) वामकै- (उचावण वाम क२/ वाम के सेहो) ।

कै जेना वामकै भेल हिन्दीक को (वाम को)- वाम को= वामकै

क जेना वामक भेल हिन्दीक का ( वाम का) वाम का= वामक

क२ जेना जा क२ भेल हिन्दीक कव ( जा कव) जा कव= जा क२

सँ भेल हिन्दीक से (वाम से) वाम से= वामसँ

स२ , त२ , त , केव (गद्यमे) एते चाक शिष्ट सरहक प्रयोग अछि ।

के दोसव अर्थे प्रयाङ्ग भ२ सकैए- जेना, के कहनक ? रिभञ्जि “क”क रैदना एकव  
प्रयोग अछि ।



नधि, नहि, नै, नग, नँग, नगँ, नगं ई सबक उच्चारण खा लेखन - ले

अरु क रँदनामे र जेना महवपूर्ण (महअवपूर्ण नै) जतए अर्थ रँदनि जए ओतहि मात्र  
तीन अक्षरक संज्ञाक्षरक प्रयोग उचित। सम्पति- उच्चारण स म्प ण त (सम्पति नै-  
कावा सही उच्चारण आसानीसँ समुन्न नै)। क्रदा सरोतिम (सरोतिम नै)।

बाह्मिन् (बाह्मिन् नै)

सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन)

पोछैले/ पोछै लेल/ पोछैए लेल

पोछैए/ पोछैए/ (अर्थ परिवर्तन) पोछैए/ पोछै

ओ लोकनि ( लो क२, ओ मे रिकारी नै)

ओअ/ ओहि

ओहिले/

ओहि लेल/ ओही व२

जखरौं/ बैसखौं

पँचभय्या

देखियोक/ (देखिओक नै- तहिना अ मे ज्ञास खा दीर्घक मात्राक प्रयोग अनुचित)

जकाँ / जेकाँ

तँग/ तै/

होएत / रुएत

नधि/ नहि/ नँग/ नगँ/ नै

सौंसै/ सौंसै

रँड /

रँडी (सोबाओव)

गाए (गाए नहि), क्रदा गाएक दुध (गाएक दुध नै। )

बहलौं/ पहिबलौं



हमही/ श्री

सर - सभ

सरलक - सभलक

धवि - तक

गप- रात

रूसर - समयसर

रूसलौ/ समयलौ/ रूसनद - समयनद

हमवा आव - हम सभ

आकि- आ कि

सकैद/ करैद (गद्यमे प्रयोगक आरथकता नै)

होअन/ होनि

जाअन (जानि नै, जेना देव जाअन) ऊदा जानि-रूसि (अर्थ परिवर्तन)

पअर/ जाअर

आड/ जाड/ आड/ जाड

मे, के, स, पव (शेइस सँ क२) तँ क२ ध२ द२ (शेइस सँ ल२ क२) ऊदा दुँरा रा रैसी  
बिभक्ति सग बहनापव पहिन बिभक्ति ठाँके सँठि। जेना एमे सँ ।

एकठा, दुँरा (ऊदा क२ ठा)

बिभावीक प्रयोग शेइक अन्तमे, रीचमे अनारथक करै नै। आकारान्त आ अन्तमे अ  
क रौद बिभावीक प्रयोग नै (जेना दिअ

, आ/ दिय, आ, आ नै )

अपेक्षणीय प्रयोग बिभावीक रैदनामे कवर अन्तित आ मात्र शास्त्रीक तकनीकी  
न्यूनताक परिचायक)- ओना बिभावीक संस्कृत कप २ अरग्रह कहन जागत अछि आ  
रतनी आ उचावण दुनू ठाम एकव लोप बँह अछि/ बहि सकैत अछि (उचावणमे लोप  
बहि अछि)। ऊदा अपेक्षणीय सेहो अंग्रेजीमे पसेसि केसमे होगत अछि आ  
होचमे शेइमे जतए एकव प्रयोग होगत अछि जेना *raison d'etre* एतए सेहो  
एकव उचावण रैजौन डेटैव होगत अछि, माने अपेक्षणीय अरकाश नै दैत अछि



रबन जोडेते थछि, से एकव प्रयोग रिंकारीक रँदता देनाथ तकनीकी कर्पे सेहो  
अनुचित) ।

थगमे, एहिमे/ ईमे

जगमे, जाहिमे

एथन/ अथन/ अगथन

कै (के नहि) ये (अनुस्राव बहिता)

भ२

ये

द२

टँ (त२, त नै)

सँ ( स२ स नै)

गाछ तब

गाछ वग

साँस थन

जो (जो go, करै जो do)

ते/तथ जेना- ते दुखारे/ तगमे/ तगने

जै/जथ जेना- जै कावण/ जगसँ/ जगने

ई/अथ जेना- ई कावण/ ईसँ/ अगने/ झुदा एकव एकठाँ खास प्रयोग- नावति कतेक  
दिनसँ कहैत बहैत अथ

लै/वथ जेना लैसँ/ वगने/ लै दुखारे

नहँ/ लौ

गेलौ/ लेलौ/ लेवँह/ गेवँह/ लेवँह/ लेवँ



जअ/ जाहि/ जै

जहिगाम/ जाहिगाम/ जअगाम/ जैगाम

एहि/ अहि/

अअ (राकक अतमे ब्राह्म / अ)

अअछ/ अछि/ अँछ

तअ/ तहि/ तै/ तहि

उहि/ उअ

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/ जीर

भनेही/ भवहि

तै/ तँअ/ तँअ

जाअर/ जाअर

नअ/ नै

छअ/ छै

नहि/ नै/ नअ

गअ/ गै

छनि/ छन्हि ...

समअ शेरदक संग जखन कोनो रिभक्ति जूठै छै तखन समै जना समैपव  
अत्यादि । असगवमे छदअ आ रिभक्ति जूठने छदे जना छदेसँ, छदेमे अत्यादि ।

जअ/ जाहि/

जै

जहिगाम/ जाहिगाम/ जअगाम/ जैगाम





एहि/ अहि/ अग/ अ

अगछ/ अछि/ अछ

तग/ तहि/ ते/ ताहि

उहि/ उअ

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/

जीरै

भने/ भनेही/

भवहि

ते/ तग/ तअ

जाअरै/ जाअरै

नग/ ने

छग/ छै

नहि/ ने/ नग

गग/

गे

डनि/ डन्हि

छकन अछि/ गेव गछि

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

नीचाँक सूचीमे देन रिक्जमेस लैंग्वेज एडीटिंग द्वारा कोन कप छनन जेरोक चाही:

रौन्ड कएन कप त्राह:

१. होयरीना/ होरैयरीना/ होमयरीना/ हेरैरीना, हेमरीना/ होयरीक/ होरैयरीक / होयरीक

२. अग/ अग



Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका 'बिदेह' १३९ म अंक ०१ अक्टूबर २०१३ (वर्ष ६ मास ७० अंक १३९)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

आ

३. क' जेने/क२ जेने/क३ जेने/क४ जेने/न/व२/नय/व३

४. भ' गेन/भ२ गेन/भ३ गेन/भ४ गेन/भ५

गेन

५. कव' गेनाह/कव२

गेनाह/कव३ गेनाह/कव४ गेनाह

७.

विश्व/दिश्व विय, दिय, विश्व, दिय /

१. कव' रैना/कव२ रैना/ कव३ रैना कलेरैना/क'व' रैना /

कलेरैना

४. रैना रना (प्रकष), रानी (मूनी) ६

.

आइव आग्र

१०. आयः प्रायह

११. दुःख दुख १

२. चलि गेन चव गेन/चैन गेन

१३. देवखिन्ह देवकिन्ह, देवखिन

१४.

देखवहि देखवनि/ देखलैन्ह

१५. छुखिन्ह/ छुवहि छुखिन/ छुलैन/ छुवनि

१६. चलैत/दैत चवति/दैति

१७. एखनो

अखनो



१४.

**रैठनि रैठजन रैठहि**

१५. ७१/७२(सरनाम) ७

२०

**७ (संयोजक) ७१/७२**

२१. कागि/कागिं कागगि/कागगु

२२.

**जे जे/जे२ २३. ना-बुब ना-बुब**

२४. केवहि/केवनि/कयवहि

२५. तखनत/ तखन त

२७. जा

**बहव/जाय बहव/जाय बहव**

२१. निकवय/निकवय

**वागव/ वगव रैठवाय/ रैठवाय वागव/ वगव निकव/रैठवे वागव**

२४. ७तय/ जतय जत/ ७त/ जतय/ ७तय

२७.

**की बुबव जे कि बुबव जे**

३०. जे जे/जे२

३१. कुदि / यादि(मोन पावर) कुगद/यागद/कुद/याद/

**यादि (मोन)**

३२. ओहो/ ओहो

३३.

**हंसय/ हंसय हंस**



३४. लौ आकि दस/लौ किंरा दस/ लौ रा दस

३५. सासु-ससुव सास-ससुव

३६. छह/ सात छ/छः/सात

३७.

की की/ की२ (दीर्घीकावास्तुमे २ रजित)

३८. जरौरै जरारै

३९. कबयताह/ कबेताह कबयताह

४०. दवान दिशि दवान दिशि/दवान दिस

४१.

. गेवाह गधवाह/गयवाह

४२. किछु आव/ किछु ँव/ किछु आव

४३. जाध छव/ जाधत छव जाति छव/जैत छव

४४. पहुँचि/ भेटि जाधत छव/ भेटि जाध छव पहुँच/ भेटि जाधत छव

४५.

जरौन (हरा)/ जरान(हैजौ)

४६. वय/ वय क/ क२/ वय क२ / व२ क२/ व२ क२

४७. व/व२ कय/

क२

४८. एथन / एथने / अथन / अथने

४९.

अहीके अहीके

५०. गहीव गहीव

५१.

धाव पाव केनाथ धाव पाव केनाथ/केनाथ



ॐ.२. जेकाँ जेँकाँ

**जकाँ**

ॐ.३. तहिना तेहिना

ॐ.४. एकव थकव

ॐ.५. रँहिनउ रँहनोअ

ॐ.६. रँहिन रँहिन

ॐ.७. रँहिन-रँहनोअ

**रँहिन-रँहनउ**

ॐ.८. नहि/ नै

ॐ.९. कवरौ / कवरौय/ कवरौअ

ॐ.१०. तँ/ त २ तय/तअ

ॐ.११. भैयाबी मे छेठ-भाए/भै/ जेठ-भाय/भाअ

ॐ.१२. गिनतीमे दू भाग/भाए/भाअ

ॐ.१३. आ पोथी दू भाअक/ भाअ/ भाए/ जेठ । यारत जारत

ॐ.१४. माय मै / माअ ऊदा माअक ममता

ॐ.१५. देखि/ दअन दनि/ दअहि/ दयहि दहि/ दैहि

ॐ.१६. द/ द२/ दअ

ॐ.१७. ओ (संयोजक) ओ२ (सरनाम)

ॐ.१८. तका कअ तकाय तकाअ

ॐ.१९. पैरे (on foot ) पअरे कअक/ कैक

१०.

**ताहमे/ ताहमे**

११.

**प्रतीक**





१२.

**रैंजा कय/ कय / क२**

१३. रैननाय/रैननाथ

१४. कोवा

१५.

**दिनका दिनका**

१६.

**तठहिम**

११. गवरौवहि/ गवरौवनि

**गवरौवहि/ गवरौवनि**

१७. रौव रौव

१८.

**छेह छिह(अक्षर)**

+०. जे जे'

+१

**. से/ के से/के'**

+२. एखनका अखनका

+३. भूमिहव भूमिहव

+४. सुगव

**/ सुगव/ सुगव**

+५. सठठाक सठठाक +७.

**छुरि**

+१. कवगयो/७ करैयो ले देवक /कवियो-कवगयो

+२. प्रवावि



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका 'विदेह' १३९ म अंक ०१ अक्टूबर २०१३ (वर्ष ६ मास ७० अंक १३९)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

## प्रबोध

१२. सगड १-साँष्ट

सगड १-साँष्ट

२०. पधरे-पधरे पैरे-पैरे

२१. खेवधरौक

२२. खेलेरौक

२३. वगा

२४. होध- हो होध

२५. रूमव रूमव

२६.

रूमव (संबोधन अर्थमे)

२७. यैह यधह / अधह/ सैह/ सधह

२८. तातिव

२९. अयनाय- अयनाग/ अधनाग/ एनाग

३०. निन्न- निन्द

३१.

रिन्न रिन्न

३२. जाध जाग

३३.

जाग (in different sense)-last word of sentence

३४. डत पव आरि जाग

३५.

ले

३६. खेवाध (play) खेवाध



१०१. शिकायत- शिकायत

१०१.

ठप- ठप

१०२

. पठ- पठ

११०. कनिष्ठ/ कनिये कनिष्ठे

१११. बाकस- बाकस

११२. होय/ होय होय

११३. खडबदा-

खडबदा

११४. ब्रूमवहि (different meaning- got understand)

११५. ब्रूमवहि/ब्रूमवनि/ ब्रूमवहि (understood himself)

११६. चवि- चवि/ चवि गेव

११७. खडा- खडा

११८.

मोन पाडवहि/ मोन पाडवनि/ मोन पाववहि

११९. कैक- कैक- कैक

१२०.

वग वग

१२१. जवना

१२२. जवना जवना- जवना/

जवना

१२३. होय



१२४.

गबरेवहि/ गबरेवनि गबरेवहि/ गबरेवनि

१२५.

टिथैत- (t o t e s t ) टिथैत

१२६. कबखयो (willing to do) करैयो

१२७. जेकबा- जकबा

१२८. तकबा- तेकबा

१२९.

बिदेसब स्थानमे/ बिदेसरे स्थानमे

१३०. कबरैयनहुँ/ कबरैयनहुँ/ कबरैयनहुँ कबरैयनहुँ

१३१.

हाकि (डाका हाकि)

१३२. ओजन रजन खाकसोच/ खाकसोस कागत/ कागच/ कागज

१३३. आधे भाग/ आध-भागे

१३४. पिछा / पिछाय/पिछाए

१३५. नए/ ले

१३६. रैछा नए

(ले) पिछा जाय

१३७. तबन ले (नए) कठत अछि । कठ/ सुने/ देखे छव दूदा कठत-कठत/ सुनेत-  
सुनेत/ देखेत-देखेत

१३८.

कठक गोठे/ कठक गोठे

१३९. कमाय-धमाय/ कमाय- धमाय

१४०



## . वग वग

१४९. खेवाग (for playing)

१४९.

## डथिह/ डथिन

१४३.

## होखत होख

१४४. का कियो / केउ

१४३.

## केशे (hair)

१४३.

## कैस (court-case)

१४१

## . रैननाग/ रैननाय/ रैननाथ

१४४. जलनाग

१४५. कबसी कसी

१४०. चबचा चर्चा

१४९. कर्म कर्म

१४२. डुराँरै/ डुराँरै/ डुराँरै डुराँरै/ डुराँरै

१४३. अथुनका/

## अथुनका

१४४. वग/ विग (राकाक अंतिम गेह)- वग

१४३. कवक/

## कवक

१४३. गवगी गमी





१.१

. रवदी रदी

१.१.१. सुना गेवाह सुना/सुना२

१.१.२. एनाथ-गेनाथ

१.१.३.

तेना ले घेबवहि/ तेना ले घेबवनि

१.१.४. नहि / ले

१.१.५.

डरौ डरौ

१.१.६. कठह/ कठौ कठी

१.१.७. डमबिगब-डमेबगब डमबगब

१.१.८. भकिगब

१.१.९. धोत/धोथत धोएत

१.१.१०. गप/गप्प

१.१.११.

के के

१.१.१२. दवरैज्जा/ दवरैजा

१.१.१३. ठाय

१.१.१४.

धवि तक

१.१.१५.

घुबि लोष्ट

१.१.१६. खोबरैक

१.१.१७. रूँछ



११३. चौ/ ठू

११३. चौहि (पद्यमे त्राह)

१११. चौही / चौहि

११४.

कवरौअ कवरौअये

११५. एकेठा

११०. कवितथि / कवतथि

१११.

पहुँचि/ पहुँच

११२. बाखवहि बखवहि/ बखवनि

११३.

वगवहि/ वगवनि वागवहि

११४.

अनि (उचावण अणन)

११५. अछि (उचावण अगछ)

११६. एवथि गेवथि

१११. रिंतने/ रिंतने/

रिंतने

१११. कवरौवहि/ कवरौवनि

करेवथि/ करेवथि

११६. कवएवहि/ करेवनि

११०.

आकि/ कि



१११. पहुँचि।

पहुँच

११२. रँगी जवाय/ जवाय जवा (आंगि नगा)

११३.

से से

११४.

हाँ मे हाँ (हाँमे हाँ बिभक्तिमे ल्हा कय)

११५. खेव खेव

११६. खणव(spaci ous) खेव

११७. होयतहि/ होयतहि/ होयतनि/हेतनि/ हेतहि

११८. हाथ मटियाँ/ हाथ मटियारय/हाथ मटियाँ

११९. खेका खेका

२००. देखाए देखा

२०१. देखारै

२०२. सबवि सबव

२०३.

साहेरै साहेरै

२०४. गेलै/ गेलै/ गेलै

२०५. हेरौक/ होयरौक

२०६. केनो/ कएनहूँ/केनो/ केनूँ

२०७. किछ न किछ/

किछ ने किछ

२०८. घुमेनहूँ/ घुमएनहूँ/ घुमेनो

२०९. एवाक/ अवाक



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका 'विदेह' १३९ म अंक ०१ अक्टूबर २०१३ (वर्ष ६ मास ७० अंक १३९)

मानवीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२१०. अः / अरु

२११. वय /

वय (अर्थ-परिवर्तन) २१२. कनीक / कलक

२१३. मरुलक / सभक

२१४. मिना २ / मिना

२१५. क२ / क

२१६. जा २ /

जा

२१७. आ २ / आ

२१८. भ२ / भ' ( ' काल्पनिक कमीक द्वातक)

२१९. निश्चय / नियम

२२०

लेखक/लेखक

२२१. पतिव अक्षर टा / रौदक / रौचक ट

२२२. तहि/तहि / तहि / ते

२२३. कहि / कही

२२४. तँ /

ते / तँ

२२५. नँ / नगँ / नहि / नहि/ले

२२६. ते / लय / एवीते

२२७. छवि / छे / छेक / छग

२२८. दृष्टि / दृष्टि

२२९. आ (come) / आ (conjunction)

२३०.



**अ (conjunct i on)/ अ२(come)**

२३१. कनो/ कोनो/ कोना/ केना

२३२. गेलोह-गेवहि-गेवनि

२३३. हेरौक- होएरौक

२३४. केनो- कएनो-कएनहूँ/केनो

२३५. किछ न किछ- किछ ले किछ

२३६. केहन- केहन

२३७. अ२ (come)-अ (conjunct i on-and)/अ । आरै-आरै /आरैह-आरैह

२३८. छथ-छैत

२३९. घुमेनहूँ-घुमएनहूँ- घुमेवाटे

२४०. एवाक- अएनाक

२४१. होनि- होअन/ होहि/

२४२. ओ-बाम ओ आमक रीछ(conjunct i on), ओ२ कहक (he sai d)/ओ

२४३. की छथ/ कोसी अएवी छथ/ की छै । की छथ

२४४. दृष्टिअ/ दृष्टियै

२४५.

**.गोयिब/ सामेव**

२४६. तै / तँ/ तथि/ तहि

२४७. जौ

**/ जौ/ जौ**

२४८. सभ/ सरै

२४९. सभक/ सरैहक

२५०. कहि/ कही

२५१. कनो/ कोनो/ कोनहूँ/



२३.२. **काबकती भ२ गेव/ भ३ गेव/ भ४ गेव**

२३.३. **केना/ केना/ कना/ कना**

२३.४. **अः / अह**

२३.५. **जने/ जनए**

२३.६. **गेवनि/**

**गेवाह (अर्थ परिवर्तन)**

२३.१. **केवहि/ कएवहि/ केवनि/**

२३.४. **वय/ वय/ वयह (अर्थ परिवर्तन)**

२३.६. **कनीक/ कनेक/ कनी-मनी**

२३.७. **पठेवहि पठेवनि/ पठेवएन/ पपठेवहि/ पठेवनि**

२३.८. **निश्चय/ नियम**

२३.९. **हेक्टैअव/ हेक्टैयव**

२३.१०. **पठिव अक्षर बहने ट/ रीचमे बहने ट**

२३.११. **आकावाबुमे रिकारीक प्रयोग उचित नै/ अपेक्षाकृत प्रयोग हान्स्टक तकनीकी नूनतक परिचायक ओकर रीदना अरग्रह (रिकारी) क प्रयोग उचित**

२३.१२. **केव (पद्यमे आह) / -क/ क२/ के**

२३.१३. **डैहि- डहि**

२३.१४. **वगैए/ वगैये**

२३.१५. **होएत/ हएत**

२३.१६. **जाएत/ जएत**

२३.१७. **आएत/ अएत/ आउत**

२३.१८.

**. आएत/ अएत/ अैत**

२३.१९. **पिअरौक/ पिअरौक/पियरौक**





२१३. शुक्र/ शुक्र

२१४. शुक्रहे/ शुक्र

२१५. अतह/ अतह/ एतह/ अतह

२१६. जाहि/ जाग/ जग/ जै

२१७. जागत/ जैतए/ जगतए

२१८. आव/ अए

२१९. कैक/ कक

२२०. आयन/ अएन/ आव

२२१. जाए/ जगए/ जग (नानति जाए नगतीह । )

२२२. नकएन/ नकएव

२२३. कर्वाएव/ कर्वाएन

२२४. ताहि/ तै/ तग

२२५. गायरै/ गाएरै/ गएरै

२२६. सकै/ सकए/ सकय

२२७. सेवा/सवा/ सवाए (भात सवा गेन)

२२८. कहत बही/देखैत बही/ कहत छलौ/ कह छलौ- अहिना छलैत/ पटैत

(पटै-पटैत अर्थ कयनो काव परिवर्तित) - आव बुमै/ बुमैत (बुमै/ बुमै छी रुदा बुमैत-बुमैत)/ सकैत/ सकै। करैत/ करै। दै/ दैत। डैक/ डै। रचलै/ रचलैक। बखरौ/ बखरौक। रिन/ रिन। बातिक/ बातिक बुमै आ बुमैत केव अपन-अपन जगहपव प्रयोग समीचीन अछि। बुमैत-बुमैत आर बुमविर्ष। हमर बुमै छी।

२२९. दुआरे/ द्वारे

२३०. भैट/ भैट/ भैट

२३१.

खन/ खीन/ खना (भोव खन/ भोव खीन)



२९२. तक/ धवि

२९३. ग२/ गौ (meaning different - जनरौ ग२)

२९४. स२/ सँ (रूदा द२, न२)

२९५. त२ (तीन अक्षरक मेव रँदना प्रनवजिक एक आ एकठा दोसबक उपयोग) आदिक रँदना त्र आदि। महत२/ महत२/ कर्ता/ कर्ता आदिमे त सहाजक कोनो आरथकता मैथिलीमे नै छि। रज्ज

२९६. रेंसी/ रेंगी

२९७. रौना/ राना रँवा/ रना (बैरँवा)

२९८

२९९. रावी/ (रँदनेवावी)

३००. राता/ राता

३०१. अन्तर्बहिर्द्वय/ अन्तर्बहिर्द्वय

३०२. लेमए/ लेमए

३०३. वमडका/ नमडका

३०४. वागै/ वगै (

भैलैत/ भैलै)

३०५. वागव/ वगव

३०६. तरौ/ तरा

३०७. बाखक/ बखक

३०८. आ (come)/ आ (and)

३०९. पश्चाताप/ पश्चाताप

३१०. २ केव रारहाव शिर्षक अन्तमे माव, यथासंभर रीचमे नै।

३११. कठैत/ कठै

३१२.

बस (डव)/ बै (डव) (meaning different)



३५५. तागति/ ताकति

३५६. खवाप/ खवारै

३५७. रौगन/ रौनि/ रौगनि

३५८. जाठि/ जाथ

३५९. कागज/ कागच/ कागत

३६०. गिले (meaning different – swallow)/ गिले (थसए)

३६१. वास्तिव/ वास्तीय

## DATE-LIST (year – 2013-14)

(१४२९ क्रमवी साव)

### Marriage Days:

Nov. 2013- 18, 20, 24, 25, 28, 29

Dec. 2013- 1, 4, 6, 8, 12, 13

January 2014- 19, 20, 22, 23, 24, 26, 31.

Feb. 2014- 3, 5, 6, 9, 10, 17, 19, 24, 26, 27.

March 2014- 2, 3, 5, 7, 9.

April 2014- 16, 17, 18, 20, 21, 23, 24.

May 2014- 1, 2, 8, 9, 11, 12, 18, 19, 21, 25, 26, 28, 29, 30.

June 2014- 4, 5, 8, 9, 13, 18, 22, 25.

July 2014- 2, 3, 4, 6, 7.

### Upanayana Days:

February 2014- 2, 4, 9, 10.

March 2014- 3, 5, 11, 12.



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका 'विदेह' १३९ म अंक ०१ अक्टूबर २०१३ (वर्ष ६ मास ७० अंक १३९)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

April 2014– 4, 9, 10.

June 2014– 2, 8, 9.

### ***Dviragaman Din:***

November 2013– 18, 21, 22.

December 2013– 4, 6, 8, 9, 12, 13.

February 2014– 16, 17, 19, 20.

March 2014– 2, 3, 5, 9, 10, 12.

April 2014– 16, 17, 18, 20.

May 2014– 1, 2, 9, 11, 12.

### ***Mundan Din:***

November 2013– 20, 22.

December 2013– 9, 12, 13.

January 2014– 16, 17.

February 2014– 6, 10, 19, 20.

March 2014– 5, 12.

April 2014– 16.

May 2014– 12, 30.

June 2014– 2, 9, 30.

## **FESTIVALS OF MTHILA (2013–14)**

Mauna Panchami –27 July



Madhushr avani – 9 August

Nag Panchami – 11 August

Paksha Bandhan– 21 Aug

Kri shnast ami – 28 August

Kushi Amavasya / Somvari Vrat – 5 Sept ember

Hart al i ka Teej – 8 Sept ember

Chaut hChandr a–8 Sept ember

Vi shwak ar ma Pooj a– 17 Sept ember

Anant Cat ur dashi – 18 Sep

Pi t ri Paksha begi ns– 20 Sep

Ji moot avahan Vrat a/ Ji ti a–27 Sep

Mat ri Navami –28 Sep

Kal ashst hapan– 5 Oct ober

Bel naut i – 10 Oct ober

Pat ri ka Pr avesh– 11 Oct ober

Mahast ami – 12 Oct ober

Maha Navami – 13 Oct ober

Vi j aya Dashami – 14 Oct ober

Koj agar a– 18 Oct

Dhant er as– 1 November

Di yabat i , shyama pooj a–3 November



Annakoot a/ Govar dhana Pooj a-4 November

Bhr at ri dwi ti ya/ Chi tr agupt a Pooj a- 5 November

Chhat hi -8 November

Sama Pooj aar ambh- 9 November

Devot t han Ekadashi - 13 November

r avi vr at ar ambh- 17 November

Navanna par van- 20 November

Kart i kPoor ni ma- Sama Vi sar j an- 2 December

Vi vaha Panch mi - 7 December

Makar a/ Teel a Sankr ant i -14 Jan

Nar akni var an chat ur dashi - 29 January

Basant Panchami / Sar aswat i Pooj a- 4 February

Achl a Sapt mi - 6 February

Mhashi var at ri -27 February

Hol i kadahan-Fagua-16 Mar ch

Hol i - 17 Mar ch

Sapt ador a- 17 Mar ch

Var uni Tr ayodashi -28 Mar ch

Jur i shi t al -15 Apr i l

Ram Navami - 8 Apr i l

Akshaya Tritiya-2 May





Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका 'विदेह' १३९ म अंक ०१ अक्टूबर २०१३ (वर्ष ६ मास ७० अंक १३९)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

Janaki Navami – 8 May

Ravi Br at Ant – 11 May

Vat Savitri –bar asait – 28 May

Ganga Dashhar a–8 June

Hari vasar Vr at a– 9 July

Shr ee Gur u Poor ni ma–12 Jul

VI DEHA ARCHI VE

पत्रिकाक सब्ठा पुवान अंक ब्रैल-रिदेह अ. तिबहुता आ देरनागरी रूपमे Vi deha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

रिदेह अर्थक ३.०पत्रिकाक पहिर –

रिदेह अर्थक ३.०पत्रिकाक –

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-i/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-ii/>

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi>

इडियो संकलनअ मैथिली. Maithili Audio Downloads

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio>

४.मैथिली वीडियो संकलन Maithili Videos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-videos>



## ३. आधुनिक चित्रकला आ चित्र / मिथिला चित्रकला. Mithila Painting/ Modern Art and Photos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>

रिदेहक एहि सब सहयोगी क्रिकपब सेहो एक रैब जाड ।

३. रिदेह मैथिली क्रिज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. रिदेह मैथिली जानबुत अग्रीगेटर :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

४. रिदेह मैथिली साहित अंग्रेजीमे अनुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६. रिदेहक पूर-कप "भासबिक गाछ" :

<http://gajendrat hakur.blogspot.com/>

१०. रिदेह अडेक :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. रिदेह बागन :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. रिदेह: सदेह : पहिन तिवहुता (मिथिलासुब) जानबुत (रैग)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. रिदेह: ब्रेन: मैथिली ब्रेनमे: पहिन रैब रिदेह द्वाबा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. VIDEHA I ST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archive.blogspot.com/>



१३. रिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मैथिली पोथीक आर्काइव

<http://videha-pot hi .blogspot .com/>

१७. रिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऑडियो आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot .com/>

१९. रिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका वीडियो आर्काइव

<http://videha-video.blogspot .com/>

२०. रिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paint ings-photos.blogspot .com/>

२१. मैथिल आब मिथिला (मैथिलीक सबसँ लोकप्रिय जानबूत)

<http://maithilaurmaithila.blogspot .com/>

२०श्रुति प्रकाशन

<http://www.shrut i -publ i cat i on.com>

२१.<http://groups.google.com/group/videha>

२२.<http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

२३. गजेन्द्र ठाकुर गडेकर

<http://gajendrathakur123.blogspot .com>


२४. मेना भुठका


<http://mangan-khabas.blogspot .com>

२५. रिदेह रेडियोकरिता आदिक पहिल पौडकास्ट सांठ-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress .com/>



२७.  Vi deha Radi o

२९.  Joi n offi ci al Vi deha f acebook gr oup.

२८. बिदेह मैथिली नाट्य उत्सव

<http://maithili-drama.blogspot.com>

२९. समदिया

<http://esamad.blogspot.com>

३०. मैथिली फिल्म

<http://maithilifilms.blogspot.com>

३१. अनचिन्हाव आखर

<http://anchinharakharakolkata.blogspot.com>

३२. मैथिली हाथकु

<http://maithili-hai ku.blogspot.com>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com>

३४. बिहनि कथा

<http://vihani katha.blogspot.in/>

३५. मैथिली कविता

<http://maithili-kavita.blogspot.in/>

३६. मैथिली कथा

<http://maithili-katha.blogspot.in/>

३७. मैथिली समालोचना



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका 'विदेह' १३९ म अंक ०१ अक्टूबर २०१३ (वर्ष ६ मास ७० अंक १३९)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

<http://maithili-samachna.blogspot.in/>

महत्त्वपूर्ण सूचना: The Maithili pdf books are AVAILABLE FOR free PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

<http://videha123.wordpress.com/about/>





Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका 'विदेह' १३९ म अंक ०१ अक्टूबर २०१३ (वर्ष ६ मास ७० अंक १३९)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रिदेह:सदेह:१: २: ३: ४:५:६:७:८:९:१० "रिदेह"क प्रिंटे संस्करण: रिदेह-३-पत्रिका  
(<http://www.videha.co.in/>) क चूनन बचना सम्मिलित ।

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर ।

Details for purchase available at publisher's (print -  
version) site <http://www.shruti-publication.com> or you may  
write to [shruti.publication@shruti-publication.com](mailto:shruti.publication@shruti-publication.com)

रिदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन

(c)२००४-१३. सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि अछि ततए  
संपादकाधीन । रिदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ३-पत्रिका । SSN 2229-547X  
VI DEHA सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-सम्पादक: डमोरी मंडल । सहायक सम्पादक:  
शिर कमार सा, राम रिवस साहू आ कुराजी (मेलोज कमार कर्ण) । भाषा-सम्पादन:  
नागेन्द्र कमार सा आ पञ्चकवार रिद्वानन्द सा । कवि-सम्पादन: जगति सा चौधरी आ  
बन्धि बेरा सिन्हा । सम्पादक-शोध-अध्ययन: डा. जया रमा आ डा. बाजरीर कमार रमा ।  
सम्पादक- नाटक-वर्गमठ-चवटिच- रैचन ठाकुर । सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद-  
पुनम मंडल आ प्रियंका सा । सम्पादक- अन्तराद रिभाग- रिलीज डेपु ।

बचनाकाब अपन मौलिक आ अप्रकाशित बचना (जकरब मौलिकताक संपूर्ण उद्भवदायिह  
लेखक गणक मध्य छति) [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) केँ मेर अटैचमेण्टक रूपमें  
.doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमें पठा सकैत छथि । बचनाक संग बचनाकाब  
अपन सम्मिलित पविचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठैताह, से आशी करैत छी ।  
बचनाक अंतमें ठागप बहय, जे ३ बचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशिनक हेतु  
रिदेह (पाक्षिक) ३ पत्रिकार केँ देल जा बहल अछि । मेर प्राप्त होयबक बाद  
यथासंभव शीघ्र ( सात दिनक भीतर) एकब प्रकाशिनक अंकक सूचना देल जायत ।  
'रिदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ३ पत्रिका अछि आ ईमें मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमें  
मिथिला आ मैथिलीसँ सम्बंधित बचना प्रकाशित कएल जायत अछि । एहि ३ पत्रिकार केँ  
श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १३ तिथि केँ ३ प्रकाशित कएल जायत अछि ।





Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका 'बिदेह' १३९ म अंक ०१ अक्टूबर २०१३ (वर्ष ६ मास ७० अंक १३९)

मानवीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

(c) 2004-13 सराधिकार स्वस्मित । बिदेहमे प्रकाशित सभसँ बचना आ आकर्षक सराधिकार बचनाकार आ संग्रहकर्ताक ढंगमे छह । बचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशन किंवा आकर्षक उपयोगक अधिकार किनराक हेतु [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पर संपर्क कर । एहि सागठकेँ प्रति या ठाकर, मधुनिका चौधरी आ बन्मि प्रिया द्वारा डिजाइन कएल गेल ।



सिंहबन्म

